जिहाद

में सेवा करने और भाग लेने के

39 मार्ग

अत-तिब्यान पब्लिकेशन

जिहाद में सेवा करने और भाग लेने के

39 मार्ग

अनुवाद: अत-तिब्यान प्रकाशन द्वारा

परिचय 5

1. जिहाद के लिये मन बनाओ 7

2. सच्चे मन से अल्लाह से शहादत मांगो 9

3. जिहाद में स्वयं आगे बढ़ो 11

5. जिहाद के जो लड़ाके जा रहे हों उनको तैयार करने में सहायता करो 13

6. जिहाद के लड़ाकों के परिवार की देखभाल करो 14

7. जिहाद में शहीद होने वालों के परिवार का भरणपोषण करो 15

8. जिहाद में घायल हुए अथवा बंदी बनाये गये लोगों के परिवारों का भरणपोषण करो 16

9. मुजाहिद्दीनों के लिये धन एकत्र करो 17

10. उनको जकात दो 18

11. घायलों के उपचार में सहायता करो 20

12. मुजाहिद्दीनों की प्रशंसा करो और सबसे सामने उनके कार्यों का वर्णन करो और लोगों से उनके पदचिह्नों पर चलने का आह्वान करो 22

13. मुजाहिद्दीनों को प्रोत्साहित करो और उन्हें जिहाद की राह में आगे बढ़ने की प्रेरणा दो 22

14. मुजाहिद्दीनों के पक्ष में स्वर मुखर करो और उनका बचाव करो 23

15. अपने भीतर के बहुरूपियों व द्रोहियों को उजागर करो 24

16. जिहाद के लिये लोगों का आह्वान करो 26

17. मुसलमानों और मुजाहिद्दीनों को परामर्श दो 28

18. मुजाहिद्दीनों के उन रहस्यों को छिपाओ जिससे शत्रु को लाभ हो सकता हो 28

19. उनके लिये प्रार्थना करो 29

20. विपदा दूर भागने के लिये इबादत करो (कुनुत अन—नवाज़िल पढ़ो) 30

21. जिहाद के समाचारों को देखो और फैलाओ 31

22. उनकी पुस्तकों व प्रकाशनों की रिलीज को फैलाने में भाग लो 33

23. ऐसे फतवा निर्गत करो जिससे उनको सहायता मिले 34

24. मजहबी विद्वानों व उपदेशकों से जुड़े रहो तथा उन्हें मुजाहिद्दीनों की स्थिति से अवगत कराते रहो 35

25. शारीरिक रूप से बलिष्ठ बनो 36

26. शस्त्रों (हथियारों) का प्रशिक्षण लो तथा उन्हें चलाना सीखो 37

27. तैराकी व घुड़सवारी सीखो 39

28. प्राथमिक उपचार करना सीखो 40

29. जिहाद का फिक़्ह सीखो 41

30. मुजाहिद्दीन को आश्रय देना और उनका सम्मान करना 41

31. इस्लाम को न मानने वालों अर्थात काफिरों से शत्रुता रखना और उनसे घृणा करना 42

32. अपने बंदियों को छुड़ाने का प्रयास करो 42

33. बंदियों के बारे में समाचार फैलाओ और उनकी स्थिति की जानकारी लेते रहो 43

34. इलेक्ट्रॉनिक जिहाद 44

35. काफिरों के विरोध में खड़े रहो 45

36. अपने बच्चों के मन में जिहाद और जिहाद करने वालों के प्रति प्रेम उत्पन्न करो 46

37. सुख-सुविधा में जीना छोड़ो 47

38. शत्रु के ईश्वर का बहिष्कार करो 49

39. जंग छेड़ने वालों (हरबिय्यीन) में किसी को काम पर मत रखो 53

निष्कर्ष 54

अततिब्यान प्रकाशन की विज्ञप्ति 61

परिचय

उस अल्लाह की बंदगी जिसने अपने सेवकों पर जिहाद अनिवार्य किया है और धरती पर उनके जमने एवं गैर-मुसलमान लोगों पर प्रभुत्व स्थापित करने का वचन दिया है। और उसके सेवकों में सर्वोत्तम, जिसने अल्लाह की राह में तब तक संघर्ष किया जब तक कि उसे नहीं प्राप्त कर लिया जो निश्चित (मृत्यु) थी, उन पर दुआ और शांति हो। अल्लाह उन पर, उनके घर और उनके सच्चे व शुद्ध साथियों कृपा व शांति बरसाये।

क्या करना है:

मेरे प्रतिष्ठित भाइयो: जिस समय में हम जी रहे हैं, वह इस्लाम के लिये आपदा व विलगाव का समय है। इतिहास में संसार ऐसा पहले कभी नहीं रहा है कि जहां परायापन मानदंड बन चुका हो, आपदा चारों ओर व्याप्त हो गयी हो और समूची धरती इस प्रकार के संघर्ष और दीन पर चलने वाले लोगों को भगाकर उनके स्थान पर नियंत्रण करने एवं वाणी व शस्त्रों से इस कृत्य का बचाव करने का मंच बन गया हो। इसलिये समस्त विश्व ने आतंकवाद अथवा यूं कहें कि जिहाद के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है एवं समस्त विश्व जिहाद व मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त इसके विभिन्न रूपों के विरोध में खड़ा हो गया है।

तो इस्लाम पर एक साथ आक्रमण हुआ है और धरती के सभी स्थानों पर गैर-मुस्लिम देश व उनके सहायक अत-ताइफाह अल-मंसूराह[1] के विरुद्ध एकत्र हो गये हैं। अत-ताइफाह अल-मंसूराह ने कुफ्र और काफिरों (गैर-मुस्लिमों) के विरुद्ध जंग छेड़ने का दायित्व अपने कंधे पर लिया है। कुफ्र और काफिरों के विरुद्ध जंग सीधी और भयानक होगी, जिसमें किसी प्रकार का विश्राम या दया नहीं होनी चाहिए, जब तक कि जब वे उस जंग में हों और अल्लाह का आदेश न आ जाए कि जिन्होंने अपने द्रोह से मुसलमानों के साथ विश्वासघात किया है या मुसलमानों को हराया है अथवा जो इस निम्न कोटि के सांसारिक जीवन के दलदल में धंस चुके हैं, उनके द्वारा जंगी मुसलमानों को कोई हानि नहीं पहुंचायी जाएगी। और भले ही मुसलमान कुफ्र के समूह, इस्लाम छोड़ने वाले दल व इस्लाम को अस्वीकार करने वाले समूहों अथवा गलत मार्ग पर चले गये नवजागरण वादियों का विरोध करें, किंतु इन काफिरों द्वारा मुसलमानों को कोई हानि नहीं पहुंचायी जाएगी। और इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि आज के समय में जिहाद अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है। वास्तव में यह एक अनिवार्यता है, जिसे अल्लाह ने सभी मुसलमानों को करने का आदेश दिया है और अल्लाह में विश्वास करने के बाद मुसलमानों के लिये जिहाद करने और मुसलमानों की भूमि को वापस छीन लेने से अधिक आवश्यक अन्य कोई कार्य नहीं है।

यदि तुम किसी देश में इस्लाम की ओर कदम बढ़ाओ तो तुम स्वयं को ऐसे पंक्षी के रूप पाओगे ,जिसके पंख काट दिये गये हों।

[1] सहायता प्राप्त समूह

आज उम्माह के पास एकमात्र विकल्प जिहाद है, क्योंकि शत्रुओं ने आज एक-एक कर मुसलमानों की भूमि पर अधिकार कर लिया है- जैसा कि सर्वप्रभुत्वसम्पन्न अल्लाह ने कहा है, *"...और वे तब तक लड़ना नहीं छोड़ेंगे, जब तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से दूर न कर दें, यदि उनके वश में हो..."*

इसलिये आज मुसलमानों के पास जिहाद और हथियारों की भाषा के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं बचा है।

अपने स्वामी के नाम से, बताओ मुझेः हमारे सामने ऐसा हमलावर शत्रु है, जिसने भूमि पर अधिकार कर लिया, सम्मान छीन लिया, बच्चों को अनाथ बनाया, औरतों को विधवा बनाया और जो प्रत्येक स्थान पर इस्लाम पर आक्रमण कर रहा है... ये सब देखते हुए, क्या कोई संदेह है कि इस शत्रु से निपटने के लिये ताकत व प्रतिशोध की भाषा से ही उपाय निकलेगा?

क्या लोहा ही लोहे को नहीं काटता है, क्या किसी ताकत से निपटने के लिये ताकत की ही आवश्यकता नहीं होती है...

और हमारे लिये तो यह कुरआन और सुन्नत में ही स्थापित कर दी गयी थी- और वास्तविकता इसकी साक्षी बन रही है तथा इसकी पुष्टि कर रही है- कि जो अपनी हानि और थोड़ी-बहुत विफलता के भय से अल्लाह के प्रति समर्पण छोड़कर उसके प्रति दासता व समर्पण प्रदर्शित करने लगते हैं जो अतिक्रमणकारी हैं, उनके पास शांति और समझौता नहीं आता है। जो मुसलमानों के नाम पर उन शासकों से शांति और समझौता मांगते हैं जो कि हमारे में से नहीं हैं और जिनमें से हम नहीं हैं, तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में चेताया जा रहा है। ऐसे लोग तो हमारे प्रबल शत्रु हैं, क्योंकि ऐसे लोगों को ही माध्यम बनाकर गैर-मुसलमानों ने हमारे साथ खेल किया है और उनकी योजनाओं व छल के माध्यम से हम मुसलमानों के अधिकार छीने और हड़पे गये हैं।

ऐसा भला होता भी क्यों न, जब अल्लाह ने अपनी पुस्तक में हमें पहले ही बता दिया था कि उन्होंने एक विशेष लक्ष्य के साथ हमसे जंग छेड़ दिया और वह लक्ष्य है: **"...यदि उनके वश में है तो जब तक वे तुम्हें तुम्हारे दीन से दूर नहीं कर देते..."**

महानतम जिहाद के अतिरिक्त कोई और समाधान नहीं है। विश्व की शांति अब हमें संतुष्टि नहीं देती है।
शत्रु के लिये कोई शांति न हो। यह प्रत्येक मुसलमान के मन की बात व मन का विश्वास है।

इस दृष्टिकोण से और चूंकि जिहाद उम्मा की इच्छा, आवश्यकता एवं अध्यारोपित अनिवार्यता है, तो मैंने निर्णय किया- अपने एक और भाई से परामर्श कर उन कुछ कदमों के बारे में लिखूं कि जिहाद और अपने लोगों की सेवा कैसे करें, जिहाद के प्रशिक्षण को ऊर्जा कैसे प्रदान करें। प्रसन्नता की बात यह है कि अतिक्रमणकारियों (गैर-मुसलमानों) के अति अहंकार के बाद भी जिहाद तेजी से फैल रहा है।

और हमने इस पत्रक का शीर्षक दिया है: **'जिहाद में सेवा करने और भाग लेने का 39 मार्ग'**

...अल्लाह से मार्गदर्शन, सहायता व दृढ़ता मांगते हुए तथा इसकी स्वीकार्यकता व लोगों के लाभ हेतु फतवा देने के लिये।

लेखकः मुहम्मद बिन अहमद आस-सलीम ('ईसा अल-'औशिन)—19/5/1424एच

1. जिहाद के लिये अपना मन बनाओ

मन के भीतर से जिहाद का स्वर फूटना चाहिए। मन में जिहाद के प्रति ऐसी सच्ची भावना उत्पन्न होनी चाहिए कि जब कभी जिहाद के लिये पुकारने वाला कहे: 'हे अल्लाह के घुड़सवार फौजियों! धावा बोलो' तो व्यक्ति जिहाद करने निकल पड़े और व्यक्ति स्वयं से कहे कि वह जंग में कूद पड़ेगा एवं यदि उससे जंग में आगे बढ़ने को कहा जाएगा अथवा उसके भाइयों को उसकी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी, तो वह जंग में आगे बढ़ जाएगा। जैसा कि रसूल (सल्ललाहु...) ने कहा है**, '...यदि तुमसे जंग में आगे बढ़ने को कहा जाए तो आगे बढ़ो।"**

मन में ऐसा भाव होना चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति जंग में जाने की मंशा रखता है और किसी कारणवश वह न जा पाये तो उसे इस पर पीड़ा हो, क्योंकि अल्लाह ने उन अशअरिय्यीन (साथियों) के बारे में कहा है जो जंग में जाने की तैयारी कर पाने में असमर्थ रहे:

"और उन पर दोष नहीं है, जो तुम्हारे पास सवारी की व्यवस्था के लिये आये, और जब तुमने कहा: "मेरे पास इतना नहीं कि तुम्हारे लिए सवारी की व्यवस्था कर सकूं" तो वे अपनी आंखों इस दुख के साथ आंसू लिये वापस गये कि उनके पास व्यय करने के लिये कुछ नहीं है।"[2]

जिहाद अर्थात जंग के लिये ऐसी पूर्ण मंशा (इरादा) होनी चाहिए और अल्लाह के मार्ग में जंग करने से चूक जाने पर दुख व पश्चाताप का ऐसा भाव होना चाहिए।

जब किसी के लिये मार्ग बंद हो जाए अथवा वह जंग में जाने में समर्थ नहीं हो और वह कहे: "अल्लाह का धन्यवाद, जिहाद के आवश्यक धन या संपत्ति न देकर उसने मुझे बचा लिया", तो समझ लो कि यह वही व्यक्ति है जो जिहाद से घृणा करता है और जंग नहीं चाहता है। जो जंग से घृणा करते हैं और जिहाद में आगे नहीं बढ़ते हैं, वो व्यक्ति ढोंगी होते हैं। और यदि वे जंग के लिये जाते भी हैं, तो वे फौज को हतोत्साहित करते हैं और जब जंग शुरू होती है तो भाग खड़े होते हैं। और जो जंग व जिहाद से चूक जाने पर दुख में विलाप करते हैं और जो बहाने बनाकर जंग से बचने पर अपने आनंद व प्रसन्नता को छिपाते हैं, उनमें अल्लाह स्पष्ट अंतर जान जाता है, क्योंकि अल्लाह सब जानता है कि क्या छिपाया गया है और मन के भीतर क्या है...

और स्वयं से ही जंग लड़ने का पक्का इरादा कर लेने से व्यक्ति के भीतर से ढोंगी लक्षण समाप्त हो जाते हैं, जैसा कि अबू हुरैरा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस से सही मुस्लिम में दर्शाया गया है कि अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन्हें शांति प्रदान करे) ने कहा: जो कोई भी (अल्लाह के मार्ग में) जंग किये बिना मरता है अथवा जंग करने की इच्छा नहीं रखता है, वह ढोंगियों के जैसा ही मरता है।

---

[2] अत-तौबा;92

शेख उल-इस्लाम इब्न तैमिय्याह ने कहा:

"और जहां छोटे-मोटे ढोंग (निफक) की बात है, तो उसके कार्यों से निश्चित होगा कि ढोंग कितना और कहां है। उदाहरण के लिये यदि कोई व्यक्ति बोलते समय झूठ कहता है अथवा वचन देने के बाद इसे तोड़ देता है, अथवा उस पर विश्वास करके कोई बात बतायी गयी है और वह उसे दूसरों तक पहुंचा देता है अथवा किसी के साथ विपरीत परिस्थिति में होने पर बुरा बोलने लगता है... तथा इसमें जिहाद से दूर भागना भी सम्मिलित हो, तो ये सब ढोंगीपन (मुनाफिकीन) के लक्षण होते हैं। रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: "जो कोई भी (अल्लाह के मार्ग में) जंग किये बिना मरता है अथवा जंग करने की इच्छा नहीं रखता है, वह ढोंगियों के जैसा ही मरता है।" और अल्लाह ने 'बराह' (अत-तौबा) का अध्याय भेजा है, जिसे नंगा करने वाला भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें ढोंगियों को नंगा किया गया है। अल्लाह ने इस अध्याय में ढोंगियों की स्थिति को स्पष्ट किया है और इसमें बताया है कि ढोंगियों में कायरता व जिहाद के प्रति अरुचि होती है और अल्लाह ने उन्हें अल्लाह के मार्ग में व्यय करने में कृपणता दिखाने वाला (कंजूसी दिखाने वाला) तथा अपने धन का लोभ करने वाला बताया है। अल्लाह ने कहा है कि कायरता और कंजूसी दो खतरनाक रोग हैं। अल्लाह ने कहा:

"...वस्तुत: मोमिन वही होते हैं जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल में विश्वास किया है और फिर संदेह नहीं किया, और अल्लाह के मार्ग में अपने धन व प्राण से जिहाद (जंग) किया है। वो ही! वे ही सच्चे हैं।"[3]

इस प्रकार अल्लाह ने मोमिन उसी को बताया, जो उसमें विश्वास करते हैं और जिहाद करते हैं। और अल्लाह ने कहा:

"जो अल्लाह और प्रलय (कयामत) के दिन में विश्वास करते हैं वो अल्लाह के मार्ग में अपने धन व प्राण से जंग करने से कभी छूट नहीं मांगेंगे और अल्लाह भली-भांति जानता है कि कौन सच्चा है। जो अल्लाह और कयामत में विश्वास नहीं करते और जिनके मन में संदेह है वही तुमसे अल्लाह के मार्ग में जंग करने से बचने की छूट मांगते हैं और वही संदेह के वशीभूत इधर-उधर डोलते हैं।"[4]

तो अल्लाह हमें बता रहा है कि मोमिन को रसूल से कभी जिहाद से छूट नहीं मागना चाहिए और जो यह छूट मांगते हैं वो वही हैं जो विश्वास नहीं करते हैं। अत: रसूल की अनुमति के बिना इसे (जिहाद) जो छोड़ देता है, उसका क्या होगा?"[5]

अत: आगाह रहो, आगाह रहो, मेरे मुस्लिम भाइयो, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी ढोंगी न बन जाओ या तुम भी ढोगियों के जैसा ही न मर जाओ। और वे जो मुजाहिद्दीनों की भर्त्सना करते हैं या फिर जो लांक्षन लगाते हुए जिहाद के लिये जाते हैं- जैसे कि जो कभी कहते हैं कि वह बड़ा अधीर है और फिर अगले ही क्षण उस पर आरोप लगाते हैं कि उसने परामर्श नहीं किया- तो उनको मैं कहूंगा:

---

[3] अल-हुजुरात; 15

[4] अत-तौबा;44-45

[5] मज्मू अल-फतवा 28/436

हे! तुमने जिहाद करने वाले हमारे युवाओं की भर्त्सना की है। अपना लांक्षन और अस्वीकृति अपने पास रखो।

क्या जो जन्नत के बागों और उसके सुगंध की इच्छा रखता है, और जो अपने साथियों की राह में निरंतर यात्रा कर रहा है, वह लांक्षन लगाये जाने योग्य है?

क्या जिसने इस संसार और इसके खालीपन को त्याग दिया और दृढ़ संकल्प के साथ जिहाद में जाकर आगे बढ़ा, वह लांक्षन लगाये जाने योग्य है?

क्या जिसने अपना जीवन अल्लाह के लिये समर्पित कर दिया है और सर्वोत्तम गंतव्य फिरदौस को पाना चाहता है, वह लांक्षन लगाये जाने योग्य है?

अत: जिहाद और इसके लोगों की निंदा करना छोड़ दो। ढोंग के वर्णन को समझो, आगाह रहो...

जो कोई भी जंग नहीं करता है अथवा जंग की मंशा नहीं रखता है, वह जब मरता है तो उसकी मृत्यु भयानक होती है...

वस्तुत: जिहाद हमारे सम्मान का मार्ग है और जिहाद को छोड़कर हम अपमानित होते हैं और एक नीच के जैसा जीवन जीते हैं।

2. सच्चे मन से अल्लाह से शहादत मांगो

... अल्लाह से सच्चे मन, लगन और आग्रहपूर्वक शहादत मांगना चाहिए। क्योंकि जो कोई भी सच्चे मन से अल्लाह से शहादत मांगता है, उसे अल्लाह द्वारा शहीद का दर्जा दिया जाता है- भले ही वह अपने बिछौने पर क्यों न मरे। जैसा कि सही बुखारी में अनस बिन मलिक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हों) ने बताया कि उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: **"जो कोई भी शहादत मांगता है और सच्चे मन से मांगता है तो भले ही वह शहादत प्राप्त न कर पाये, पर उसे यह मिलता है।"**, और एक और वर्णन में बताया:"...**भले ही वह अपने बिछौने पर मरे, पर अल्लाह उसे शहादत का दर्जा प्रदान करता है।"**

शेख अब्दुल्ला आजम (अल्लाह उन पर कृपा करें) ने कहा: "और इन दो हदीसों का अर्थ है कि यदि वह सच्चे मन से अल्लाह से शहादत मांगता है, तो भले ही वह बिछौने पर मरणासन्न हो, उसे शहादत का पुरस्कार मिलता है..."

शेख अब्दुल्ला आजम ने यह भी कहा:"...किंतु, सच्चे मन से शहादत मांगने का आशय यह है कि कोई व्यक्ति इसके लिये उचित तैयारी करे:

''...और यदि उन्होंने आगे बढ़ने का मन बनाया है, तो उन्होंने इसके लिये कुछ तैयारियां भी की होंगी... ।''[6]

जैसे कि अफगानिस्तान में जिहाद के दस वर्ष गुजरने के साथ ही वहां पहुंचना सुरक्षित और पक्का हो तथा सीमाएं भी खुली हों, पर वह जिहाद करने पेशावर न जाए? तो यदि वह सोचता है कि उसने सच्चे मन से शहादत मांगी थी, तो उसके लिये हम यही कहेंगे कि अल्लाह से उसे क्षमा करे। क्या तुम उस बद्दू को नहीं देख रहे जिसने अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) से कहा: क्या मैं आपके पीछे-पीछे आऊं और घायल हो जाऊं- और उसने अपने गले की ओर संकेत किया- जिससे कि मैं जन्नत में प्रवेश पा सकूं,'' और वह बद्दू बाद में घायल हो गया और उसे घाव वहीं लगा जहां उसने संकेत किया था, तो रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: ''वह अल्लाह के प्रति सच्चा था, अत: अल्लाह भी उसके प्रति सच्चे थे।''

और शहादत का सच्चा प्रयास तब कहा जाएगा, जब कोई हंगामा या कोलाहल सुनते ही तीर की भांति तत्परता से जिहाद में लड़ने चला जाए। इसे शहादत का प्रयास नहीं कहा जाएगा कि जिहाद के लिये पुकारा जाए, तो कोई विलंब करे या दीन की सहायता में ढीला-ढ़ाला रहे और फिर जिहाद में जाने का दिखावा करे। इसकी अपेक्षा शहादत का सच्चा प्रयास करने वाला बारंबार कहेगा:

मेरे अल्लाह, आपकी सहायता से, रूहें जन्नत में हैं। अत: मेरे खुदा, मेरे खून को जिहाद में लगा दो, चूंकि मुझे पापों ने घेर लिया है और उन पापों को नष्ट करने के लिये शहादत के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है।

मेरे अल्लाह, मेरे अल्लाह! मैं बस शहादत चाहता हूं। अत: हे दयावान अल्लाह, अपने बल से मेरी गुजारिश मान लो!

अत: यह सुनिश्चित करो कि अल्लाह के साथ सच्चे और उसके साथ सदा आग्रही रहो कि वह तुम्हें- शत्रु का सामने करने एवं पीठ न दिखाने- अपने मार्ग में शहादत दे तथा जिहाद करने के लिये तुम्हारी दृढ़-इच्छाशक्ति को और ठोस बनाये। और यह जान लो कि जो अल्लाह से सच्चे मन से शहादत मांगता है, तो जहां कहीं भी इसके मिलने की संभावना होती है, वहां वह इसे ढूंढ़ता है और निरंतर ढूंढ़ता रहता है। ऐसा नहीं होता कि कोई शहादत मांगे और जब तक उसके पास शहादत पहुंचा न दी जाए, वह जाकर सो जाए।

तुम सफलता की आशा करते हैं, पर इसके लिये मार्ग नहीं बनाते हो। वस्तुत: जहाज सूखी भूमि पर नहीं तैरते हैं।

3. जिहाद में स्वयं जाओ

...अल्लाह के मार्ग में स्वयं जिहाद करने जाओ और इस काम न तो आलस्य दिखाओ और न ही कोई बहाना बनाकर विलंब करो, क्योंकि जिहाद में पीछे रहकर आनंदमग्न रहने का अर्थ है कि तुम जन्नत को छोड़कर इस दुखभरे संसार में रहकर प्रसन्न हो रहे हो।

---

[6] अत-तौबा;46

और अल्लाह के मार्ग में स्वयं जिहाद करना महान अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का सर्वोत्तम व महानतम उपाय है और जिहाद से जो पुण्य मिलता है, वह किसी से छिपा नहीं है।

कुरआन और सुन्नत में जिहाद का बखान किया गया है। इस पत्रक में तन-मन-धन से जिहाद करने वालों के गुणों और शहीद व शहादत के गुणों का पर्याप्त उल्लेख किया गया, जिससे यह अपेक्षा से अधिक लंबा हो गया है। कुरआन में जिहाद के बारे में लगभग 70 आयतें हैं और सुन्नत में हदीस के विद्वानों ने अपने लेखों में जिहाद, जिहाद के नियमों व गुणों के बारे भिन्न-भिन्न अध्यायों को संकलित किया है।

और जब 'जिहाद' शब्द का उल्लेख होता है तो यह क़ितल[7] की ओर इंगित करता है, जैसा कि इब्न रुशद ने कहा:"...और जब 'जिहाद' शब्द का उल्लेख किया जाता है तो इसका अर्थ यह होता है कि जब तक काफिर (गैर-मुसलमान) पराजित न हो जाएं और अपमानजनक स्थिति में न आ जाएं एवं अपने हाथों से जजिया कर न दें, उनसे तलवार से लड़ना है...।"

इसलिये किसी को भी जिहाद शब्द का सामान्यीकरण करते हुए इसे अपने भीतर की बुराइयों से संघर्ष करने (जिहाद अन-नफ्स) अथवा लेखन या वाचन से संघर्ष करने, अथवा अल्लाह के दीन में लोगों को बुलाने (दावा) के रूप में नहीं लेना चाहिए। यह सच है कि ये सब अल्लाह के प्रति आज्ञाकारिता व अल्लाह की कृपा पाने के लिये किये जाने वाले काम हैं, किंतु इस्लामी कानून की पुस्तकों में जब तक इन बातों के अर्थ न जोड़े गये हों, जिहाद शब्द का आशय अन-नफ्स, दावा या इन कामों से नहीं है।

और जिहाद सर्वोत्तम सच्चा काम है:

अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) से पूछा गया, "उनके लोगों में सर्वोत्तम कौन है?" तो उन्होंने (उन पर शांति हो) कहा: **"वह मोमिन जो अपने तन-मन और धन से अल्लाह के मार्ग में जिहाद करता है।"** फिर उन्होंने पूछा:"फिर कौन?" उन्होंने (उन पर शांति हो) कहा: **"किसी पहाड़ के दर्रे में वह मोमिन जो अल्लाह से डरता है और उसके कोप से उन लोगों की रक्षा करता है।"**[8]

और उन्होंने (उन पर शांति हो) कहा: **"वस्तुत:, जन्नत में ऐसे सौ स्तर (दर्जे) हैं जिसे अल्लाह ने अपने मार्ग में लड़ने वाले मुजाहिद्दीनों के लिये बनाया है; प्रत्येक स्तर के बीच वैसी ही दूरी है, जैसे कि जन्नत और धरती के बीच है, तो यदि तुम अल्लाह से पूछते हो, उससे फिरदौस की इच्छा करते हो, तो जान लो कि फिरदौस जन्नत का सबसे ऊंचा व सबसे प्रमुख भाग है और इसके ऊपर उस सर्वाधिक दयावान का सिंहासन है, और इससे जन्नत की नदियां आगे बहती हैं।"**[9]

---

[7] संघर्ष

[8] अल-बुखारी द्वारा वर्णित

[9] अल-बुखारी द्वारा वर्णित

और उन्होंने (उन पर शांति हो) कहा: **अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने वाले किसी बंदे के पैर धूल से नहीं सनते हैं, बस ऐसा न हो कि अल्लाह ने उसे आग से रोका हो।**[10]

और उन्होंने (उन पर शांति हो) कहा: **जो भी ऊंटनी पर सवार होकर अल्लाह के मार्ग में जंग करता है, तो उसके लिये जन्नत पक्का है। और जो कोई अपनी इच्छा और सच्चे मन से अल्लाह से मांगता कि वह उसके मार्ग में मरे या मारा जाए तो उसे शहीद का पुरस्कार मिलता है। और जो कोई भी अल्लाह के मार्ग में जंग करते हुए घायल होता है अथवा विपदा से घिर जाता है, वह कयामत के दिन ऐसे चमकते और महकते हुए उठेगा जैसे कि केसर चमकता और कस्तूरी महकता है। और जो कोई भी अल्लाह के मार्ग में जंग करते हुए ऐसा घाव पाता है जहां से रक्त या मवाद निकलता है तो निश्चित ही उस व्यक्ति को शहीदों में विशिष्ट पहचान मिलेगी।"**[11]

जान लो कि काफिरों और इस्लाम से भटक रहे लोगों से जिहाद करना सबसे उत्तम काम है,

और जिहाद मेरे दयालु अल्लाह को सर्वाधिक प्रिय है। जैसा कि अल-बुखारी में वर्णन किया गया है

और वस्तुत: अल्लाह ने जन्नत जाने वाले लोगों के लिये सैकड़ों स्तर बनाये हैं,

उन स्तरों के बीच वैसी ही दूरी है जैसे कि धरती और जन्नत के बीच।

और जिसके भी पांव जिहाद करते हुए धूल-माटी में सनेंगे, मेरे अल्लाह द्वारा उसे भयानक पीड़ादायी दंड से बचा लिया जाएगा,

और जो भी ऊंटनी पर सवार होकर अल्लाह के मार्ग में जंग करेगा, जंग के बीच में रक्षक अथवा पृष्ठ-रक्षी के रूप में

उसने अपने लिये जन्नत का पुरस्कार व मूल्य पक्का कर लिया है। और वह कोई और नहीं, बस अल्लाह ही है जिसके प्रति इसके लिये धन्यवाद दिया जाना चाहिए।

और जिहाद के साथ ही दुश्मन आतंकित हो जाता है। और बरछे की नोंक पर झंडा लहराया जाता है।

और जिहाद गुणों की खान है और जिसमें भी सोचने-समझने की क्षमता होती है वह जिहाद करना नहीं छोड़ता है।

जो बिना किसी उचित कारण के जिहाद से बचकर पीछे बैठे रहते हैं, वे उसके समान नहीं होते हैं जो जिहाद के लिये पुकारे जाने पर आगे बढ़कर इसमें भाग लेते हैं।

---

[10] सही अल-जामी; संख्या 5419

[11] अबू दाऊद, अत-तिरमिज़ी, अन-नसाई, अहमद द्वारा वर्णित एवं सही अल-जामी संख्या 6292 में उल्लिखित

अथवा वह इबादत करने वाला जो पूरे दिन रोजा रखता है और रात भर अल्लाह की इबादत में बिता देता है।

इस उत्कर्ष एवं प्रमुखता से कुरआन की आयतें और इनका गान आयी हैं,

और इसके बाद बंदे के पास कोई विकल्प नहीं होता, केवल इसके कि बिना संदेह या किंतु-परंतु किये समर्पित हो जाए,

और तुम जहां भी खड़े हो, जिहाद का झंडा वहीं से आगे बढ़ जाएगा। अत: जिहाद पर अटल रहो।

और जंग व संघर्ष में भाग लेने में आनंद का अनुभव करो। और इस पर तुम्हें पुरस्कार व सफलता मिलेगी।

और निराशाजनक बातें करने वालों या ढोंगी मोमिन या विद्वान की बातों को अनसुना करो।

और अल—फ़ुज़ैल (इब्न इयाद) के विषय में भाग्यवान विद्वान (अब्दुल्ला इब्न अल—मुबारक) की प्रशंसा को स्मरण रखो और तुम जितना आवश्यक है उतना जान ही जाओगे।

4. अपने धन से जिहाद करो

अपने धन से जिहाद करने का अर्थ है अल्लाह के मार्ग में जिहाद और मुजाहिद्दीन एवं जिहाद के लिये आवश्यक किसी भी वस्तु या सेवा के लिये व्यय करना होता है।

शेख युसुफ अल-उयैयरी ने कहा:

''तो, अपने धन से जिहाद करने के विषय में कुरआन की जिहाद से संबंधित आयतों में बहुधा बार-बार कहा गया है तथा तन से जिहाद से पूर्व इसका उल्लेख किया गया है। पर फिर भी, इसका यह अर्थ तनिक भी नहीं है कि यह जिहाद (अपने धन से जिहाद) सबसे बड़ा है! इसका उल्लेख पहले इस कारण किया गया है कि क्योंकि धन से जिहाद उस प्रकार का है कि जब बड़ी संख्या में उम्मा के लोग जिहाद करने बढ़ते हैं, तो आदमियों की कमी नहीं होती है। किंतु जब तक पूरी उम्मा मुजाहिद्दीनों के लिये धन जुटाने का जिम्मा न उठाये और अपना धन मुजाहिद्दीनों तक न पहुंचाये, मुजाहिद्दीनों के लिये पर्याप्त धन नहीं होता है। मुजाहिद्दीन जिहाद की धमनी माने जाते हैं। इस कारण समाज का वह वर्ग जिसे अपने धन से जिहाद करने का निर्देश दिया गया है, उसकी संख्या उस वर्ग से बड़ी है जिसे अपने प्राण से जिहाद करने का निर्देश दिया गया है। इसलिये जिहाद की आयतों में उम्मा के जिस वर्ग (आदमियों, औरतों, युवाओं, प्रौढ़ों व बुजुर्गों) को संबोधित किया गया है, उसकी बड़ी संख्या को देखते हुए धन से जिहाद करने का उल्लेख पहले किया गया है तथा अल्लाह ही सर्वोत्तम जानता है।

और अपने धन से जिहाद के लिये यह आवश्यक नहीं है कि मोमिन बहुत अधिक धन व्यय करें। बल्कि वह उतना व्यय करता है जितना वह अल्लाह महान के सामने अपने सामर्थ्य के रूप में व्यय कर सकता है, क्योंकि धन से जिहाद का लक्ष्य- यदि

यह *फार्द ऐन*[12] हो जाए- तुम्हें उस कर्तव्य के बोझ से मुक्ति प्रदान करना एवं तुम जिसमें विश्वास करते हुए उसके प्रति दायित्वों से मुक्त होने के लिये भुगतान करना होता है, भले ही यह राशि कितनी भी छोटी क्यों न हो। जैसा कि अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: **''एक दिरहम एक लाख दिरहम (पुरस्कार में) से अधिक हो गया।''** तो उनसे (उन पर शांति हो) पूछा गया: हे, अल्लाह के रसूल! वह कैसे?'' उन्होंने (उन पर शांति हो) कहा: ''एक आदमी जिसके पास दो दिरहम थे, एक दिरहम निकाला और ज़कात के लिये दे दिया तथा एक दूसरा आदमी जिसके पास बहुत धन था उसने अपने धन के विशाल भंडार में एक लाख दिरहम निकाला और ज़कात के लिये दिया।'[13]

तो अल्लाह द्वारा धन के परिमाण के आधार पर दान नहीं स्वीकार किया जाता है, बल्कि यह उस स्थिति के अनुसार स्वीकार किया जाता है, जिसमें यह दिया गया है। जैसा कि अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) से पूछा गया: **कौन सा जकात सबसे अच्छा है?''** उन्होंने (उन पर शांति हो) कहा, **''वह जकात जो उसके प्रयास से आता है जिसके पास बहुत कम है।''**[14] इसका अर्थ हुआ: ऐसा जकात जो उस व्यक्ति से आये जिसके पास बहुत धन न हो और जिसे उस थोड़े-बहुत धन की भी आवश्यकता हो जो उसके पास है।

अत: अल्लाह से डरो और जो भी देने में सक्षम हो वह दो। और यह न सोचो कि जिहाद के लिये एक बार धन दे दिया तो हो गया, अपनी आय का एक भाग नियमित रूप से जिहाद के लिये देते रहो। सोचो कि जंग जारी है और मुजाहिद्दीनों को धन की आवश्यकता है।''

5. जिहाद के लिये जाने वाले लड़ाकों को तैयार करने में सहायता करो

और अल्लाह के मार्ग में जिहाद के रूपों में से एक एवं मुजाहिद्दीनों की सेवा करने का एक उपाय यह भी है कि जिहाद के लिये जाने वाले लड़ाकों को तैयार करने सहायता करो। और इस काम का बखान रसूल (उन पर शांति हो) की अनेक प्रामाणिक हदीसों में किया गया है।

''जो भी अल्लाह के मार्ग में लड़ने जा रहे लड़ाकों को तैयार करता है, वह एक प्रकार से स्वयं ही जिहाद में लड़ने वाला है। और जो अल्लाह के मार्ग में लड़ने वालों जिहादियों के परिवारों की अच्छे से देखभाल करता है वह भी वास्तव में वैसे ही जिहाद कर रहा है जैसे कि वह लड़ाका।''[15]

[12] व्यक्तिगत कर्तव्य

[13] अहमद एवं अन-नसाई द्वारा वर्णित

[14] अहमद व अबू दाऊद द्वारा वर्णित

[15] अल-बुखारी व मुस्लिम द्वारा वर्णित

"जिसने भी अल्लाह के मार्ग में लड़ने वाले जिहादियों को तैयार किया, उसे भी पुरस्कार में तनिक भी कमी न करके उतना ही पुरस्कार मिलेगा जितना कि उसको (लड़ाके को)।"[16]

और यदि किसी आदमी को जिहाद में लड़ने से छूट मिली है (जैसे कि वह अंधा, लंगड़ा आदि हो), तो उसके लिये यह बड़ा अवसर है, क्योंकि उसके पास अवसर है कि वह उसे तैयार करे जो अल्लाह के मार्ग में जंग करने जा रहा है और उसकी जंग का पुरस्कार प्राप्त करे। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि भले और सच्चे द्वारों में से यह एक प्रभावशाली द्वार है तथा इसमें किसी के धन व जकात का सर्वोत्तम उपयोग हो सकता है।

इसके अतिरिक्त यह 'अल्लाह के मार्ग में' (फी सबीलिल्लाह) होने वाली श्रेणी में आता है।

और यह उन औरतों के लिये भी अवसर है जो अल्लाह के मार्ग में लड़ने जा पाने में समर्थ नहीं हैं, क्योंकि यह उनके सामर्थ्य में है कि वे अपने धन, गहने अथवा जो कुछ भी उनके पास है उससे जिहादियों (लड़ाकों) को तैयार करें तथा इस बड़े पुरस्कार की सहभागी बनें।

इस्लाम के आरंभिक दिनों एवं अन्य कालखंडों में भी औरतों ने बड़ी भूमिका निभाई है। हम यहां हीरो के रूप में शहीद होने वाले कमांडर अबू जफर अल-यमनी (अल्लाह उन पर दया करें) की बहन द्वारा जो किया गया था, उसका उल्लेख करना नहीं भूलेंगे। जैसा कि क्यूओक्यूएजेड डॉट कॉम वेबसाइट पर शहीद की आत्मकथा में उल्लिखित है: **उसने (जफर अल-यमनी की बहन) अपना सारा सोना बेच दिया और उससे उसे जो धन मिला उससे उसे (जफर अल-यमनी को) तैयार किया।**

तो ऐसी औरतों की जैसी औरतें कहां हैं? अपितु यह कहें, कि जिहाद के प्रति इस प्रकार का समर्पण दिखाने वाले आदमी कहां हैं?

वैसे ही उनके लिये भी अवसर है जो अपना धन दे पाने की स्थिति में नहीं हैं, ऐसे लोग देने के लिये दूसरों से धन एकत्र कर जिहादी तैयार कर सकते हैं। रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: "जो लोग नेक काम (जिहाद) करने में किसी की सहायता करते हैं, वो भी वैसा ही फल पाते हैं जैसा कि वह काम करने वाला बंदा।"

6. जिहादी के परिवार की देखभाल करना

... जैसा कि पूर्व में उल्लिखित हदीस को पूरा करने के लिये, रसूल (उन पर शांति हो) के कथनानुसार उनकी आवश्यकताओं व विषयों की देखभाल करना: **"... और जो भी अल्लाह की राह में जिहाद करने गये लड़ाके के परिवार की अच्छी देखभाल करता है, वह वैसा ही माना जाता है जैसा कि लड़ने वाला।"**

[16] अब्न माजह द्वारा वर्णित और यह प्रामाणिक है।

और इस अच्छे व गौरवपूर्ण कार्य की अच्छाई के बारे में जहां वर्णन किया है वह है रसूल (उन पर शांति हो) का कथन: ''तुममें से जो कोई भी उसके परिवार की अच्छी देखभाल करेगा जो जिहाद करते हुए लड़ने बाहर गया है, उसे उस लड़ाका का आधा शबाब (पुण्य) मिलेगा।''[17]

लड़ाका के परिवार की देखभाल, उनकी चिंता, उनका संरक्षण और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की सुविधा प्राप्त करना लड़ाका का अधिकार है और जो लोग वहीं रहते हैं जहां लड़ाका का परिवार रहता है उन लोगों का कर्तव्य है कि ये सब करें। जैसा कि इस हदीस में उल्लिखित है रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: **''जो जिहाद में लड़ने न जाकर घर बैठे रहते हैं उनके लिये जैसे उनकी अपनी अम्मियां वर्जित हैं, वैसे ही मुजाहिदीनों की बीवियां भी उनके लिये वर्जित (हराम) हैं तथा जो जिहाद में पीछे रहते हैं और जिन पर मुजाहिद के परिवार की देखभाल सौंपी जाती है वे उस विश्वास को तोड़ते हैं, तो कयामत के दिन उस लड़ाके को उनके सामने लाया जाएगा और उससे कहा जाएगा: ''इसने तुम्हारे परिवार को लेकर तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है, इसलिये जो चाहो इसके पुण्यकर्मों में से अपने खाते में ले लो, 'तो वह जो चाहेगा उसके पुण्यकर्मों में से ले लेगा। तो तुम्हें क्या लगता है (इसके बाद भी तुम्हारे पास कोई पुण्य बचेगा)?''**[18]

और जो जिहाद में लड़ने नहीं जाते हैं अथवा जिहादी को तैयार नहीं करते हैं अथवा लड़ने गये जिहादी के परिवार की देखभाल नहीं करते हैं उनके लिये स्पष्ट चेतावनी दी गयी है। अत: यदि जंग के समय मुसलमान इन तीन कार्यों को नहीं करता है तो वह अल्लाह के दंड का भागी बनता है। जैसा कि अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) की ओर से बताया गया है: **''जो भी जिहाद में लड़ने नहीं जाता है, अथवा लड़ाका तैयार नहीं करता है अथवा लड़ने गये जिहादी के परिवार की अच्छी देखभाल नहीं करता है, उस पर अल्लाह कयामत के दिन कोप बरसाएगा।''**[19]

शेख अबू बासिर ने कहा: **''तो किसी मोमिन को इन तीन प्रकार के मुसलमान बनने के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार के मुसलमान बनने की अनुमति नहीं है। ये तीन प्रकार हैं या तो वह मोमिन अल्लाह के मार्ग में लड़ाका बनें अथवा लड़ने गये जिहादी के परिवार की अच्छी देखभाल करे अथवा वह अल्लाह के मार्ग में लड़ने के लिये जिहादी तैयार करे। यदि वह इन तीन में से किसी भी एक प्रकार का मोमिन नहीं है तो वह तैयारी कर ले कि उस पर कयामत के दिन से पहले अल्लाह का कोप आने वाला है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि यह कोप कैसा और किस सीमा तक होगा!''**

7. शहीदों के परिवारों का भरण-पोषण करें

... और उनकी विधवाओं की सहायता करना तथा उनके बच्चों व रिश्तेदारों पर ध्यान देना।

---

[17] मुस्लिम और अबू दाऊद द्वारा वर्णित

[18] मुस्लिम, अहमद, अबू दाऊद और अन-नसाई द्वारा वर्णित

[19] अबू दाऊद द्वारा वर्णित और यह प्रामाणिक है।

अत: जिहाद की सेवा की इच्छा रखने वालो और तुम्हारे बदले जिन्होंने जिहाद किया है उनकी सेवा की इच्छा रखने वालो: जिहाद में मारे गये शहीदों के परिवारों के भरण-पोषण की व्यवस्था करो और ऐसा करने में अपना पूरा प्रयास लगा दो। जैसा कि जब रसूल (उन पर शांति हो) को मुताह की जंग में जफर बिन अबी तालिब की शहादत की सूचना मिली, तो वे उनके परिवार के पास गये और फिर अपने परिवार से बोले: **"जफर के परिवार के लिये कुछ खाना तैयार करो, क्योंकि कुछ ऐसी बात हो गयी है जिसमें उनका परिवार लगा हुआ है।"**[20]

और अहमद द्वारा वर्णित हदीस का संदर्भ देकर इब्न कासिर रसूल (उन पर शांति हो) की जफर के बच्चों के साथ इस कहानी का उल्लेख करते हैं कि असमा बिंते उमैस ने कहा: "जब जफर और उसके साथी मार दिये गये, तो अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) हमारे पास आये। उस समय मैं कुछ चमड़े छील रही थी, और मैंने कुछ लोई बना रखी थी और अपने बेटे को नहला दी थी और मैंने उन (चमड़ों) को साफ कर दिया था। तो अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) बोले: **"जफर के बच्चों को मुझे दो।"** तो मैंने उनको उन्हें दे दिया और उन्होंने उन्हें सूंघा और उनकी आंखें (आंसुओं से) नम हो गयीं। तो मैंने कहा: 'हे अल्लाह के रसूल, मेरे अम्मी और अब्बू भी आप पर (बलिदान) कुर्बान हो जाएं! आप रो क्यों रहे हैं? क्या आपको जफर और उसके साथियों के संबंध में कोई समाचार मिला है? वो (उन पर शांति हो) बोले**: "हां, वे आज मारे गये।"**

तो मैं उठी और दहाड़ें मारकर रोने लगी और उस औरत के पास भागी। तब अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने अपने परिवार से कहा: **"जफर के परिवार की उपेक्षा मत करना। उनके लिये कुछ खाना तैयार करो, क्योंकि वे अपने रिश्तेदार के मामले में बहुत दुखी और चिंतित हैं।"**

तो आओ हम अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) को अच्छे आदर्श के रूप में लें और आओ हम शहीदों के परिवारों, उनकी विधवाओं व बच्चों की देखभाल करें, उनकी सहायता करें, उनका भरण-पोषण करें। उनके बच्चों की सहायता की जाए और सभी बुरी व कष्टकारी स्थितियों से उनकी रक्षा की जाए; यदि उसकी बीवी दोबारा शादी करना चाहे, तो उसके भरण-पोषण योग्य व्यक्ति से उसकी दूसरी शादी कर दी जाए, क्योंकि जफर की बीवी अस्मा बिंते उमैस जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है, ने इद्दत की अवधि बीत जाने के बाद अबू बक्र आ-सिद्दीक (उनसे अल्लाह प्रसन्न हो) से शादी की।

तो ये सब करना शहीदों के प्रति हमारा कर्तव्य है और ये सब ऐसे सरल काम हैं जिनका अल्लाह की ओर से बड़ा पुरस्कार मिलता है।

इस शहीद ने इस दीन की सेवा और अल्लाह की वाणी के प्रसार में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया, तो हम कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि उसके न रहने पर उसके परिवार, उसकी बीवी व बच्चों का भरण-पोषण करें।

हो सकता है कि अल्लाह हमारी गलतियों को क्षमा कर दे और हमें भी शहीदों के कारवां में मिलने की अनुमति दे दे...

---

[20] अबू दाऊद और तिरमिज़ी द्वारा वर्णित

8. घायल व बंदी बनाये गये जिहादी के परिवार का भरण-पोषण करना

और हम जिस विधि से जिहाद और मुजाहिद्दीनों की सेवा कर सकते हैं वह यह है कि लड़ने गये जिहादियों में से जो घायल हो गये हों अथवा बंदी बना लिये गये हों उनके परिवारों का भरण-पोषण करें, क्योंकि अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिये वे स्वयं उपस्थित नहीं हैं और उनके परिवारों को सहायता की आवश्यकता होती है। अत: ऐसे मुजाहिद्दीनों के परिवारों को अकेला न छोड़ा जाए। ऐसे परिवारों का भरण-पोषण करना और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना अनिवार्य होता है, क्योंकि इन परिवारों की स्थिति भी वैसी ही होती है जैसी कि जिहाद में लड़ने गये और शहीद हो गये लड़ाकों के परिवारों की।

ऐसे बंदियों के परिवारों व उनके रिश्तेदारों की विशेष चिंता की जानी चाहिए, क्योंकि बंदी बनाये गये अपने बेटे के बारे में उनकी वेदना अपार होती है और उस बेटे का क्या होगा यह सोचकर उनका दुख व चिंता निरंतर बढ़ती जाती है। इसलिये यह आवश्यक होता है कि ऐसे परिवार के लोगों को धीरज रखने और सहन करने को प्रेरित किया जाए और उनसे कहा जाए कि उनके संकट में हम सब उनके साथ हैं।

और एक और बात जो पायी जाती है वो यह है कि बंदी बनाये गये इन लड़ाकों की बीवियों पर समाज का एक दबाव होता है और कुछ मूर्ख उनके शौहरों का उपहास करते हुए उन्हें छेड़ते हैं और उनकी इस स्थिति का लाभ उठाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसा काम वही करते हैं जिनका कोई चरित्र नहीं होता है, जिसके पास शिष्टता नहीं होती है। अत: हमारे पास बंदी बनाये गये भाइयों की बीवियों के साथ भरण-पोषण कर्ता, संरक्षक व समर्थक के रूप में खड़े होने तथा उनको धीरज रखने के लिये प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं होता है।

और अल्लाह तब तक अपने बंदों की सहायता करेगा, जब तक कि वे अपने भाइयों की सहायता करेंगे।

9. मुजाहिद्दीनों के लिये धन एकत्र करें

इसमें कोई संशय नहीं है कि धन जिहाद की जीवन-रेखा है और जिहाद व मुजाहिद्दीनों के सबसे लाभकारी यह है कि उम्मा का कोई समूह अथवा पूरी उम्मा धन एकत्र करे और जिहाद में लड़ने वाले लोगों के पास भेजे। जिहाद पर इसका प्रभाव किसी से छिपा नहीं है। इसी से तो संसारभर में काफिर अचंभित हैं, क्योंकि उन्होंने मुजाहिद्दीनों के संसाधनों को नष्ट करने का प्रयास किया है और उन लोगों पर दबाव बना दिया है, जो मुजाहिद्दीनों की सहायता करते हैं। इसके बाद भी मुजाहिद्दीन अपने मार्ग पर आगे बढ़ते जा रहे हैं, क्योंकि **"...उन्हें उनसे हानि नहीं पहुंच सकेगी जो उनका विरोध करते हैं अथवा जो उनसे विश्वासघात करते हैं।"**

और जब जिहाद का आंदोलन आह्वान करता है और अन्य लोगों को इस पर व्यय करने को प्रेरित करता है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि यह कोई चैरिटी संगठन है, जो किसी से भी चंदा मांगने के लिये दानपेटी लिये घूमता रहता है, क्योंकि यह एक ऐसा आंदोलन है, जो प्रथमत: (अल्लाह के बाद) अपने पर ही निर्भर होता है। जब यह किसी अच्छे मोमिन से दान स्वीकार करता है, तो

उससे पहले उनकी सहानुभूति और दावा (अन्य लोगों को इस्लाम में लाने का प्रयास) की भावना एवं जिहाद में सम्मिलित होने की इच्छा को स्वीकार करता है। अत: यह अपने को ऐसे स्तर पर नहीं गिराता है, जो इसकी मान्यताओं और इसके संघर्ष में दाग लगायें। ऐसा करते हुए यह अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) के उस उदाहरण का भी अनुपालन करता है, जिसमें वह अपने साथियों से अल्लाह के मार्ग में व्यय करने को कहते थे और इस प्रकार एकत्र धन से लड़ाकों को तैयार करते थे।

और उत्तरदायित्व की सामूहिक पूर्ति एवं दीन-आधारित सहयोग का ऐसा सुंदर उदाहरण तब दिखता है, जब रसूल (उन पर शांति हो) की सभी जंगों में लड़ाकों को तैयार करने के लिये धन व्यय करने में मोमिनों के बीच होड़ लग जाती थी। विशेषकर तबूक की जंग देखिए, जब मुसलमान दौड़ पड़े और अपना धन व पूंजी दे दिया और आदमियों व औरतों में से सबसे भद्र लोग जंग में भाग लिये।

और इससे अच्छा क्या होगा कि मुक्त हस्त से मुजाहिद्दीनों के लोगों को अपना धन देकर, उनकी सहायता करके, उनके लिये कुर्बानी देकर इस्लामी एकता के पुनरुत्थान पर इस्लाम के बेटों को बड़ा करो। क्योंकि मुजाहिद्दीनों के लोग ही हैं जो उन्हें अल्लाह की बातों के प्रचार के लिये अपना जीवन न्यौछावर करने और जंग के मैदान में अपना सबकुछ देने में होड़ लगाने के लिये पाल-पोस कर बड़ा करते हैं।

वस्तुत: यही सही पालन-पोषण है; ऐसा पालन-पोषण जो दीन के लक्षणों और मजहब के ढर्रे पर हो। और जो भी मुसलमान इस प्रकार का व्यापक जिहादी पालन-पोषण पाया होगा, वह अपने धन के अंतिम अंश के व्यय हो जाने तक भी दीन के लिये व्यय करने में कृपणता (कंजूसी) नहीं करेगा। ऐसा मुसलमान अपने मुजाहिद भाई द्वारा सहायता व सहयोग की पुकार किये जाने पर उसके पास भागकर जाने में संकोच नहीं करेगा:

हे इस्लाम में मेरे भाई, वस्तुत: दीन कुछ ऐसा होता है जो कयामत के दिन तुम्हारे लिये आनंद लायेगा।

इसलिये दीन के लिये जो अच्छा है उसके लिये प्रयास करो और कुर्बानी की होड़ करो, क्योंकि तब अल्लाह कयामत के दिन तुम्हें पुरस्कार देगा।

शेख युसुफ अल-उयैयरी (अल्लाह उन पर कृपा करे) ने कहा: "और जिनके पास दीन पर व्यय करने के लिये आय या धन नहीं है, उन्हें उन लोगों, औरतों, बच्चों और विशिष्ट व्यक्तियों व सामान्य व्यक्तियों से धन एकत्र करना चाहिए जिनके पास धन है। और जो धन एकत्र करने में भी असमर्थ हैं, वे कम से कम इतना तो करें ही कि अन्य लोगों को तन-मन और धन से जिहाद करने के लिये प्रेरित करें और वे अन्य लोगों से निवेदन करें कि जब उनसे जिहाद के लिये धन मांगा जाए तो देने में कृपणता न करें।"

और मुजाहिद्दीनों के लिये धन एकत्र करने के बहुत से उपाय हैं, जिसका उल्लेख यहां नहीं किया जा सकता है। किंतु जो महत्वपूर्ण बात है वह यह है कि आप दीन के लिये धन एकत्र करने के पूर्णरूपेण समर्पित हों। यदि दीन के लिये धन एकत्र करने की आपकी इच्छा और संकल्प पक्का है, तो आपको इसके लिये असंख्य उपाय मिल जाएंगे और आप अपने बीच उपस्थित काफिरों के

सहायकों और काफिरों की ओर से धर्मयुद्ध लड़ने वाले लोगों एवं मुजाहिद्दीनों के शत्रुओं द्वारा मार्ग में उत्पन्न की जा रही प्रत्येक बाधा को पार कर जाएंगे।

मैं इसकी चिंता नहीं करता कि मेरा मार्ग बोझ व अवरोधों से भरा हुआ है।

तब हमारे लिये यह पक्के रूप से जानना आवश्यक है कि जिहाद के लिये धन एकत्र करना अनिवार्य है और यह जिहाद लड़ने वाले भाइयों पर तुम्हारा कर्तव्य है, न कि उपकार। उपकार तो अल्लाह महान का है- और वही है जिसे मार्ग दिखाने के लिये धन्यवाद किया जाना चाहिए, क्योंकि वही है जिसने आपको अगली पांत में जाकर जिहाद के लिये लड़ने वालों की सेवा का अवसर दिया। कितने लोगों को अल्लाह ने जिहाद में भाग लेने की कृपा से वंचित रखा और कितने थोड़े से लोगों को उसने जिहाद में मरने-मारने के लिये चुना? तो हे अल्लाह! हमें उन थोड़े लोगों में एक बना दो जिहाद के लिये जंग करते हैं...

और आइए, हम अल्लाह महान की बातों को स्मरण करें:

सुनो! तुम्ही लोग हो, जिन्हें अल्लाह के मार्ग में खर्च करने को बुलाया जा रहा है, फिर भी तुममें से कुछ कंजूसी करने लगते हैं। और जो कंजूसी करता है, तो वह अपने आप ही से कंजूसी करता है। पर अल्लाह धनी है और तुम निर्धन हो। और यदि तुम मुंह फेरोगे, तो वह तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ले आयेगा और वे तुम्हारे जैसे नहीं होंगे।"[21]

और आइये अपने प्यारे मुहम्मद (उन पर शांति हो) के शब्दों को अपनी आंखों के सामने रखें: "जो कोई दीन के काम के किये जाने में सहायक बनता है, वह वैसा ही शबाब पाता है जैसा कि दीन का काम करने वाला वह व्यक्ति", और यह हदीस कहती है: "हे अल्लाह! जो मुक्त हस्त से व्यय करता है उसकी क्षतिपूर्ति करो और जो कंजूस है उन पर विनाश लाओ।"

10. उनको जकात दो

जकात हमारे धन पर अल्लाह का अधिकार है और आज जिन्हें हमारे धन की सर्वाधिक आवश्यकता है वो हैं मुजाहिद्दीन। वे ही हमारे धन को लेने के सबसे अधिक पात्र हैं, क्योंकि वे ही सच में "अल्लाह के मार्ग" में निर्धन, यात्री आदि हैं।

शेख अब्दुल्ला आजम (अल्लाह उन पर दया करे) ने बताया है: इब्न तैमिय्याह से भूखे को खिलाने और जिहाद के लिये धन की कमी के बारे में पूछा गया, क्योंकि धन की कमी से जिहाद में बाधा आती तो उन्होंने कहा: हम जिहाद को प्राथमिकता देते हैं, भले ही भूखे मर जाएं। वैसे ही जैसे कि मानव को ढाल बनाने के विषय में है (जिसमें प्राथमिकता यह होती है कि काफिरों पर हमला किया जाए, भले ही काफिर मुसलमानों को अपनी ढाल बनाये हुए हों और उस हमले में ढाल बनाये गये वो मुसलमान मारे जाते हैं, तो मारे जाएं)। (हमारे लिये जिहाद चलाते रहना अधिक महत्वपूर्ण है, भले ही इस काम में कुछ मुसलमान मारे जाएं) अर्थात हमारे लिये जिहाद अधिक महत्वपूर्ण है। ऐसा इसलिये है क्योंकि मानव ढाल के प्रकरण में हम अपनी कार्रवाई से मार रहे

---

[21] मुहम्मद;38

होते हैं, जबकि इस प्रकरण में (उन्हें अर्थात भूखे मुसलमानों को जकात का धन न देने के प्रकरण में) वे अल्लाह की कार्रवाई से मर रहे होते हैं।''

अल—कुर्तुबी ने कहा: ''विद्वान इस पर सहमत हैं कि यदि मुसलमान जकात दे दें और उसके बाद भी दीन की कोई आवश्यकता आ पड़े, तो उनके लिये यह अनिवार्य है कि वे उस आवश्यकता की पूर्ति के लिये अपना धन दें।''

और मलिक ने कहा: ''मोमिनों के लिये यह अनिवार्य है कि वे बंदी बनाये गये मुसलमानों को छुड़ाने के लिये धन दें- भले ही इस काम में उनका सारा धन चला जाए- इस पर सहमति है।''

शेख अब्दुल्ला आजम (अल्लाह उन पर दया करें) ने कहा: ''और दीन की रक्षा करने वालों को (मुसलमानों के) प्राणों की रक्षा करने वालों पर प्राथमिकता दी जाती है तथा प्राणों की रक्षा करने वालों को धन की रक्षा करने वालों पर प्राथमिकता दी जाती है। किसी धनिक का धन मुजाहिद्दीन के खून से अधिक मूल्यवान नहीं है, अत: धनिकों को उनके धन के संबंध में अल्लाह द्वारा दिये गये आदेश को ध्यान रखना चाहिए! जिहाद को सर्वाधिक आवश्यकता है और मुसलमानों का मजहब और भूमि संभावित खतरे की ओर खुली हैं और धनी मुसलमान अपनी विलासिता में डूबे हुए हैं। और यदि धनी मुसलमान एक दिन के लिये अपनी विलासिता छोड़ दें और व्यर्थ की बातों में अपना धन लुटाने से अपना हाथ रोक दें और इसके बजाय अपना धन मुजाहिद्दीनों की ओर भेज दें, वही मुजाहिद्दीन जो ठंड से मर रहे हैं और जिनके अंग ठंड से सुन्न पड़ने के कारण कट गये और जिनके पास अपनी सहायता और अपना रक्त बहने से बचाने के लिये कोई व्यवस्था नहीं है। मैं कहता हूं: यदि धनी मुसलमान अफगान मुजाहिद्दीनों को उतना धन दे दें जितना कि वह एक दिन में अपने ऊपर व्यय करते हैं तो उनके उस धन से- इंशाअल्लाह (अल्लाह ने चाहा तो) जिहाद की फतह में बड़ा कदम होगा।''

अत: मुजाहिद्दीनों को जकात देना अनिवार्यता है, क्योंकि यह अल्लाह का तुम्हारे धन पर अधिकार है और यह शेख मुहम्मद बिन उसैमिन (अल्लाह उन पर दया करे) और शेख अब्दुल्लाह बिन जिबरीन (अल्लाह उनकी रक्षा करे) द्वारा बताया गया है: ''यदि जिहाद की भूमि में मुजाहिद्दीनों और सताये गये मुसलमानों के लिये लाभकारी हो तो कुछ स्थितियों में पहले भी जकात देने की अनुमति है।''

और इसमें संशय नहीं है कि जकात का केवल चौथाई भाग ही जिहाद व मुजाहिद्दीनों पर व्यय किया जाना है और हम यह कर पायें तो इसका बड़ा परिणाम देखेंगे और इससे विश्व के कोने-कोने में मुजाहिद्दीनों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाएगी। और यदि आप कुछ लोगों से कहें कि मजहब के लिये व्यय करें और अपने धन की रफीदाह की कुर्बानी दें तो आपको निम्नलिखित दो उत्तर मिलेंगे:

1) यह कि उनके पास उनका साथ देने के लिये राज्य है और

2) यह कि वे अपने नेताओं को खुम्स[22] देते हैं।

और मैं उनके उत्तर में कहूंगा: हम इसकी प्रतीक्षा न करें कि राज्य जिहाद के लिये धन उपलब्ध कराने को अहलुस-सुन्नत करेगा अथवा लोगों की आय का पांचवां भाग लेकर देगा। अपितु हम उस जकात के चौथा भाग भर मांगे, जिसका उपयोग अकस्मात आने वाली प्रतिकूल स्थितियों से निपटने में किया जाए। और स्वयं से पूछो: तुम्हारे जकात का कितना धन विश्व के विभिन्न देशों में इस्लामी केंद्र बनाने में व्यय किये गये हैं, जबकि नवनिर्मित तालिबान इस्लामी राज्य को ऐसे मुसलमानों की आवश्यकता है जो उस पर धन व्यय कर सकें। पर देखिये धन की कमी होने पर भी तालिबान इस्लामी राज्य अपनी सोच नहीं डिगा और जब उसके अमीर उल-मुमिनीन अल-मुल्ला उमर को चेचन्या के ग्रोजनी में मुजाहिद्दीनों की बुरी आर्थिक स्थिति का पता चला, तो उन्होंने मुसलमानों के बैत अल-माल[23] का देखरेख करने वाले से पूछा कि कितना धन है और उन्हें बताया गया कि तालिबान राज्य के पास केवल 300,000 अमरीकी डालर हैं। तब मुल्ला उमर ने बैत अल-माल के खजांची को कहा कि चेचन्या में मुजाहिद्दीनों के पास इस धन का एक तिहाई भेजा जाए!!

देखो! एक पूर्ण मुसलमान राज्य जिसके पास केवल 3 लाख अमरीकी डालर ही था, जबकि मुसलमानों द्वारा दिया जा रहा जकात यहां-वहां भेजा जा रहा था, उचित स्थान पर न भेजकर व्यर्थ उपयोग किया जा रहा था! और जब अफगानिस्तान के विरुद्ध हाल का धर्मयुद्ध प्रारंभ हुआ तो इस्लामी राज्य के कोषागार में केवल 70000 अमरीकी डालर रह गये थे!!

हे अल्लाह! अहलुस-सुन्नत कितना अचंभित करने वाला है! यहां तक जो जकात वे अपने धन में से देते हैं, उसे उचित स्थान पर नहीं लगाया जा रहा है!

और अल्लाह सहायता का स्रोत है और उसी पर सारा आसरा है।

11. घायलों के उपचार में सहायता करो

…और उनके उपचार व औषधियों को क्रय करने में सहायता करके अथवा उनके उपचार का व्यय वहन करने अथवा चिकित्सक के वेतन का भुगतान करके ऐसा किया जाता है। और इसमें संशय नहीं है कि बड़ी संख्या में मुजाहिद्दीन घायल होते हैं और जब उनके उपचार की व्यवस्था की जाती है, तो यह उनकी बड़ी सेवा होती है और निम्न प्रकार के लोगों से ऐसी सेवा की अपेक्षा की जाती है:

- ऐसे चिकित्सक व फॉर्मासिस्ट जिनके पास घायलों के उपचार का कुछ अनुभव व अंतदृष्टि हो
- वे लोग जो उस स्थान पर रहते हों, जहां जिहाद चल रहा हो। चूंकि ये लोग जहां जिहाद हो रहा हो उस स्थान पर जाने और उपचार करने में सक्षम होते हैं, अत: ये लोग वो कर सकते हैं जो अन्य लोग नहीं कर सकते हैं।

[22] जंग में लूटे गये धन का पांचवां भाग

[23] कोषागार

- यदि तुम अन्य स्थान पर हों और तुम्हारे पास घायल किसी अन्य स्थान से आये हों, तो उन घायलों को आवश्यक सेवाएं उपलब्ध कराओ तथा उनके संबंधित बिल का भुगतान करो।

और इसी प्रकार यह भी सामान्य नियम है कि जो लोग मुजाहिद्दीनों पर अपना धन व्यय करने में समर्थ हों वे घायल व चोटिल मुजाहिद्दीनों पर भी अपना धन व्यय करें।

12. मुजाहिद्दीनों की प्रशंसा करो और उनके कार्यों का गुणगान करो तथा लोगों से उनके पदचिह्नों पर चलने का आह्वान करो

और जिहाद व मुजाहिद्दीनों की सेवा करने के उपायों में से एक एक यह भी है कि मुजाहिद्दीनों की प्रशंसा करो, उनके साथ अपना नाम जोड़ने में गर्व का अनुभव करो और उनके कार्यों का गुणगान करो, उनकी कहानियां लोगों को सुनाओ और इस मजहब के शत्रुओं के विरुद्ध जंग में उनके साथ हुए चमत्कारों व विजयों को लोगों को बताओ। इस प्रकार ऐसा करने से हृदय अतीत के गौरव व सम्मान से सुगंधित हो उठता है और उसे नयी ऊर्जा मिलती है। मुजाहिद्दीनों ने अपना प्रतिष्ठित खून, पवित्र अंग और अपनी स्वच्छ व विशुद्ध रूह दिया है, उसकी गाथा लिखकर पुस्तकों का पहाड़ खड़ा कर दो:

प्रत्येक दिन, जन्नत में जाने वाले कारवां, जिसमें शहीद होते हैं और सबकुछ जानने वाला अल्लाह इससे प्रसन्न होता है,

उन्होंने जो किया है, उसका वर्णन मैं कैसे करूं? मैं नि:शब्द हो गया हूं और लेखनी सूख गयी है।

और उनकी कहानियों के उल्लेख में लोगों के लिये एक आह्वान होता है कि वे उनके उन पदचिह्नों पर चलें जिन पर चलकर वे रसूल मुहम्मद (उन पर शांति हो) के आदर्शों पर आगे बढ़ सके। और तुम्हारे लिये इससे अच्छा क्या होगा कि तुम मुजाहिद्दीन बनकर उम्मा के लिये एक आदर्श बनो। इस संसार की सुख-सुविधा के लोभ में खोने की अपेक्षा वैसे मुजाहिद्दीन बनो, जो इस दीन के झंडे को उठाने के लिये अपना जीवन देता है।

उम्मा को जानना चाहिए कि जिहाद और मुजाहिद्दीन और शहीद का इतिहास कोई अलग-थलग पड़ा अकेला टुकड़ा नहीं है। अपितु यह तो इस निरंतरता वाले प्रतिष्ठित उम्मा के इतिहास में एक सतत् श्रृंखला है, जिसे मुहम्मद (उन पर शांति हो) और उनके साथियों ने प्रारंभ किया था और लोग आज भी उनके पदचिह्नों का अनुसरण करते हैं।

जो मुजाहिद्दीनों के कारवां में सम्मिलित होता है, वह उस सच्चे इस्लाम से दूर नहीं होता है जिसे रसूल मुहम्मद (उन पर शांति हो) लेकर आये थे, बल्कि वह उनके मार्ग पर चल रहा होता है। और जो पूछते हैं कि क्यों आज के विद्वान जिहाद के लिये नहीं जाते हैं और अल्लाह के मार्ग में जंग नहीं करते हैं, उनको मुझे कहना है: हमारे आदर्श मुहम्मद हैं, न कि वे जिनका झुकाव इस संसार में और उसमें खो गये हैं। ऐसे व्यक्ति कितने बड़े नाम या पद वाले हों, पर हमारे आदर्श नहीं हैं:

उन्होंने कहा: "विद्वानों या इबादतियों में क्या कोई है, जिसके पदचिह्नों पर तुम चल सकते हो?"

मैंने कहा: "रसूल मुहम्मद और उनके साथी, जो सतत् जिहाद करते रहे।

वस्तुत: मेरा उदाहरण इब्न अल-वलीद और मुसाब और इब्न अज-जुबैर और शेष अंसार है।"

उन्होंने कहा: "तुम्हारे मार्ग में कठिनाइयां बिखरी पड़ी हैं, तो तुम खतरों वाला जीवन क्यों चाहते हो?"

मैंने कहा: "कठिनाइयां हमारे जन्नत के मार्ग का वर्णन हैं और जैसा कि इस संसार का आनंद है जो जन्नत की आग के मार्ग का वर्णन है।"

अत: यह आवश्यक है कि लोगों और उम्मा का आह्वान किया जाए कि वे मुजाहिद्दीनों को अपने जीवन का उदाहरण बनायें, जिससे कि उम्मा अपने अतीत के वैभव को पुन: प्राप्त कर सके, क्योंकि इस उम्मा के बाद के भाग में सुधार नहीं होगा, सुधार बस वही होगा जो इसके पहले के भाग में हुआ है।

13. मुजाहिद्दीनों को प्रोत्साहित करें और उन्हें जिहाद करने को प्रेरित करें

इसमें संदेह नहीं है कि द्रोहियों और अस्वीकार करने वालों की संख्या में वृद्धि से मुजाहिद्दीनों के आत्मबल पर प्रभाव पड़ता है, पर यह भी उन्हें अपने मार्ग पर आगे बढ़ने से नहीं रोक पायेगा, क्योंकि रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा है: **"जो उनका विरोध करते हैं या उनसे विश्वासघात करते हैं, उनसे उनको हानि नहीं पहुंचेगी।"** यद्यपि यह आवश्यक है कि मुजाहिद्दीनों को प्रेरित करते रहा जाए, उनके साथ खड़ा रहा जाए, उनका समर्थन किया जाए और उनके समक्ष यह प्रदर्शित किया जाए कि जहां कहीं भी तुम्हारे दुश्मन हैं हम उनके विरुद्ध तुम्हारे साथ हैं। इसी प्रकार हमें उनको प्रेरित करते रहना चाहिए कि चाहे जितनी कठिनाई या झंझावात आयें पर वे धैर्य रखकर निरंतर जिहाद करते रहें।

इस प्रकार यह नैतिक समर्थन का सबसे अच्छा रूप है, जो हम मुजाहिद्दीनों के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं और हो सकता है कि अल्लाह इसी के कारण हम पर दया करे।

इन दिनों मुजाहिद्दीनों को ऐसे लोगों की आवश्यकता बढ़ गयी है जो उनके संकल्प को सुदृढ़ करने वाले हों, क्योंकि छल करने वालों या ऐसे लोगों की संख्या बढ़ गयी है, जो सच और झूठ को एक साथ मिलाते हैं। अल्लाह के अतिरिक्त न तो कोई और सामर्थ्यवान है और न ही ताकतवर। रसूल (उन पर शांति हो) ने सच ही कहा जब वे बोले: **"तुम्हारे बाद वह भी दिन आयेगा, जब दीन की भलाई करने वाले का धीरज तुममें (रसूल के साथियों) से पचास का पुण्य पायेगा, क्योंकि तुम्हारे आसपास वो लोग हैं जो दीन की भलाई के लिये तुम्हें प्रेरित करते हैं, पर उनके आसपास ऐसे लोग नहीं होंगे जो दीन की भलाई के लिये प्रोत्साहित करें।"**

तो आओ हम उन जैसे बनें जो मुजाहिद्दीनों को प्रोत्साहित करते हैं:

तुम्हारे पास देने के लिये धन या घोड़े नहीं हैं, तो यदि कुछ देने की स्थिति नहीं बनती है ,तो कम से कम कुछ प्रोत्साहित करने वाली बातों से ही सहायता करो।

14. मुजाहिद्दीनों के लिये मुखर रहो और उनका बचाव करो

अबू अज-दर्दा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हों) के हवाले से अत-तिरमिजी ने बताया है कि रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: **"जो भी अपने जिहादी लड़ाका भाई के सम्मान का बचाव करेगा, कयामत के दिन अल्लाह उसके मुख से आग हटा देगा,"** और यह उम्मा के अन्य लोगों पर मुजाहिद्दीन का अधिकार है।

हमें अत्यंत सचेत रहना चाहिए कि ऐसा कोई काम न करें या ऐसी कोई बात न करें, जिससे मुजाहिद्दीन के सम्मान पर ठेस पहुंचे या उसकी छवि को हानि पहुंचे। हमें मुजाहिद्दीन का दोष या गलती देखकर भी उसे उजागर नहीं करना चाहिए। बल्कि हमारे लिये अनिवार्य यह है कि इस स्थिति और इस समय में हम उसके साथ खड़े रहें, उसके सम्मान की रक्षा करें, उसकी गलतियों को ढंकें और उन लोगों के लिये मन में शत्रुता पालें जो उसको हानि पहुंचाने या कुछ ऐसा प्रचारित करने की इच्छा रखते हों जिससे उसकी हानि हो। यहां मैं अपने भाइयों से कहना चाहता हूं कि अश-शर्क अल-अवसात और इसके जैसे अन्य समाचारपत्रों का बहिष्कार करें, क्योंकि ये समाचारपत्र यहूदियों के गठबंधन की योजनाओं पर चलकर उम्मा और मुजाहिद्दीन के बीच विभाजन के बीज बोने, मुजाहिद्दीनों की फौज में असंतोष फैलाने और उनके बारे में झूठ प्रकाशित करने में संलिप्त हैं। तो ये शैतानी समाचारपत्र हैं- अपनी उत्पत्ति में भी और अपनी पद्धति में भी और मैं मानता है कि इन समाचार पत्रों या ऐसे किसी प्रकाशन कंपनी के साथ काम करने की अनुमति नहीं होनी चाहिए, जो अल्लाह, उसके रसूल और मोमिनों के विरुद्ध हों। और हमें यह जान लेना चाहिए कि हमारे मुजाहिद्दीन भाइयों के साथ हमारी भूमिका अल्लाह महान द्वारा कही गयी बातों में बतायी गयी है:

"और वो उनके बाद आये कहते हैं: "हे मालिक! हमें और हमारे उन भाइयों को क्षमा कर दे, जो हमसे पहले ईमान लाये और हमारे ह्रदयों में उनके लिये कोई बैर न रख जो ईमान लाये। हे हमारे मालिक! तू अति करुणामय, दयावान् है।"[24]

शेख युसुफ अल-उयैयरी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "और अपनी जिह्वा से जिहाद के एक रूप में यह भी है कि काफिरों द्वारा किये जा रहे अपने बचाव को जंग बताकर अपने लोगों को जिहाद के लिये तैयार करो और मुजाहिद्दीनों के सम्मान को बचाओ। चाहे किसी विशेष व्यक्ति या उसके परिवार के साथ हो अथवा किसी साधारण व्यक्ति के साथ, यह काम मिलने के किसी स्थान पर, मस्जिद, कार्यस्थल और स्कूल आदि सभी स्थानों पर करते रहो। इस प्रकार प्रत्येक मुसलमान का यह कर्तव्य है कि जहां भी और जितना भी वह कर सकता हो, अपनी जुबान से जिहाद फैलाये और जुबान से फैलाये जाने वाले जिहाद की कोई शर्त नहीं होती है। अपितु यह प्रत्येक मोमिन का कर्तव्य है कि उसे जो भी बात ऐसी लगे कि काफिरों को नंगा करने और काफिरों को कष्ट देने वाला है या मुजाहिद्दीनों का बचाव करने वाला है तो वह उस बात को अपने लोगों के बीच बोले और अपने एक—एक शब्द को स्पष्ट करे, तथा अल्लाह ही सर्वज्ञानी है।"

---

[24] अल-हश्र;10

और वह (अल्लाह उन पर दया करें) बोले: "और वे जो जिहाद फैलाने के बजाय चुप रहने में प्रसन्न रहते हैं, उनके लिये अल्लाह महान कहता है:

"और यदि तुम मुंह फेरोगे, तो वह तुम्हारे स्थान पर लोगों के दूसरे समूह को ले आयेगा और वे तुम्हारे जैसे नहीं होंगे।[25]

और जो ऐसे समयों में चुप रहते हैं, उनके लिये अल्लाह की ओर से जो कहा गया है वह जाबिर बिन अब्दुल्लाह और अबू तलहा बिन सहल अल-अंसारी (अल्लाह दोनों से प्रसन्न हो) के हवाले से अबू दाऊद व अहमद ने बताया है कि अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: **"कोई मुसलमान ऐसा नहीं है. जो उस स्थिति में किसी दूसरे मुसलमान से विश्वासघात करेगा, जब उसका सम्मान जा रहा हो अथवा दर्जा कम हो रहा हो, सिवाय इसके कि अल्लाह महान ही उस स्थिति में उसके साथ विश्वासघात करे, जबकि वह सहायता की आशा कर रहा हो। और कोई मुसलमान ऐसा नहीं है कि उस स्थिति में अपने मुसलमान भाई की सहायता करेगा जब उसका दर्जा कम हो रहा हो या उसका सम्मान जा रहा हो, सिवाय इसके कि अल्लाह उस स्थिति में उस मुसलमान की सहायता करे, जब उसे सहायता की आशा हो।"**

और आज हम उस समय में जी रहे हैं, जब ऐसे बहुत हैं जो ढोंगी व इस्लाम छोड़ देने वाले हैं और वो भी हैं जिन्हें इस्लाम का ज्ञान नहीं है पर वे स्वयं को इस्लामी ज्ञान से जोड़ते हैं। ये सारे लोग मुजाहिद्दीनों का अपमान करते हैं, उनको तुच्छ बताते हैं और उनका उपहास करते हैं।

और यहां जो बात जानने योग्य है वह यह है कि जिहाद और मुजाहिद्दीन का सम्मान उन बहुत से विद्वानों के सम्मान से कहीं अधिक पवित्र है, जो लोगों को जिहाद से दूर करने का कोई अवसर छोड़ते नहीं हैं, और यहां, दो बिंदु अवश्य समझा जाना चाहिए:

1. जिहाद और मुजाहिद्दीन का बचाव करने में बड़ा लाभ है। मुसलमान को यह बड़ा लाभ देखना चाहिए, न कि उस विद्वान के हित की ओर जिसने किसी भी प्रकार से मुजाहिद्दीन को नकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया हो। ऐसा विद्वान भले ही तर्क दे कि उसने मुजाहिद्दीन को नकारात्मक रूप से क्यों लिया, पर ऐसे विद्वान को उत्तर देना मुसलमान का अनिवार्य कर्तव्य होता है, चाहे ऐसा करने में उस विद्वान की छवि कलंकित हो जाए, पर उसे उत्तर मिलना चाहिए, क्योंकि उसने अपनी बातों से स्वयं ही अपने पर दोष मोल लिया है।
2. एक ऐसी हदीस है, जिसमें बताया गया है कि एक समय ऐसा आयेगा जब विद्वान व इबादतगार जिहाद का उपहास उड़ायेंगे। ऐसी ही एक स्थिति का वर्णन सलमाह बिन नुफैल (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के हवाले से उनकी 'सुनन' में अन-नासा द्वारा किया गया है: "मैं अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) के पास बैठा था, तो एक व्यक्ति बोला: "हे अल्लाह के रसूल! लोगों ने अपने घोड़े किनारे कर दिये हैं और अपने हथियार रख दिये हैं तथा कह रहे कि अब और जिहाद नहीं होगा क्योंकि जंग समाप्त हो चुकी है।" तो अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने उसकी ओर

---

[25] मुहम्मद;38

अपना मुख किया और बोले: **"उन्होंने झूठ कहा है! अब! अब जंग आ चुकी है और मेरी उम्मत में एक समूह सच के लिये लड़ने से नहीं रुकेगा और अल्लाह उनके लिये लोगों का हृदय झकझोर देगा तथा उनके पास जो है उसे वह उस समूह के लोगों को देगा, जब तक कि कयामत की घड़ी आ नहीं जाती और अल्लाह की बात जम नहीं जाती है और कयामत का दिन आने तक घोड़ों के सिर के बालों में अच्छा है।"**

इब्न असाकिर ने जैद बिन असलाम के पिता के हवाले से बताया कि रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: **"जब तक आकाश से वर्षा होती रहेगी, तब तक जिहाद सुंदर व जीवित रहेगा और फिर एक समय ऐसा भी आयेगा जब उनके बीच के इबादतगार कहेंगे: "यह समय जिहाद का नहीं है।"** तो जो भी ऐसा समय देखने के लिये जीवित रहेगा, वह जान ले कि जिहाद के लिये सबसे उपयुक्त समय वही है।" उनसे (उन पर शांति हो) पूछा गया: "हे अल्लाह के रसूल! क्या ऐसे लोग होंगे जो सच में ऐसा कहेंगे?" वो (उन पर शांति हो) बोले: "हां, वो जिन्हें अल्लाह, फरिश्तों और सभी लोगों द्वारा बद्दुआ दी गयी है।"

15. ढोंगियों और मजहब के विरोधियों को उजागर करो

जो मुजाहिद्दीनों पर हमला करते हैं, जो मुजाहिद्दीनों के कार्यशैली पर हमला करते हैं उनके विरुद्ध खड़े होना और मुजाहिद्दीनों का बचाव करना अनिवार्य है, किंतु यहां यह कहा जाना चाहिए कि पवित्र कुरआन ने विशेष रूप से उन ढोंगियों को उजागर किया है, जिन्होंने जिहाद को धोखा दिया और मुजाहिद्दीनों के मार्ग में बाधा व अवरोध उत्पन्न किये और यही लोग सबसे बड़े शत्रु थे।

और आज के हमारे समय में अब्दुल्ला बिन अबी सलुल के बहुत से वंशज और उनकी बातें निफक़ के ईमाम के वंशजों व बातों से मिलते हैं। इसलिये प्रतिष्ठित कुरआन के उदाहरण का पालन करते हुए उनको नंगा करने, उनकी योजनाओं को उजागर करने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है।

और आज ये ढोंगी और इनके जैसे लोग जिस सबसे घिनौने काम में लग गये हैं वो है अल्लाह के मार्ग के मुजाहिद्दीनों की तुलना खवारिज से करना और कहा गया है कि रसूल (उन पर शांति हो) के हवाले से कही गयी यह हदीस इन पर लागू होती है, "नहीं जानते थे कि वे लोग खवारिज होने की ओर हैं, चूंकि ढोंगियों के नेता और उनके जैसे लोग मजहब के द्रोही **"...कुरआन पढ़ते तो हैं, पर आयतें उनके गले के नीचे नहीं उतरती हैं"** और उन लोगों की निष्ठा मुजाहिद्दीनों और इस्लाम के लोगों पर नहीं, अपितु इस्लाम छोड़ चुके लोगों, ईसामसीह को मानने वालों और मूर्तिपूजकों के प्रति है।

अत: मेरे मालिक तेरी महिमा; वास्तव में यह तो बड़ा कपट है!

और आज हमें अपने समय के ढोगियों को बिना संकोच या समझौते के नंगा करने के लिये अत-तौबा की आयतें पढ़ने वालों की कितनी आवश्यकता है...

और इस दीन के लिये यह पढ़ने वाले रुके नहीं हैं- अल्लाह का आभार- सच्चे विद्वान खुलकर बोलते हैं, भले ही इससे उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़े, वे दीन और पैगम्बरों के नेता (उन पर शांति हो) की सुन्नत को बचाने के लिये आगे कूद पड़ते हैं। हमारे समय के ऐसे लोगों में सबसे प्रसिद्ध अली अल-खुजैर और शेख नासिर अल-फहद (अल्लाह शीघ्र उनकी रिहाई करे) एवं शेख युसुफ अल-उयैयरी (अल्लाह उन पर दया करे) भी हैं। ये और अन्य सच में ऐसे सुदृढ़ चट्टान थे जिन्होंने इस्लाम के द्रोहियों और इस्लाम को अस्वीकार करने वालों के टुकड़े-टुकड़े कर दिया। आज भी इल्म और गुण वाले ऐसे लोगों का समूह है जो मुसलमानों को जगाते हैं, दीन के बारे में उनकी आंखें खोलते हैं, इस्लाम के शत्रुओं की योजनाओं को उजागर करते हैं और उनके बारे में भी मुसलमानों को सचेत करते हैं जो दीन के द्रोहियों की सेवा करते हैं (चाहे वे अच्छी मंशा से कर रहे हों या बुरी मंशा से)।

अल्लाह के रसूल (उन पर शांत हो बोले): **"सदा ऐसे मोमिन रहेंगे जो भटकाव से इस इल्म की रक्षा करेंगे; अतिवादियों की अतिरंजना से रक्षा करेंगे, दीन को अस्वीकार करने वालों द्वारा जोड़ी गयी बातों से और अज्ञानियों की व्याख्याओं से रक्षा करेंगे।"**

अत: जिहाद और मुजाहिद्दीन की सेवा करने की पद्धतियों में एक यह भी है कि इन ढोंगियों व इनकी छिपी योजनाओं को सार्वजनिक और निजी दोनों प्रकार की सभाओं में उजाकर किया जाए तथा ऐसा करने में तनिक भी संकोच न किया जाए, क्योंकि ये लोग साम्राज्यवाद व पश्चिमीकरण के विस्तृत हाथ होते हैं, ये लोग उम्मा को सशस्त्रीकरण से रोकते हैं, यदि जंग प्रारंभ हो जाती है तो ये लोग उम्मा को इसका दोषी मानते हैं और ये लोग लोगों से कहते हैं कि झुककर व अपमान सहकर जियें; ये लोग इस संसार के जीवन से प्रसन्न रहते हैं और इसी संसार में ही विश्वास करते हैं तथा शैतान ने ऐसे लोगों के कार्यों को इनके लिये सुंदर बना दिया है, जबकि सच यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त न कोई दूसरी ताकत है और न कोई प्रभुत्वसम्पन्न।

और ऐसा करने में सबसे महत्वपूर्ण पद्धतियों में से एक है कि उपरोक्त विद्वानों की पुस्तकों का प्रकाशन और वितरण करने का पूरा प्रयास किया जाए, क्योंकि उनमें प्रचुर स्पष्टता है।

16. लोगों को जिहाद के लिये बुलाओ एवं प्रेरित करो

और जो जिहाद स्वयं नहीं कर सकते हैं उनके लिये उपलब्ध सबसे महत्वपूर्ण पद्धतियों में एक यह है कि वे दूसरों को जिहाद करने के लिये प्रेरित करें, क्योंकि अल्लाह महान ने कहा है:

तो अल्लाह की राह में जंग करो; तुम पर ये भार डाला जा रहा है, और मोमिनों को जिहाद करने के लिये प्रेरित करो।[26]

हे रसूल! मोमिनो को जंग के लिये प्रेरित करो![27]

[26] अन-निसा;84

[27] अन-अनफाल;65

तो जो जिहाद करने में समर्थ हैं उन पर जिहाद करना कर्तव्य है, पर जो जिहाद करने में असमर्थ हैं वो एवं सभी मुसलमान अपने भाइयों को काफिरों से जंग करने के लिये प्रेरित करें। हम ऐसे समय में हैं जब हमें इन आयतों का सीधा प्रयोग करने की आवश्यकता है और हम ऐसा करेंगे तो सीधा पुरस्कार मिलेगा, क्योंकि अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा है: "जो जिहाद करने जैसे नेक काम को करने में सुविधा प्रदान करता है, वह वैसा ही होता है जैसे कि वो जिन्होंने जिहाद किया।"

17. मुसलमानों और मुजाहिद्दीनों को परामर्श दो

...और ऐसे असंख्य उपाय हैं जिनके माध्यम से यह किया जा सकता है। इसमें मुसलमानों को काफिरों की योजनाओं व रणनीति से अवगत कराना और आगाह करना सम्मिलित है। जैसा कि अल्लाह की वाणी में उल्लिखित है:

"और एक आदमी शहर के एक छोर से भागता आया। वह बोला: "हे मूसा! वस्तुतः मुखिया लोग आपस में परामर्श कर रहे हैं तुम्हारे विषय में कि तुम्हारा वध कर दें, अतः यहां से तू निकल जा। वास्तव में मैं तेरे उनमें से हूं, जो तुझे सही सुझाव देते हैं।""[28]

तो इस आयत में मोमिन को काफिरों द्वारा बनायी जा रही योजनाओं को लेकर आगाह किया जा रहा है और शत्रु से छिपाने में सहायता करने के लिये उस मुजाहिद्दीन को परामर्श है तथा यदि तुम्हें ऐसा करने की आवश्यकता पड़े, तो इसमें यथासंभव व यथासामर्थ्य सहायता करनी चाहिए। इस पद्धति में यह भी सम्मिलित है कि मुसलमानों को वो सारी सूचना व जानकारी उपलब्ध करायी जाए जिससे कि वे अपने शत्रु से लड़ सके और साथ ही मुसलमानों के राज को गुप्त रख सकें।

इस्लाम छोड़ने वालों के विरुद्ध जिहाद के संबंध में शेख उल-इस्लाम इब्न तैमिय्याह द्वारा कहा गया है: "...और प्रत्येक मुसलमान के लिये अनिवार्य कर्तव्य है कि वह जितना भी कर सकता है उतना जिहाद करे और किसी भी मुसलमान को यह अनुमति नहीं है कि वह काफिरों के बारे में जो भी सूचनाएं व गुप्त बातें जानता है वह मुसलमानों से छिपाये। अपितु उसके पास काफिरों के बारे में जो भी सूचना है उसे मुसलमानों के बीच फैलाये और कहे जिससे कि मुसलमान काफिरों की स्थिति की वास्तविकता को जान लें। और किसी मुसलमान को यह अनुमति नहीं है कि वह काफिर को उस फौज या दल में रहने में सहायता करे जिसका उपयोग जंग लड़ने में किया जाना है, न ही इसकी अनुमति है कि मुसलमान काफिरों पर वो सब थोपने में पीछे रहे जो अल्लाह और उसके रसूल (उन पर शांति हो) ने काफिरों पर थोपने का आदेश दिया है तथा न ही मुसलमानों को इसकी अनुमति है कि वो काफिरों पर अल्लाह व उसके रसूल की बातों को थोपने से रोकें, क्योंकि ऐसा करने के लिये दीन की भलाई के लिये अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने का आदेश देने वाले और दीन का बुरा होने से रोकने वाले वाले सबसे ताकतवर अल्लाह महान की ओर से कहा गया। अल्लाह महान ने अपने रसूल (उन पर शांति हो) से ऐसा कहा है:

---

[28] अल-क़सस; 20

''हे रसूल! तुम काफिरों और मुनाफ़िक़ों के विरुद्ध जिहाद करो और उन पर कठोरता करो...''[29]

... और ये (इस्लाम छोड़ने वाले) काफिर होने और ढोंगी होने से बाहर नहीं किये गये हैं।''[30]

18. मुजाहिद्दीन की जिस गुप्त बात से शत्रु को लाभ पहुंच सकता है उसे छिपाओ

तो यह अनिवार्य है कि मुजाहिद्दीनों की गुप्त बातों को छिपाओ, जिससे कि काफिरों और मुनाफिकों में से शत्रु इसका लाभ न उठा सकें। और यह हमारे लिये अनिवार्य है कि मुजाहिद्दीनों के मामलों से निरंतर सरोकार रखें और साथ ही उनका संरक्षण करें, उनकी रक्षा के लिये तत्पर रहें और उन्हें किसी प्रकार के खतरे में डालने से बचें जिससे कि हम 'भाईचारा' शब्द के अर्थ को पूरा कर सकें। हमें अपने पास जिहाद और मुजाहिद्दीनों के प्रति प्यार के दावे के समर्थन के लिये कुछ प्रमाण भी रखने चाहिए।

इल्म के लोगों ने कहा है: ''इन मुजाहिद्दीनों के साथ विश्वासघात करना, इनके विरुद्ध खड़े होना, इनकी छवि बिगाड़ना, इनके विरोध में किसी की सहायता करना, इनके छिपने के आवरण को हटाना, इनके चित्रों बांटना (अॅथारिटीज के कहने पर), इनकी जासूसी करना आदि पूर्णत: हराम है। और जो कोई भी ऐसा करता है वह वास्तव में उन अमरीकियों की सहायता कर रहा है जो मुजाहिद्दीनों को गिरफ्तार करने के लिये पूरा बल लगा रहा है और अमरीकियों की सहायता करने का अर्थ है कि अमरीकियों को लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता करना, क्योंकि इस सहायता के बिना वे लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते। अत: मुस्लिम भाइयों, आगाह रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम मुजाहिद्दीनों के विरुद्ध लड़ने वालों की सहायता कर बैठो। और जिस किसी ने भी किसी भी रूप में ऐसा किया है उसने सीमा लांघी है और सताया है और पाप और अवज्ञा का सहयोग किया है। अल्लाह महान ने कहा है:

''... और गुनाह और अतिक्रमण करने में सहायता न करो।''[31]

और रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा है: *''तुम्हारा भाई चाहे अत्याचारी हो या सताया हुआ, उसकी सहायता करो।''*

और सही बुखारी में यह दिया गया है कि हम्माम बिन अल-हारिस (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: ''एक आदमी लोगों की बात शासक तक पहुंचाता था। एक दिन हम मस्जिद में बैठे थे तो लोगों ने कहा: ''यह व्यक्ति उनमें से है जो लोगों की बात शासक तक पहुंचाता है।'' वह व्यक्ति आया और हमारे पास बैठा तो हुजैफा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हों) बोले: **''मैंने रसूल (उन पर शांति हो) को कहते हुए सुना: ''जो दूसरों की बात को फैलाता है वह जन्नत नहीं जाएगा।''''**

---

[29] अत-तहरिम; 9

[30] मज्मू अल-फतवा; 35/159

[31] अल-माइदा;2

19. उनके लिये दुआ करो

और मुजाहिद्दीनों की सेवा, सहायता और सहयोग करने के उपायों में से एक यह भी है तुम एकांत में उनके लिये दुआ करो कि अल्लाह उन्हें उनके दुश्मनों पर फतह दे और यह भी दुआ करो कि मुजाहिद्दीन का पांव जमा रहे और वह अपने दुश्मन को मिटा दे। साथ ही यह भी दुआ करो अल्लाह मुजाहिद्दीनों में से जो बंदी बना लिये गये हैं उन्हें छुड़ा दे, उनका स्वास्थ्य अच्छा रहे, उनके घाव भर जाएं, मुजाहिद्दीनों में जो शहीद हो जाएं अल्लाह उन्हें स्वीकार करे और उन्हें क्षमा कर दे। अल्लाह से दुआ करो कि मुजाहिद्दीनों के नेताओं का संरक्षण व सुरक्षा हो, उनके बेटों की सुरक्षा और पालन-पोषण के लिये दुआ करो और उनके लिये दीन की बातों पर निरंतर एकत्र होते रहो।

और दुआ करने वाले व्यक्ति को दुआ के लिये ऐसा सही समय चुनने दो जब कि उसकी दुआ स्वीकार हो। यहां हम मुजाहिद्दीन के लिये दुआ के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख करेंगे:

- यह कि तुम उनके लिये विनम्र हृदय से दुआ करो, और यह कि तुम केवल अपनी जुबान हिलाकर दुआ न करो, बल्कि सच्चे मन से करो, क्योंकि अल्लाह उस बंदे की दुआ स्वीकार नहीं करता है जो उसका ध्यान किये बिना दुआ मांगते हैं;
- यह कि तुम दुआ के प्रभाव का समय देखकर दुआ मांगों और लोगों को इसके बारे में ध्यान दिलाओ। इसका कुछ उपाय यह है कि लोगों को मुजाहिद्दीनों के लिये दुआ करने के लिये टेक्स्ट मैसेज भेजे या उनके घर जाकर दुआ करने का स्मरण कराओ;
- यह कि वह व्यक्ति जिसके लिये उचित समझता है दुआ करता है और यह कि वह वर्तमान घटनाओं के अनुसार दुआ करता है तो वह एक ही दुआ बार-बार नहीं करता है और दुआ का प्रभाव न देखकर थक जाता है। और यहां हमें इस पर बल देना चाहिए कि वह दुआ तभी की जाए तब व्यक्ति उसके पूरा होने को लेकर निश्चिंत हो और वह अधीर होकर यह न कहे: "मैंने दुआ मांगी पर कोई असर नहीं हुआ।"

20. विपदा की दुआ (कुनूत अन-नवाज़िल)

और इस विषय के महत्व को देखते हुए, इसके रसूल (उन पर शांति हो) की सुन्नत में से एक सुन्नत होने को देखते हुए और उनको देखते हुए जो इस सुन्नत का अस्तित्व मिटा देना चाहते हैं, मैं कुनूत के विषय को ही प्रस्तुत कर रहा हूं। इस विषय का सीधा संबंध मुजाहिद्दीनों के लिये उपरोक्त दुआ से है।

और इन दिनों कुछ लोग दो ढंग में किसी न किसी एक रूप में इस सुन्नत का महत्व कम करके बताने का प्रयास करते हैं:

पहला: यह कि वे कहते हैं कि इस विषय को शासक की अनुमति की आवश्यकता होती है। और इसके साथ ही यदि कुनूत की दुआ पढ़ने में कोई राजनीतिक हित न हो तो यह दुआ पढ़ने का प्रकरण संदेहास्पद हो जाता है। उदाहरण के लिये जहां रूसी शत्रुओं के विरुद्ध दुआ मांगी जाती है, पर यह दुआ अमरीकियों के विरुद्ध नहीं मांगी जाती है!

और आज का यह शासक है कौन कि हम उसकी अनुमति की आशा करें और उसके लिये प्रतीक्षा करें? वही न जिसने काफिरों को सहायता और सहयोग पहुंचाा है? या वो जिसने उस समय चुनाव में जीतने पर रूसी राष्ट्रपति को विजय की बधाई दी, जब वह रूसी राष्ट्रपति चेचन्या के ग्रोजनी में मुसलमानों का बर्बर नरसंहार कर रहा था?

शेख हमुद बिन उक़ला (अल्लाह उन पर दया करें) ने कहा: ''आज हम शासकों की इच्छाओं और उनके झुकाव में अंतर जानते हैं। अत: कुनूत अन-नवाजिल को उनसे जोड़ने से मुसलमानों के मामलों को राजनीति व शासकों के हित के आगे समर्पण करना होगा। और तुम आज की वास्तविकता में बहुत से शासकों के विश्वासघात और विपदा की स्थिति में मुसलमानों की सहायता में विफल होने को देखते हो। बल्कि ये शासक उन्हीं से लड़ते हैं जो जिहाद और मुजाहिद्दीनों के मामले में सहायता करते हैं! तो हम इन लोगों से कैसे अपेक्षा कर सकते हैं कि जब तक इन लोगों का हित और इच्छा नहीं होगी, ये लोग कुनूत की अनुमति देंगे?''

यह भी उल्लेख किया जाना चाहिए कि इस स्थिति (शासक की अनुमति) पर विचार ही नहीं होना चाहिए, क्योंकि इसका कोई साक्ष्य नहीं है, जैसा कि शेख हमूद बिन उक़ला के फतवा में उल्लेख किया गया है।

दूसरा: यह कि यदि हम प्रत्येक विपदा के लिये कुनूत की दुआ पढ़ेंगे, तो हम तब नहीं रुकेंगे जब तक कि अगली विपदा न आ पड़े और कुनूत पढ़ने का यह क्रम ऐसे ही बेरोकटोक चलता रहेगा! तो इन लोगों को इस तथ्य से उत्तर दिया जाना चाहिए कि प्रत्येक विपदा के लिये कुनूत की दुआ पढ़ना हमारे लिये विधिसम्मत (जायज) बनाया गया है, चाहे विपदाएं आती रहें या रुक जाएं, क्योंकि यह हमारे रसूल (उन पर शांति हो) की एक सुन्नत है।

शैख उल-इस्लाम इब्न तैमिय्याह कहते हैं: ''...और कुनूत आवश्यकता की सुन्नत में से है- न कि नियमित प्रवृत्ति- क्योंकि यह स्थापित है कि उन्होंने (उन पर शांति हो) कुनूत की दुआ पढ़नी तब बंद कर दी थी जब इसकी आवश्यकता नहीं बची थी और फिर से कुनूत पढ़ने लगे जब आवश्यकता पड़ी।''[32]

और यहां हम तुम्हारे समक्ष कुनूत अन-नवाज़िल से संबंधित शेख हमूद के लेख का एक भाग प्रस्तुत कर रहा हूं:

''...और इब्न अल-कैय्यिम द्वारा इबादत पर अपनी पुस्तक में लिखा गया गया है कि अबू सऊर ने अबू अबदिल्लाह अहमद बिन हमबाल से पूछा: ''फज्र की नमाज में कुनूत पढ़ने को लेकर आप क्या कहते हैं?'' तो अबू अब्दिल्लाह ने कहा:

---

[32] माज़्मू अल-फतवा; 22/368

''वस्तुत: कुनूत केवल विपदा के समय पढ़ा जाना चाहिए।'' तो अबू सऊर ने उनसे कहा: ''जिस विपदा में हम हैं उससे बड़ी कौन सी विपदा होगी?'' तब अहमब बिन हमबाल ने उनसे कहा: ''यदि ऐसा है तो कुनूत की दुआ पढ़िये।''

और आज हम कहते हैं: आज मुसलमानों पर कितनी अधिक विपदाएं हैं? तो कुनूत के विषय पर रोकटोक कैसे हो सकता है, जबकि अल्लाह कहता है कि सभी मोमिन एक-दूसरे के सहयोगी हैं? ये सब, भली प्रकार से जानते हुए कि कुनूत का बड़ा उद्देश्य होता है, जो उनके लिये इबादत करने अथवा खुतबा पढ़ते समय झुकने आदि से कहीं भिन्न होता है, क्योंकि कुनूत का उद्देश्य मुसलमानों के मामलों से जुड़े सरोकारों में सहयोग व संरक्षण देना होता है और इसके साथ मुजाहिद्दीन मजबूत होता है तथा यह देखा भी जा सकता है और इसका अनुभव भी किया जा सकता है। हमने बहुत से मुजाहिद्दीनों को कहते सुना है कि यदि उनके लिये कुनूत की दुआ सार्वजनिक रूप से पढ़ी जाती है तो वे अपने मुस्लिम भाइयों द्वारा उनके लिये की गयी दुआ से प्रसन्न होते हैं, बल्कि हमसे निरंतर ऐसा ही करने का निवेदन करते हैं। इब्न हाजर कहते हैं: ''और यह मेरे सामने प्रत्यक्ष है कि झुककर इबादत करने की तुलना में सीधे खड़े होकर कुनूत अन-नवाज़िल पढ़ने में बुद्धिमानी यह है कि अनुयायी ईमाम के साथ दुआ में सम्मिलित हो और तामीन (कह रहे हों आमीन)। इसके कारण इस पर सहमति है कि यह खुले में किया जाना चाहिए।''[33] और वह कुनूत दुश्मन पर एक प्रकार की जीत होती है और यह प्रामाणिक रूप से अली बिन अबी तालिब के हवाले से बतायी गयी है कि जब जंग के समय उन्होंने कुनूत पढ़ी तो वो कहते: ''वस्तुत:, हमें अपने दुश्मन के विरुद्ध सहायता मिली।''

अपितु, इल्म के लोगों में वो हैं जिन्होंने कुनूत अन-नवाज़िल की अनिवार्यता के विषय में बोला है और कहा कि यह इमामों का काम है, क्योंकि इब्न अब्दिल-बार ने 'अल-इस्तिजकार' [6/202] याहया बिन सईद के हवाले से बताया है कि वह कहा करते थे: ''यदि फौजें शत्रु की भूमि पर संघर्ष कर रही हों तो दुआ (अर्थात कुनूत) मांगना अनिवार्य कर्तव्य है और यह काम करवाने का उत्तरदायित्व इमामों का है।''''

21. जिहाद के समाचार को देखते रहो और फैलाओ

और इसमें संदेह नहीं है कि यदि जिहाद से प्यार और सरोकार एवं इस भाव से कि जब मुजाहिद्दीन प्रसन्न हैं तो मैं प्रसन्न हूं और यदि मुजाहिद्दीन दुखी हैं तो मैं दुखी हूं, मुजाहिद्दीनों के समाचारों को देखा जाता है तो अल्लाह का पुरस्कार मिलता है। जो यदि मुजाहिद्दीनों का समाचार अच्छा हो, तो उनके साथ हों और यदि मुजाहिद्दीनों का समाचार बुरा हो, तो यह सोचें कि अल्लाह की कृपा से अच्छा हुआ कि वे उस बुरी घटना को प्रत्यक्ष देखने के लिये उपस्थिति नहीं थे, उनके बारे में शेख अबू उमर आस-सैफ (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: ''और वस्तुत: जिहाद में भाग लेने और सहायता करने से बचना एवं विभिन्न मीडिया माध्यमों (श्रवण, दृश्य अथवा लिखित) से दूर से मुजाहिद्दीनों का समाचार सुनभर लेना पर्याप्त मानना ढोंगियों का लक्षण है और ऐसे लोगों के लिये अल्लाह महान कहता है:

---

[33] फतह अल-बारी; कुनूत पर अध्याय

"वे समझते हैं कि जत्थे फिर वापस आ गये तो वे (ढोंगी) चाहेंगे कि घुमंतुओं के बीच रेगिस्तान में हों तथा दूर बैठकर तुम्हारे बारे में समाचार पूछते रहें और यदि वे तुम्हारे बीच होते भी तो वे जंग में कम ही भाग लेते।"[34]

...अर्थात: काफिरों का जो जत्था मदीना में मुसलमानों को लक्ष्य बना रहा था, उनका सामना करने के स्थान पर ढोंगियों की इच्छा है कि वे जंग के स्थान से बहुत दूर होते और कहीं यायावरों के बीच बैठे होते जहां दूर से ही वे मुजाहिदीनों व जंग का समाचार जान लेते। तो ऐसे उम्मा के लिये इस मजहबी जंग के तैयार होने का विकल्प नहीं होगा, जब तक कि वे सच्चे मन से दीन की ओर लौट न आएं और उस काम को करें जो अल्लाह ने अपने मोमिन बंदों से करने को कहा है। अल्लाह दयावान व महान ने कहा है:

"निस्संदेह अल्लाह ने जन्नत के बदले में मोमिनों से उनका प्राण व उनकी संपत्ति खरीद ली है। वे अल्लाह के मार्ग में जंग करते हैं, वे मारते और मरते हैं। ये अल्लाह पर सत्य वचन है, तौरात, इंजील और कुरआन में और अल्लाह से बढ़कर अपना वचन पूरा करने वाला कौन हो सकता है? अत:, अपने इस सौदे पर प्रसन्न हो जाओ, जो तुमने किया और यही सबसे बड़ी सफलता है।"[35]

इसलिये मुसमलानों के बीच मुजाहिदीनों के समाचार व संदेश का प्रसार करना आवश्यक है, क्योंकि इसमें जो लाभ छिपा हुआ है वह निम्नलिखित है:

- उम्मा के बीच यह भावना भरना कि हम एक शरीर हैं, और यह कि यदि इसके किसी अंग में पीड़ा होगी तो इसके दूसरे अंगों को उसका आभास होगा और वह सहायता करेगा।
- जहां शत्रु ने बड़ी मीडिया माध्यमों पर नियंत्रण कर लिया है और केवल वही प्रसारित करते हैं जो वे चाहते हैं, तो उम्मा पर डाले गये इस समाचार अवरोध को तोड़ने के लिये। इसलिये मुजाहिद्दीन के समाचार का प्रसारण उनके लिये धरातल पर मीडिया आधार प्रदान करता है।
- इसलिये कि उम्मा को जगाया जा सके और जिहाद व शहादत के माध्यम से वैभव व सम्मान के पथ का भान कराया जा सके।

22. उनकी पुस्तकों व प्रकाशनों के प्रसार में भाग लो

... और मुसलमानों के बीच उनके समाचार के प्रसार व वितरण के पूर्व की पद्धति से संबंधित है। इसलिये तुम्हारे लिये यह आवश्यक है कि जिहाद से संबंधित प्रत्येक बात को फैलाओ और उस प्रत्येक बात को फैलाओ जो जिहाद कर रहे लोगों की सहायता का आह्वान करे एवं प्रेरित करे। ऐसा करने में विभिन्न उपायों का उपयोग करो। उदाहरण के लिये, कुर्बानी व बहादुरी से जुड़े प्रेरक विवरण को जुटाना, उनकी जीरॉक्स कॉपी कराना, लोगों में बांटना, इंटरनेट पर फैलाना और गुआनटानमो के बंदियों के

---

[34] अल-अहजाब;20

[35] अत-तौबा;111

पत्रों को जुटाना और उन पत्रों से सबसे अच्छे पत्रों को लोगों में बांटना जिससे कि मुसलमानों के मन में उनके प्रति सहानुभूति उपजे। इसी प्रकार प्रत्येक मुसलमान को मुजाहिद्दीना और उनके मामलों के संबंध में कोई न कोई मीडिया प्रोजेक्ट तैयार करने का प्रयास करना चाहिए। यहां मैं एक ऐसी उत्तम बहन की स्थिति का उल्लेख करूंगा जिसने चेचन्या में मुजाहिद्दीनों का अद्यतन समाचार जुटाने के लिये स्वयं ही बीड़ा उठाया। उसने शमिल बसायेव व खत्तब के अद्यतन साक्षात्कार को जुटाया और उसने कुछ कविताएं, कहानियां व कथन जुटाए तथा फिर इन सबको संकलित करके एक पुस्तक का आकार दिया और लोगों में बांटा।

और यदि तुम स्वयं कुछ विमोचन कर पाने में असमर्थ हो, तो तुम्हारा दायित्व है कि जिहाद व मुजाहिद्दीन की सेवा के लिये मुजाहिद्दीन से जुड़ा कुछ भी, कोई प्रकाशन, पुस्तक आदि का प्रसार करो।

23. ऐसे फतवे निकालो जिससे उनकी सहायता हो

और इस्लामी विद्वानों का यह कर्तव्य और दायित्व है कि वे ऐसे फतवे निकालें जो मुजाहिद्दीनों के लिये सहायक हों। चूंकि यह उन्हीं की भूमिका है कि वे उम्मा को मुजाहिद्दीन के साथ खड़े होने और तन, मन और धन से उनकी सहायता का मार्ग दिखायें। और यह इल्म प्राप्त कर रहे स्टूडेंटों व उपदेशकों का भी कर्तव्य है कि वे उम्मा को इस ताकतवर कर्तव्य को पूरा करने का मार्ग दिखायें। इसी प्रकार जो इल्म के लोगों के निकट हैं, चाहे वे उनके स्टूडेंट हों अथवा रिश्तेदार, उनका भी अनिवार्य कर्तव्य है कि वे उनको प्रेरित करें और उनके संकल्प को सुदृढ़ करें कि वे ऐसा बोलें जो मुजाहिद्दीन भाइयों की सहायता का पथ प्रशस्त करे। जब कोई विद्वान ऐसा करता है तो वह इसका तत्पर व अचंभित करने वाला प्रभाव देखता है। जैसा कि हमारे समय के मुजाहिद्दी के शैख हामूद बिन उक़्ला (अल्लाह उन पर दया करें) के प्रकरण में था। यदि तुम लोग इस बारे में मजबूत और पक्का दृष्टिकोण रखोगे तो मुसलमानों व मुजाहिद्दीनों पर एक भी विपदा नहीं आयेगी और ये सब करते समय तुम किसी से भी नहीं डरोगे। जैसा कि हामूद बिन उक़्ला का एक संस्मरण तुम्हें पता होगा कि एक दिन वे खेत में पड़ी एक जंग लगी छड़ी के पास से निकले और बोले: ''यदि मुजाहिद्दीनों को इस जंग लगी छड़ी से भी कोई लाभ हो सकता है तो मैं इसे उनके पास भेजूंगा।''

अल्लाह उन पर अपनी दया बरसाये, शैख इस्लाम और मुसलमानों के लिये आत्मा को झंकझोड़ने वाले फतवा दिया करते थे। शैख की आत्मवृत्त में ऐसा उल्लेख किया गया है:

> ''शैख (अल्लाह उन पर दया करे) मुसलमानों के अतीत और उनके वर्तमान व भविष्य पर चिंतन करते हुए जीते थे। वो समाचारों को देखा करते करते थे और घंटों समाचार ढूंढ़ते के लिये बैठे रहते थे। ऐसा करने का उनका संकल्प इतना तगड़ा था कि वह स्वयं ही रेडियो चलाया करते थे और ढूंढ़ते रहते थे कि कौन सा रेडियो स्टेशन मुजाहिद्दीनों के समाचारों का प्रसारण कर रहा है। (चूंकि शैख अंधे थे तो उन्हें रेडियो पर फ्रीक्वेंसी की संख्या देखे बिना इतना प्रयास करना पड़ता था)। वास्तव में वह प्राय: अपने पास बैठे व्यक्ति से रेडियो छीन लिया करते थे, क्योंकि वह व्यक्ति समाचार स्टेशन ढूंढ़कर लगा नहीं पाता था। शैख विशेष समाचार प्रसारक के महत्व को जान लेते थे, क्योंकि वे इतने अभ्यस्त हो गये थे कि यह जान लेते थे कि कौन सा उद्घोषक किस प्रकार का समाचार पढ़ेगा। इंटरनेट पर चल रहे समाचारों को उनके समक्ष

बोलकर नित्य पढ़ा जाता था। वह प्रतिदिन एक-दो घंटे बैठते और उन्हें इंटरनेट पर चल रहे समाचार को पढ़कर सुनाया जाता तथा वो तनिक भी नीरस या व्याकुल नहीं होते थे।

तो उनके सरोकारों को देखकर तुम भी मुसलमानों की उस प्रत्येक स्थिति को जान जाते, जो उनको पता थीं और वो सभी अद्यतन समाचार जान जाते, जो उन्हें मिलती थीं। इस प्रकार वह व्यक्ति जो शैख के पास जाता और अद्यतन घटनाओं के बारे में उनसे पूछता तो वे उसे न केवल उन घटनाओं से अवगत कराते, अपितु उन पर अपना विश्लेषण व निष्कर्ष भी बताते।

और समकालीन घटनाओं की ऐसी जागरूकता के साथ ही साथ शैख (अल्लाह उन पर दया करे) इतिहास, अतीत की घटनाओं, जंगों, राजनीति और राजनीति के जीवित या मृत सभी प्रकार के बड़े नामों एवं उनके इतिहास व दृष्टिकोण से भली-भांति परिचित होते थे। इसलिये वे घटनाओं और व्यक्तित्वों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ में जोड़ने में समर्थ थे। इस कारण मुसलमानों के पास शैख (अल्लाह उन पर दया करे) के रूप में बड़ी थाती थी कि क्योंकि उनके पास दीन का अपार ज्ञान और समकालीन घटनाओं की गहरी समझ थी।

और मुसलमानों के प्रकरणों से उनका सरोकार उनकी मृत्यु के कुछ मिनट पूर्व तक बना रहा। चूंकि वे अफगानिस्तान, तालिबान सरकार, मुजाहिद्दीनों के अद्यतन समाचार और शा-अल्लाह के बारे में निरंतर बताया करते थे, तो उनका अंत भी अच्छा हुआ।

और कुछ विद्वान और इल्म के स्टूडेंट बंद थे तो कोई ऐसा क्षण नहीं रहा होगा जब वे उनके बारे में पूछते न रहते हों और वो उनके लिये निरंतर दुआ मांगते थे कि वे इस्लाम पर अडिग रहें और धीरज रखें, अत: अल्लाह उन्हें सर्वोत्तम पुरस्कार दे।

24. विद्वानों, उपदेशकों से जुड़े रहो और उन्हें मुजाहिद्दीनों की स्थितियों से सूचित करते रहो

और ऐसा इसलिये कि शत्रु रेगिस्तान में मुंडी धकेलकर और सामान्य मुसलमान जनसंख्या को तुच्छ प्रकरणों में उलझाकर मुसलमानों को दबाने और उनकी भावनात्मक एकता को नष्ट करने के लिये कृतसंकल्प है, तो यदि मुस्लिम विद्वान जागृत हैं तो वे बदले में मुसलमानों को जगायेंगे और यदि सुषुप्तावस्था में हैं तो मुसलमान भी सुषुप्तावस्था में पड़े रहेंगे। सामान्य जनसंख्या सामान्यत: विद्वानों के साथ रहती है और विशेषकर दीन के मामलों में तो वह विद्वानों के साथ ही होती है तथा दीन के मामलों में सबसे ऊपर जिहाद और मुजाहिद्दीनों की सहायता होती है। अतीत में जब धर्मयोद्धाओं व तातारों द्वारा हमला किया गया तो मुसलमान जम नहीं रह सके, बस विद्वान और कुछ लोग ही जिहाद का झंडा लेकर एकत्र हुए और आगे बढ़े।

इसलिये वह शैख उल-इस्लाम इब्न तैमिय्याह ही हैं जो अपने प्रसिद्ध कथन :''अल्लाह की कसम, तुम विजयी होगे!'' बोलकर मुसलमानों को जंग करने, तातारों के सामने मुसलमान फौज के पक्ष में खड़े रहने और उम्मा को अडिग रहने को प्रेरित करते रहे। तो उन्होंने उनसे कहा:''बोलो'' इंशा अल्लाह!'' उन्होंने उत्तर दिया: ''मैं दृढ़-निश्चय के साथ इंशा अल्लाह कह रहा हूं, न कि

अनिश्चितता भरी इच्छा वाली टिप्पणी कर रहा हूं।" इसी प्रकार इब्न कुज़ामा उनकी जंगों आदि के समय सलाह उद्दीन अल-अयूबी के साथ डटे रहे...।

तो इस कारण यह अनिवार्य है कि विद्वानों से निकट से जुड़कर रहा जाए और उन्हें मुजाहिद्दीनों की स्थिति से सूचित करते रहा जाए, जिससे कि वे जिहाद के साथ डटे रहें और दूसरों को जिहाद के लिये प्रेरित करें। इस प्रकार जैसे दुष्प्रचार और दुष्प्रचार करने वाले लोग जिहाद के संबंध में संदेह प्रकट कर भ्रम उत्पन्न कर सकते हैं और जिहाद से जुड़े लोगों को जिहाद के विरुद्ध भड़का सकते हैं, वैसे ही हमें भी ऐसे लोगों की मंशा को विफल कर मुसलमानों के पास रहना चाहिए और उन्हें मुजाहिद्दीनों व मुजाहिद्दीनों के अधिकारों के संबंध में अनिवार्य रूप से स्मरण कराते रहना चाहिए। हो सकता है कि अल्लाह शैख अब्दुल्ला आजम और हामूद बिन उक़ला जैसे महान लोगों को फिर से लाये, अल्लाह इन दोनों पर दया करें।

और सच्चा विद्वान वह होता है तो मुजाहिद्दीनों के साथ पूरे मनोयोग से खड़ा रहे तथा इसके बदले व सच बोलने के बदले मिलने वाली पीड़ा को सहन करे, भले ही यह पीड़ा बंदी बना लिये जाने अथवा मृत्यु के रूप में हो। शैख युसुफ अल-उयैयरी की हत्या की घटना हमसे बहुत दूर नहीं हुई है।

25. शारीरिक रूप से बलिष्ठ बनो

जो कोई भी जिहाद में भाग लेने की मंशा या इच्छा रखता है उसके पास शारीरिक रूप से स्वस्थ होने के अतिरिक्त विकल्प नहीं होता है। जब हम अल्लाह के मार्ग में जिहाद लड़ने निकलेंगे, तो शारीरिक बल ही हमारा साथ देगा। चूंकि मुजाहिद के लिये यह आवश्यकता है, तो उसे पैदल चलने, लंबी दूरी तक दौड़ने, सुबह-शाम घूमने, व्यायाम करने का निरंतर अभ्यास करना चाहिए जिससे कि उसकी शारीरिक स्थिति ठीक रहे और जब भी जिहाद की पुकार हो वह निकल पड़े...। इससे वह अपने मुजाहिद्दीन भाइयों पर बोझ व भार नहीं बनेगा कि उन्हें उसे भी ढोना पड़े। वास्तव में बोस्निया (एवं कुछ अन्य स्थानों पर) में ऐसा हो चुका है कि कुछ मुजाहिद्दीन भाई इस कारण बंदी बना लिये गये, क्योंकि वे शारीरिक रूप से फिट नहीं थे।

शैख युसुफ अल-उयैयरी (अल्लाह उन पर दया करें) ने कहा है:

"वास्तव में मुजाहिद की शारीरिक फिटनेस, लंबी दूरी तक दौड़ने का उसका सामर्थ्य, भारी बोझ उठाने की क्षमता एवं भारी शारीरिक श्रम लंबे समय तक किया जाना वह प्राथमिक तथ्य है, जिससे जंग के मैदान में उसकी उपयोगिता निर्धारित होती है। कोई मुजाहिद हथियारों के प्रयोग में दक्ष हो सकता है, किंतु शारीरिक फिटनेस के अभाव में वह अपने हथियार को फायर करने के लिये उचित स्थान पर रख पाने अथवा गोली चलाने के लिये अच्छी पोजीशन ढूंढ़ने के लिये दीवार पर चढ़ पाने आदि में असमर्थ होता है। शारीरिक फिटनेस के अभाव में ये समस्याएं आ सकती हैं। जो मुजाहिद उच्च स्तर की शारीरिक फिटनेस बनाये रखता है वह भले ही हथियार चलाने में उतना दक्ष न हो, पर सर्वश्रेष्ठ संभव ढंग से जंग में मैदान में आवश्यक कार्यों को कर लेता है। चूंकि वह गोली चलाने के लिये स्वयं चतुराई से स्थान बदलने एवं यथासंभव अच्छी पोजीशन में रख पाने में सक्षम होता है और वह ये

सब इतनी तत्परता और यथासंभव हल्के ढंग से करने में समर्थ होता है। शारीरिक फिटनेस होने पर थकान या बोझिलता उस पर अथवा उसकी सोच अथवा उसकी गति पर प्रभाव नहीं डाल पाते हैं।

इसको देखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि एक मुजाहिद के लिये शारीरिक फिटनेस आवश्यक गुण है और यह तब और लाभकारी हो जाता है जब आप गली-मुहल्ले में जिहाद करते हुए लड़ रहे हों।''

आज हम जिस समय में रह रहे हैं, वहां हम देखते हैं कि विश्व में सभी जिहादी गुरिल्ला युद्ध व स्ट्रीट फाइटिंग कर रहे हैं। इसके लिये उच्च स्तर की शारीरिक फिटनेस की आवश्यकता होती है तो मेरे भाई दूसरों पर बोझ मत बनो, स्वयं सक्षम बनो और अभी से शारीरिक फिटनेस का आवश्यक स्तर बनाना प्रारंभ कर दो।

मेरे भाई, शारीरिक फिटनेस के विषय को छोटा मत समझो और जान लो कि यदि गंभीर मंशा से इस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाए तो इसका बड़ा लाभ होता है। तुम अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने के लिये स्वयं को तैयार करने के लिये इसी मंशा से आगे बढ़ो। अल्लाह को दुर्बल मोमिन की अपेक्षा बलिष्ठ मुस्लिम अधिक प्यारा होता है और यह बल शारीरिक और ऊर्जा तन में होनी चाहिए। शैख, मुजाहिद युसुफ अल-उयैयरी कहते है: ''एक मुजाहिद को जिस स्तर के शारीरिक फिटनेस की आवश्यकता होती है, वह निम्नलिखित कार्यों से उसके भीतर आती है:

- बिना रुके दस किलोमीटर (लगभग 6.2 मील) तक हल्की दौड़ लगाओ और इसमें बुरी से बुरी स्थिति में भी 70 मिनट से अधिक समय नहीं लगना चाहिए
- लगभग 13.5 मिनट में 3 किलोमीटर (मोटामोटी 2 मील) तक तेज चाल से दौड़ लगाओ
- 12-15 सेकंड का विश्राम लेकर 100 मीटर की दूरी तक तेजी से दौड़ो
- कम से कम दस घंटे तक बिना रुके लंबी दूरी तक टहलो
- कम से कम चार घंटे सीधे 20 किलोग्राम (लगभग 44 पौंड) का भार लेकर चलो
- बिना रुके एक बार में कम से कम 70 पुशअप करो (एक बार में 10 पुशअप से प्रारंभ करो और फिर 3-3 पुशअप प्रतिदिन बढ़ाते जाओ, जब तक कि 70 पुशअप तक न पहुंच जाओ)
- बिना रुके एक बार में 100 उठक-बैठक (शिट-अप) करो (एक बार में 10 उठक-बैठक से प्रारंभ करो और फिर 3-3 की संख्या प्रतिदिन बढ़ाते जाओ, जब तक कि एक बार में 100 उठक-बैठक करने की स्थिति में न पहुंच जाओ)
- हाथ की कोहनियों के बल 50 मीटर चलो और इसमें 70 सेकंड से अधिक समय न लगे
- फार्टलिक दौड़ लगाओ। (फार्टलिक दौड़ वह व्यायाम होता है जिसमें टहलना, तेज चाल से चलना, हल्की चाल से दौड़ना अर्थात जॉगिंग करना और तेजी से दौड़ना सम्मिलित होता है। यह इस प्रकार प्रारंभ होता है: मुजाहिद 2 मिनट के लिये सामान्यत: टहलना प्रारंभ करता है, फिर 2 मिनट तक तेज चाल से चलता है, फिर 2 मिनट तक हल्की चाल से दौड़ता अर्थात जॉगिंग करता है, फिर 2 मिनट तक दौड़ता है और फिर 100 मीटर की दूरी तक तेजी से दौड़ता है, फिर वह टहलता है और इस प्रकार यह पूरी प्रक्रिया बिना रुके 10 बार दोहराता है)

सामान्य टहलने और तेजी से टहलने में अंतर होता है। तेजी से टहलने और जॉगिंग में अंतर होता है। जॉगिंग व दौड़ने में अंतर होता है। सामान्य टहलना सभी जानते हैं, जबकि तेजी से टहलने में व्यक्ति तेज चाल से चलता है और इस प्रक्रिया में यह सुनिश्चित करता है कि सामान्य टहलने में पांव धरातल से जितने समय ऊपर उठ रहे हों उससे बहुत अधिक समय तक पांव न उठें। जॉगिंग करते समय 5.5 मिनट से कम समय में 1 किलोमीटर (मोटामोटी 0.6 मील) की दूरी पार करो। दौड़ते समय 4.5 मिनट से कम समय में 1 किलोमीटर की दूरी पार करो।

यदि ठोस प्रयास किया जाए तो मुजाहिद द्वारा शारीरिक फिटनेस का यह स्तर एक माह में प्राप्त किया जा सकता है, पर शर्त यही है कि वह धीरे-धीरे आगे बढ़े और अपनी मांसपेशियों को क्षति न पहुंचाये या मांसपेशियों को टूटने न दे। उदाहरण के लिये यदि कोई माह के प्रारंभ में 15 मिनट की जॉगिंग से प्रारंभ करता है और इसके समय को प्रतिदिन 2 मिनट बढ़ाता जाता है तो इसका अर्थ हुआ कि एक माह में वह बिना रुके पूरे एक घंटे की जॉगिंग करने में समर्थ होगा (यह स्थिति तब होगी जब हम यह मानें कि सप्ताह में पांच दिन व्यायाम का कार्यक्रम होगा और इस प्रकार माह में उसके व्यायाम करने के दिनों की संख्या 20 होगी)। इसी प्रकार यदि वह माह के प्रारंभ में दस पुशअप के साथ प्रारंभ करता है और प्रतिदिन इसकी संख्या 3 बढ़ा देता है तो इसका अर्थ हुआ कि एक माह में वह बिना रुके एक बार में 70 पुशअप करने में समर्थ होगा। तो धीरे-धीरे और निरंतर आगे बढ़ना किसी के फिटनेस स्तर पर बड़ा प्रभाव डालता है। किसी के शारीरिक कार्यक्रम की अवधि में मांसपेशियों को सुडौल बनाने और सुदृढ़ बनाने वाला प्रशिक्षण भी होना चाहिए। मुजाहिदों को विशेष रूप से उस प्रकार के भार प्रशिक्षण पर ध्यान लगाना चाहिए जो भारी व्यायाम उपकरणों के बिना ही की जा सकें जिससे कि वे किसी भी स्थान पर अपना शारीरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम निरंतर रख सकें। यदि लंबे समय तक व्यायाम उपकरणों से दूर रहा जाए तो इसका दुष्प्रभाव यह होता है कि शरीर निष्क्रिय हो जाता है। व्यायामों का उत्कृष्ट प्रकार वह होता है जो सरलता से किया जा सके और जो शरीर के अपने बल से की जा सके।"

26. हथियारों का प्रशिक्षण लो और गोली मारना सीखो

हथियार चलाने का प्रशिक्षण और गोली मारने का ढंग या तो उनके बारे में पढ़कर सीखा जा सकता है अथवा इनका प्रत्यक्ष अभ्यास करके। वैसे किसी व्यक्ति को वास्तव में हथियारों का प्रशिक्षण और गोली मारना सिखाना हो तो जीवित गोला-बारूद अथवा बिना गोला-बारूद के हथियारों की आवश्यकता होती है, अन्यथा वह व्यक्ति केवल हथियारों और गोला-बारूद का चित्र देखकर मैनुअल ही पढ़ता रहेगा। पर प्रत्येक स्थान की अपनी सीमाएं होती हैं। इस बारे में अल्लाह प्रभुत्वसम्पन्न व महान ने कहा है:

"तथा उनके विरुद्ध जितनी ताकत इकट्ठा कर सकते हो करो, साथ ही अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों को डराने के लिये जंग के घोड़े भी तैयार रखो!"[36]

---

[36] अन-अनफाल;60

और रसूल (उन पर शांति हो) के हवाले से बताया गया है कि उन्होंने कहा: **"वस्तुत: ताकत मार डालने में है! वस्तुत: ताकत मार डालने में है! वस्तुत: ताकत मार डालने में है।"**[37]

इसलिये प्रत्येक परिपक्व व स्थिर-चित्त मुसलमान के इस महान व्यक्तिगत कर्तव्य को छोटा मत समझो।

इब्न तैमिय्याह ने कहा: "जब कोई व्यक्ति जंग लड़ने में असमर्थ हो तो उसका अनिवार्य कर्तव्य है कि वह जिहाद के लिये किसी को ताकत और जंग के घोड़े से तैयार करे, क्योंकि किसी कर्तव्य को पूरा करने के लिये जो आवश्यक है वह अपने आप में एक कर्तव्य होता है।"[38]

तो कैसे गोली मारना है, यह सीखो और हथियारों से खेलो, क्योंकि सभी प्रकार के सम्मान और सफलता का यही मार्ग है!

और जो सबसे विचित्र बात है वह यह है कि ऐसे लोगों को देखना जिनके बाल हथियार देखते ही (भय के मारे) खड़े हो जाते हैं!

हे उम्मा, समय बीतने के साथ ही तुम हथियारों का रूपरंग भूल चुके हो। एक जीवन पर विलाप मत करो और ईमानदारी की चाह मत रखो।

और वह व्यक्ति कितना विचित्र होता है, जो शत्रु को घाव तो देना चाहता है और जंग के मैदान में उससे लड़ना तो चाहता है, पर उसे यह तक नहीं पता होता है कि हथियार कैसे पकड़ें!! और इसमें कोई संशय ही नहीं है कि जो भी यह सीखने में समर्थ है कि हथियार कैसे चलायें और फिर भी नहीं सीखता है, तो वह उस कर्तव्य को पूरा न करने की कमी के कारण गुनाहगार है जो अल्लाह ने उस पर अनिवार्य किया है। इससे भी अधिक अचंभित करने बात उन लोगों की सोच है जिन्होंने अपनी ऊर्जा और समय इस संसार के प्रकरणों को जानने और इसमें अपनी सुख-सुविधा बढ़ाने में खपायी है, परंतु यह वास्तविकता जानने के बाद भी कि शत्रु उनके द्वार पर खड़ा है और हमारी भूमि पर हमला कर चुका है वे हथियार चलाना सीखने से बचते हैं तथा अल्लाह ही सहायता का स्रोत है।

27. तैराकी और घुड़सवारी सीखो

'उमर बिन अल-खत्ताब ने शाम के लोगों को लिखा: "अपने बच्चों को तैराकी और घुड़सवारी सिखाओ।"

तैराकी सीखना और घुड़सवारी सीखना एक मुजाहिद को लंबी दौड़ में लाभ देता है, क्योंकि तैरारी शरीर को बलिष्ठ बनाने का बड़ा साधन है और घुड़सवारी किसी भी समय व स्थान में एक आवश्यकता बनी रहेगी, विशेषकर उस स्थान पर जहां जिहाद व

---

[37] मुस्लिम द्वारा बताया गया

[38] माज्मू अल-फतवा; 28/355

जंग चल रही हो। यह रसूल की उस हदीस से प्रतिपुष्ट है जो अल-बुखारी में लिपिबद्ध है: ''कयामत के दिन तक घोड़ों के सिर के बाल में लाभ रहेगा।'' इसलिये घोड़े सदा जिहाद में उपयोग किये गये हैं और सदा उपयोग किये जाते रहेंगे, चाहे अफ़गानिस्तान या चेचन्या हो अथवा ईराक।

इस प्रकार जो कोई भी जिहाद में भाग लेना चाहता है और ऐसा करने में समर्थ है, उसे तैरना और घुड़सवारी करना सीखना होगा, क्योंकि ये वो कुशलताएं हैं जो उसे जिहाद में लाभ देंगी।

28. प्राथमिक उपचार सीखो

जिहाद और मुजाहिद्दीन की सेवा करने और जिहाद में भाग लेने की पद्धतियों में से एक प्राथमिक उपचार करना सीखना भी है, जिसकी मुजाहिद्दीनों को बहुत आवश्यकता होती है। प्राथमिक उपचार जैसे कि टूटी हड्डियों को जोड़ना, घाव की चिकित्सा करना, विष के प्रभाव को दूर करना, मांसपेशियों व नसों में खून रोकने वाला उपाय करना आदि। ये सभी वो कौशल हैं जिनकी मुजाहिद्दीनों को आवश्यकता पड़ती है ,तो यह ऐसी उपयोगी जानकारी होती है जिसकी आवश्यकता जिहाद की भूमि में बहुत होती है और ये सीखना सरल व सुरक्षित है।

29. जिहाद का फिक़ह सीखो

जिहाद और मुजाहिद्दीन की सेवा करने और जिहाद में भाग लेने की पद्धतियों में एक जिहाद का फिक़ह सीखना और इसके नियमों का अध्ययन करना भी है तथा इससे जंग के मैदान में लड़ रहे मुजाहिद्दीनों को लाभ होता है। क्योंकि जंग के मैदान में लड़ रहे लोगों को बहुत आवश्यकता होती है कि उनके दीन के मामलों को सिखाने-पढ़ाने वाला कोई व्यक्ति वहां उपस्थित हो। इसी प्रकार यह व्यक्ति ढोंगियों के हमले से जिहाद और मुजाहिद्दीनों को बचाने के लिये खुलकर बोलेगा, तो उसे लाभ होगा और जो कोई भी इल्म के आधार पर कुछ करता है वह उनके जैसा नहीं होता है जो बिना इल्म के कुछ करते हैं।

यहां उन शैख युसुफ अल-उयैयरी का उदाहरण है जिन्होंने अपने इल्म से जिहाद को लाभ पहुंचाया और मुजाहिद्दीनों के साथ खड़े रहे, तो वह वास्तव में एक ऐसी ताकत थे जिसके टकराकर वो टूट जाते थे जो जिहाद का अपमान करते थे, चाहे उन लोगों ने यह अच्छी मंशा की हो अथवा बुरी मंशा से।

और जिहाद के फिक़ह को सीखने में ऐसा किसी भी प्रकार का पाठन सम्मिलित है, जिसे किसी के जिहाद और इसको करने के ढंग का इल्म (ज्ञान) बढ़ता हो तथा जो किसी भी प्रकार के संदेह का निर्मूलन कर दे। यह उन पुस्तकों को पढ़कर सीखा जा सकता है जिसे इस क्षेत्र के इल्म वाले लोगों ने लिखा है। इनके उदाहरणों में अब्दुल्लाह आजम, युसुफ अल-उयैयरी, अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी, अबू कतादा अल-फिलिस्तीनी, अब्दिल कादिर इब्न 'अब्दिल' अजीज, सुलैमान अल-उल्वान, अली अल-खुजैर, नासिर अल-फहद, अब्दिल अजीज अल-जरबू, अबू जंदाल अल-अजदी आदि द्वारा लिखित पुस्तकें हैं।

30. मुजाहिद्दीन को शरण देना और उनका सम्मान करना

अल्लाह कहता है:

निस्संदेह, जो ईमान लाये तथा हिजरत (प्रस्थान) कर गये और अल्लाह के मार्ग में अपने जीवन व धन से जिहाद किये तथा जिन लोगों ने उन्हें शरण दी और उनकी सहायता की, वही एक-दूसरे के सहायक हैं।' [39]

मुजाहिद्दीनों पर निरंतर क्षति होने अथवा कष्ट होने का खतरा बना रहता है। अपितु वे शत्रु, उसके सेवकों व दासों द्वारा निर्वासित कर दिये जाते हैं और भगोड़ा बना दिये जाते हैं। इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि उनकी सहायता की जाए, उन्हें शरण दिया जाए और उन्हें सुखी व सुरक्षित बनाया जाए तथा यह आवश्यक होता है कि उनका सम्मान किया जाए, अतिथि के रूप में उनका अधिकार दिया जाए और ऐसा करते समय अपने मन में तनिक भी खीझ न उत्पन्न होने दिया जाए। वैसे ही जैसे कि चेचन्या के लोगों ने उन मुजाहिद्दीनों के साथ किया जो उनकी सहायता के लिये अरब से गये थे। चेचन्या के लोगों ने अपने घरों को मुजाहिद्दीनों का विश्राम स्थल बना दिया, जबकि वे इस तथ्य से अवगत थे कि यदि रूसी शत्रु को पता चल गया कि उनके घरों में ऐसा हो रहा है तो वह उनके घरों को भी गिरा देगा और घर के सभी पुरुष व महिलाओं को मार देगा। ऐसा ही अफगानों द्वारा भी किया गया, जब काबुल पर अमरीकियों का नियंत्रण हो गया। वहां तो मुजाहिद्दीनों के सम्मान का चमकता उदाहरण प्रस्तुत किया गया और उन मुजाहिद्दीनों को अफगानिस्तान से बाहर निकलने में सहायता की गयी। जबकि अफगानिस्तान के लोग जानते थे कि उस क्षेत्र में अमरीकी सेना और उसका प्रभुत्व है तथा अमरीकियों की सहायता करने वाले उत्तरी गठबंधन बल में लेशमात्र दया नहीं है। फिर भी, इस तथ्य के बाद भी बहुत सारे अफगानों ने मुजाहिद्दीनों को शरण देकर और उनको शत्रु से छिपाकर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की। इसके लिये अनेक अफगानियों को बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा। ये वो सिद्धांत हैं जो हमें आत्मसात् करना चाहिए और इन सिद्धांतों पर चलने के लिये भारी मोल चुकाना पड़े तो चुकाना चाहिए तथा यह ध्यान रखना चाहिए कि अल्लाह उदार की ओर हमें इसके बदले बड़ा पुरस्कार मिलेगा। जैसा कि अल्लाह ने कहा है:

उत्साह अपने लोगों की ताकत के साथ आयेगा और अपने लोगों की ताकत के साथ प्रतिष्ठा आयेगी*

31. काफिरों के प्रति शत्रुता रखो और उनसे घृणा करो

यदि कोई इस विषय को ध्यान से देखे और उस आगे बढ़ता चले तो यह स्वयं ही और अपने में मुजाहिद्दीनों के समर्थन का एक रूप है-भले ही यह विषय ऐसी मान्यता से जुड़ा हुआ जो मोमिनों के मन-मस्तिष्क में बसा हुआ है।

जो कोई भी अपने को काफिरों का शत्रु बनाता है, वह निश्चित रूप से अल्लाह के उन सहयोगी मुजाहिदों में से होता है और अल्लाह उन काफिरों को पीड़ा व चोट का स्वाद चखाता है।

---

[39] अल-अनफाल;72

32. अपने बंदियों को छुड़ाने का प्रयास करो

और यह कर्तव्य और इस्लामी कर्तव्य में आता है जिसे अवश्य ही मुसलमान बंदियों के संबंध में पूरा किया जाना चाहिए।

और "इस्लाम ने शत्रु के हाथों से अपने बंदियों को छुड़ाने का आदेश दिया है। अत: यदि कोई मुसलमान शत्रु के हाथों में बंदी बना पड़ा है, तो मुसलमानों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वे उसे छुड़ाने के लिये सभी उपलब्ध साधन व प्रयास लगायें, भले ही इसके लिये लड़ना पड़े तो लड़ें। यदि मुसलमान लड़ पाने में असमर्थ है तो फिर उन बंदियों को छुड़ाने के लिये फिरौती (बंदी-मुक्ति धन) का भुगतान अवश्य करें, क्योंकि रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा है: **"उस बंदी को छुड़ाओ, उस भूखे को खिलाओ और उस रोगी के पास जाओ।"**[40]

अल-बुखारी द्वारा यह बताया गया है कि अबू जुहैफा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हों) ने कहा: "मैंने अली से कहा: "अल्लाह की पुस्तक में जो है, उसके अतिरिक्त तुम्हें कुछ पता है? उन्होंने कहा: "अल्लाह के वास्ते, मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता। मैं तो बस इतना समझता हूं कि अल्लाह ने एक आदमी को कुरआन दिया है और जो इन पृष्ठों पर लिखा है।" तो मैंने कहा: "और उन पृष्ठों पर क्या लिखा है?" उन्होंने कहा: "उन बंदियों को छुड़ाओ और किसी काफिर के लिये किसी मुसलमान की हत्या मत करो।""

और इब्न अब्बास ने बताया कि उमर (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने कहा: *"काफिरों के पास बंदी बनाकर रखे गये प्रत्येक मुसलमान को छुड़ाने के लिये धन मुसलमानों के खजाने से दिया जाएगा।"*[41] इब्न अबी शायबा ने भी बताया कि उमर ने कहा: *"काफिरों के हाथों से किसी मुसलमान को बचाना मुझे समूचे अरब प्रायद्वीप से कहीं अधिक प्यारा है।"*[42]

और अतीत के बहुत से मुसलमान शासकों ने बंदियों को छुड़ाने और बंदी बनाने वालों के हाथ पीछे धकेलने में अद्भुत साहस दिखाया है, जैसे कि मुस्लिम स्पेन के नेता अल-कम बिन हिशाम। जब उन्होंने सुना कि एक मुसलमान औरत को दासी बनाकर ले जाया गया है और उस औरत ने उनसे व्यक्तिगत रूप से अपनी रक्षा की गुहार की है, तो उन्होंने अपनी फौज एकत्र कर तैयार किया और हिजरी 196 के वर्ष यूरोपियनों की भूमि की ओर बढ़ चले तथा उनकी ही भूमि पर उन्हें काटते रहे, कई किलों को जीत लिया और उस औरत को बचाने में यूरोपियन का बड़ा विनाश किया। उन्होंने उनके बहुत से पुरुषों को मार डाला और उनकी स्त्रियों को दासी बना लिया, जंग की लूट का बड़ा माल एकत्र किया तथा फिर इसके बाद उस देश के उस भाग की ओर चले जहां वह औरत बंदी बनाकर रखी गयी थी, जहां उन्होंने उस औरत को अंतत: मुक्त कराया। फिर वह कोरदोवा विजयी मुद्रा में लौट आये।

---

[40] अल-बुखारी द्वारा बताया गया

[41] इब्न अबी शायबा द्वारा अपनी मुसन्नफ;6/497 में वर्णित

[42] मुसन्नफ;6/496

जब अल-मंसूर बिन अबी अमीर उत्तरी स्पेन में एक जंग लड़ने के बाद लौटे, तो एक मुसलमान औरत उनसे कोरदोवा के प्रवेश द्वार पर मिली और उनसे बोली: ''मेरा बेटा ईसाइयों द्वारा बंदी बना लिया गया है! आप उसे कृपया मुक्त करायें!'' तो अल—मंसूर कोरदोवा के भीतर नहीं गये और वहीं द्वार से अपनी फौज के साथ वहीं वापस चल पड़े जहां से आये थे तथा उस बंदी को छुड़ाने गये।

सच्चे मुसलमानों का यह इतिहास इस प्रकार की महान कहानियों से भरा पड़ा है। वस्तुत: यही सत्यनिष्ठा, दीन के प्रति सम्मान और लगन होती है। ये वो शासक थे जिन्होंने अपने शासन को दांव पर लगाकर भी अपने लोगों के लिये काम किया और अपने लोगों की पीड़ा का अनुभव किया, चाहे इसके लिये उनके देश या लोगों पर कितनी भी विपत्ति क्यों न आ पड़ी हो। ऐसा मुसलमान बनने का प्रयास करना चाहिए और ऐसा मुसलमान बनने की होड़ में सम्मिलित होना चाहिए।

हमारे बंदियों को मुक्त कराने का विषय इस्लामी विषयों में स्पष्ट है और इसके पक्ष में सुप्रचारित व सुविख्यात साक्ष्य हैं। इस्लामी विद्वानों में इस पर सहमति है और मुसलमानों में इस पर सामान्य सहमति है।''

[सुलैमान अल-उलवान के 'अमेरिका और बंदियों' नामक पुस्तक से उद्धृत]

33. बंदियों के बारे में समाचार को फैलाओ और उनके प्रकरणों से सरोकार रखो

जो मुजाहिद्दीन मैदान में लड़ रहे हैं, वे ऐसे लोगों को पा सकते हैं जो उन पर ध्यान दें, क्योंकि वे अन्य लोगों की अपेक्षा अपने कार्यों और वाणी से बाहर लड़ रहे और शत्रु पर हमले कर रहे हैं। जहां तक उन बंदियों की बात है जो काफिरों के हाथों में पड़ गये हैं, बंदी बनाये जाने के बाद उनके बारे में बहुत कम बात होती है और जो कोई भी उन बंदियों को छुड़ाने का प्रयास करता है उसे उन बंदियों से सरोकार रखने वाले अपने जैसे लोग कम ही मिलते हैं। जाने कितने ऐसे मुजाहिद्दीन हैं जो अरब और गैर-अरब अत्याचारियों के बंदी हैं, पर फिर भी उनके लिये रोने वाला या उनकी स्थितियों का हाल लेने वाला कोई नहीं है?

तो जिहाद और मुजाहिद्दीन की सेवा करने के सर्वाधिक प्रमुख विधियों में से एक है जब ये बंदी मुक्त न करा लिये जाएं, इन बंदियों के संबंध में समाचार को प्रसारित करने के लिये आगे बढ़े तथा प्रत्येक स्थान पर उन बंदियों के उद्देश्यों के बारे में जागरूकता फैलायें। मुसलमान बंदियों के लिये हम कम से कम यह तो कर ही सकते हैं।

34. इलेक्ट्रॉनिक जिहाद

और यह शब्दावली उनके बीच में उभरी है जो इंटरनेट पर जिहाद की सहायता करना चाहते हैं। इंटरनेट का क्षेत्र ऐसा वरदान है जिसमें बहुत से लाभ निहित हैं, जैसे कि लोगों के बीच समाचार प्राप्त करना और प्रसारित करना। इसके अतिरिक्त इंटरनेट के माध्यम से मुजाहिद्दीनों को बचाव ही नहीं किया जा सकता है, अपितु उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहा जा सकता है,

मुजाहिद्दीनों के विचारों का प्रचार-प्रसार किया जा सकता है और मुजाहिद्दीनों के अनुरोध को लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। यह प्रयास दो बड़े भागों में विभाजित किया जा सकता है: विमर्श पटल और हैकिंग विधियां।

जहां तक विमर्श पटल की बात है तो इस पर मुसलमान भाइयों का समूह मिल सकता है और विख्यात विमर्श पटलों पर एक-दूसरे को रजिस्टर होने एवं संदेश डालने के लिये नियुक्त किया जा सकता है। ये संदेश निम्न श्रेणियों में आती हैं:

- जिहाद के लिये प्रेरित करना और इसकी अच्छाइयों का उल्लेख करना, विशेषकर अपने समय में जिहाद के गुणों का उल्लेख करना
- मुजाहिद्दीनों का बचाव करना और उनसे उनके सम्मान को बचाना जो उनके बारे में बुरा बोलते है
- समूह के मन-मस्तिष्क में जिहाद का विचार भरना
- जिहाद से संबंधित शोध व ज्ञान आधारित लेखों को सामने रखना
- आधुनिकतावादियों और इस्लाम छोड़ने वाले उन लोगों के पीछे पड़ना जो जिहाद का विरोध करते हैं और ऐसे लोगों की कमियां उजागर करना

इसलिये भाइयों को प्रत्येक विमर्श मंडल के माध्यम से इन संदेशों को नित्य आधार पर फैलाना चाहिए जिससे कि प्रत्येक विषय पर पोस्ट जाती रहे और फिर इन पोस्टों पर दूसरे भाई प्रत्येक विमर्श मंडल में प्रतिक्रिया दें जिससे कि इन संदेशों को प्रत्येक फोरम में शीर्ष पर बनाये रखा जा सके।

जहां तक हैकिंग विधियों की बात है, तो यही है जो वास्तव में इलेक्ट्रॉनिक जिहाद कहे जाने योग्य है, क्योंकि इस शब्द में बल प्रयोग करने, प्रहार करने और हमला करने का अर्थ निहित होता है। तो जिसे इस क्षेत्र का ज्ञान हो उसे जिहाद की सेवा करने में इसका उपयोग करने हिचकना नहीं चाहिए। उसे अमेरिकन वेबसाइट, यहूदी वेबसाइट, आधुनिकतावादियों की वेबसाइट, धर्मनिरपेक्षों की वेबसाइट के साथ ही किसी भी ऐसी साइट को नष्ट करने के प्रयास पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो एंटी-जिहाद और एंटी-मुजाहिद्दीन हों।

और जिसे इस कला के संबंध में ज्ञान नहीं है, उसे इसको लगन और अच्छी मंशा से सीखना चाहिए, क्योंकि यह दुश्मन पर हमला करने का एक माध्यम है। आओ हम जिहाद करें, भले ही इसे इंटरनेट के मार्ग से करना पड़े।

35. काफिरों के विरोध में खड़े हो

जो भी किसी जायज कारण से काफिरों से मेलजोल रखता है, उसका कर्तव्य है कि जहां तक संभव हो वह मुसलमानों को हानि पहुंचाने और मुसलमानों से लड़ने पर काफिरों से अपना विरोध प्रकट करे। जिस प्रकार नुयैम बिन मसऊद ने कॉन्फेडरेट की जंग के समय किया था और खंदक की जंग के दिन बनी कुरैजा के यहूदियों के साथ किया था तथा जैसा कि फिरऔन के लोगों के साथ एक मोमिन ने किया था, जिसके संबंध में अल्लाह ने कहा है:

"और फ़िरऔन के परिवार का एक मोमिन जो अपना ईमान छिपा रहा था, बोला: क्या तुम किसी आदमी का वध इसलिये कर दोगे कि वह कह रहा है: मेरा स्वामी अल्लाह है?'''''[43]

और काफिरों के विरोध के लिये यह आवश्यक है कि उनकी किसी भी प्रकार या किसी भी रूप में सहायता न की जाए, क्योंकि यदि कोई काफिरों की सहायता करता है ,तो उसका यह कार्य कुफ्र माना जा सकता है, जैसा कि अल्लाह ने कहा है:

"... और तुममें से जो भी उनका सहयोग करेगा, तो वह भी उन्हीं में से एक है..."[44]

36. अपने बच्चों को ऐसे बड़ा करो कि उनमें जिहाद और जिहाद करने वाले लोगों के प्रति प्रेम पनपे

किसी का परिवार और बच्चे भविष्य की तैयारी होती है और उन्हीं में से अगली पीढ़ी आती है तो यह आवश्यक है कि किसी के परिवार व बच्चों को इस प्रकार तैयार किया जाए कि उनमें जिहाद और मुजाहिद्दीनों, शहादत के विचार और अल्लाह के मजहब के लिये त्याग के प्रति प्यार हो, जिससे कि जब वे अंतत: अल्लाह के मार्ग में जाने की इच्छा करें तो तुम उनमें से एक रहोगे जिन्होंने दीन के अनुपालन में उनका सहयोग किया।

और इसका एक और लाभ यह है कि इससे परिवार मुजाहिद्दीनों की सेवा को तत्पर और इच्छुक रहता है तथा मुजाहिद्दीनों में से जो भगोड़े हैं उनको शरण देने को तत्पर व इच्छुक रहता है।

इसके अतिरिक्त इससे यह लाभ भी है कि जब वह व्यक्ति संसार से चला जाएगा तो उसके बाद भी उसका बेटा जिहाद करेगा।

अब्दुल्ला बिन अज-जुबैर के अब्बू अज-जुबैर बिन अल-अव्वाम उसे बहुत कम आयु से ही जंग देखने के लिये अपने साथ लाते थे और वहां वह घायल मुजाहिद्दीनों की सहायता को तत्पर रहता था। फिर जब वह बड़ा हुआ तो वह वो बना जो वह था: साहस व बहादुरी वाला आदमी। इसी प्रकार जो जिस प्रकार पाला-पोसा जाता है, वह बड़ा होकर वैसा ही बनता है।

और किसी के बच्चों और परिवार को तैयार करने की विधियां हैं:

- उन्हें रसूल (उन पर शांति हो) की सीरत (आत्मवृत्त) और उन जंगों के बारे में पढ़ाया जाए, जिसमें उन्होंने भाग लिया था

---

[43] गाफिर;28

[44] अल-माइदा;51

- उनके साथियों की साहसिक कहानियों और ताबीइन को पढ़ाया जाए, जो इतिहास की पुस्तकों में प्रामाणिक रूप से दी गयी हैं
- उनको जिहाद और मुजाहिद्दीनों के टेप (श्रव्य अर्थात आडियो एवं दृश्य अर्थात वीडियो दोनों) लाकर दिये जाएं जिससे कि उनके मन में जिहाद के प्रति प्यार बढ़े और मुजाहिद्दीनों से लगाव बढ़े
- उन्हें मुजाहिद्दीनों के जीवन के अतीत व वर्तमान दोनों कहानियां और इससे जुड़े समाचार सुनाये जाएं
- ऐसे टेप को सुनवाया जाए जिसमें जिहाद व शहादत से संबंधित विषयों के बारे में बताया गया हो और चेताया गया हो तथा साथ ही उनके सामने शहादत का बखान किया जाए
- बच्चों के नाम जिहाद के भूतकाल व वर्तमान दोनों के नायकों पर रखे जाएं

37. विलासिता का त्याग

जिहाद करने और जिहाद करने वालों लोगों की सेवा करने में जिन बातों से सहायता मिलती है ,उनमें से एक यह भी है कि सुख-सुविधा और विलासिता को त्याग दिया जाए तथा इस संसार के आनंद के पीछे भागना छोड़ दिया जाए, जैसा कि अब्दुल्ला आजम ने कहा है: ''विलासिता जिहाद की शत्रु है।''

और विलासिता का अपना प्रभाव होता है, जो आज नहीं तो कल दिख जाता है, जैसे कि हृदय की कठोरता, अहंकार, सांसारिक विषयों के पीछे भागना और उनकी इच्छा करना तथा मृत्यु से घृणा करना। ये सब जिहाद से भागकर बैठे रहने की ओर ले जाता है या यूं कहें कि यह सत्य को छोड़ने की ओर ले जाता है, इतना ही नहीं यह दूसरे लोगों को भी सत्य से दूर ले जाता है!

तथा इस संसार में सुख-सुविधा और आराम का उल्लेख कुरआन में नहीं है, या यूं कहें कि कुरआन में इनका उल्लेख नकारात्मक ढंग से किया गया है।

''और नहीं भेजा हमने किसी बस्ती में कोई सचेतकर्ता (नबी), परन्तु सांसारिक संपत्ति व सुख-सुविधा से सम्पन्न उनके लोगों ने कहा: हम उस संदेश में विश्वास नहीं करते, जिसे तुम्हें भेजा गया है।''[45]

''और इसी प्रकार, हमने तुमसे पहले किसी बस्ती में कोई सावधान करने वाला (नबी) नहीं भेजा, किंतु उनमें सुख-सुविधा सम्पन्न लोगों ने कहा: ''हमने अपने पूर्वजों को एक विशेष रीति पर चलते पाया है और हम निश्चित ही उन्हीं के पदचिह्नों पर चलेंगे।''''[46]

''वे जिन्होंने गलत किया है, वे इस सांसारिक जीवन की अच्छी चीजों का भोग करने के पीछे भागते थे और वे ही गुनाह करने वाले थे।''[47]

---

[45] सबा;3

[46] अज-जुखरुफ; 23

[47] हूद;116

"वस्तुत:, उससे पहले, वे सुख-सुविधा भोगने में लिप्त हो गये।"[48]

और [अल-इस्रा;16], [अल-आम्बिया;13] और [अल-मुमिनुन;33,64] के साथ ही निम्नलिखित आयतों को भी देखिये। तो ये आठ आयतें हैं, जिसमें सुख-सुविधा का उल्लेख किया गया, पर इनमें एक बार भी इसका उल्लेख सकारात्मक रूप में नहीं किया गया है, अपितु इनका उल्लेख बुराई बताते हुए किया गया है।

और इन आयतों को पढ़ने वाला कोई व्यक्ति यह न सोचे कि हम धन के महत्व को कम कर रहे हैं, क्योंकि धन (अल्लाह के बाद) तो जीवन को चलाने वाला है और धन ही जंग की जीवनरेखा है। दूसरे अध्याय में पहले ही यह बताया गया है कि अपना धन अल्लाह के मार्ग में लगाओ।

फिर भी हम धन के व्यय और सुख-सुविधा में अत्यधिक डूबने पर चेतावनी दे रहे हैं, विशेषकर उन लोगों को जो जिहाद के क्षेत्र में सक्रिय हैं, क्योंकि सांसारिक सुख-सुविधाओं में लिप्त होने का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हमने अपनी आंखों से ऐसे नकारात्मक प्रभाव को देखा है। यह नकारात्मक प्रभाव तो कुछ मुसलमानों को जिहाद के कर्तव्य से दूर ही कर देता है और ये मुसलमान जिहाद करने के स्थान पर इस संसार के सुख में जीने लगते हैं।

"हे मोमिनो! अपनी संपत्ति और बच्चों को अल्लाह के स्मरण से भटकाने वाला न बनने दो। और जो कोई भी ऐसा करता है, वही हानि उठाने वाला है।"[49]

"और जान लो कि तुम्हारी धन—संपत्ति और तुम्हारे बच्चे और कुछ नहीं, बस तुम्हारी परीक्षा के लिये तुम्हें दिये गये हैं तथा यह जान लो कि निश्चित ही अल्लाह के पास ही सबसे बड़ा पुरस्कार मिलेगा।"[50]

इब्न खलदुन ने अपनी पुस्तक 'मुकद्दिमाह' में सुख-सुविधा और धन-संपत्ति के नकारात्मक प्रभावों को दर्शाते हुए अनेक ऐसी लाभकारी बातें लिखी हैं, जो हमें बताती हैं कि किस प्रकार ये सब हमें विनाश की ओर ले जाते हैं तथा किस प्रकार इन सब का परिणाम ऐसे बुरे लक्षण के रूप में सामने आता है जो दुश्मन के हाथों पराजय की ओर ले जाता है।

38. शत्रु के वस्तुओं का बहिष्कार करो

और हमारे लिये यहां शैख हामूद बिन उक़ला (अल्लाह उन पर दया करे) का यह फतवा प्रस्तुत करना पर्याप्त् है, जिसमें उन्होंने कहा:

---

[48] अल-वाकिया;45

[49] अल-मुनाफिकन;9

[50] अल-अनफाल;28

"सब बड़ाई कायनातों के स्वामी अल्लाह की है, और उसके सभी प्रतिष्ठित पैगम्बरों व रसूलों, हमारे रसूल मुहम्मद, उनके परिवार व साथियों पर उसकी कृपा व शांति हो।

जैसा कि निम्नलिखित है:

अल्लाह कहता है:

"मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनको मानते हैं वे काफ़िरों के विरुद्ध सख्त होते हैं।"[51]

और अल्लाह महान ने मोमिनों का वर्णन करते हुए कहा है:

"...काफिरों के विरुद्ध सख्त रहो; वे लोग (मोमिन) अल्लाह के मार्ग में जिहाद करें और किसी निंदा करने वाले की निंदा से नहीं डरें।"[52]

काफिरों से जंग करने के संबंध में अल्लाह महान ने कहा है:

"...जब पवित्र महीने बीत जाएं तो उनकी (काफिरों की) हत्या करो, उनको पकड़ो, उन्हें घेरो और उनकी घात में रहो... ।"[53]

और अल्लाह महान ने कहा है:

"और न वह ऐसा कदम रखते हों जिससे कि काफिरों का गुस्सा बढ़े और न ही शत्रु को चोट पहुंचाते हैं, पर उससे उनके लिये नेक अमल किया जाता है... ।"[54]

वस्तुत: जिहाद व जंग के लिये प्रत्येक समय व काल का अपना-अपना हथियार होता है जिसका प्रयोग शत्रु के विरुद्ध किया जाता है तथा मुसलमानों ने शत्रुओं के विरुद्ध जिहाद में इस प्रकार के विभिन्न हथियारों का प्रयोग सदैव किया है। मुसलमानों का उद्देश् उनको पराजित व दुर्बल करना था। अश-शाऊकनी ने कहा: "अल्लाह ने हमें काफिरों की हत्या करने का आदेश दिया है, यद्यपि इसका निरूपण नहीं किया है कि किस प्रकार उनकी हत्या की कजानी चाहिए तथा अल्लाह ने यह नहीं कहा है कि हमारे इस कार्य को तभी अच्छा माना जाएगा जब अमुक-अमुक ढंग से काफिरों की हत्या की जाएगी और अमुक-अमुक ढंग से नहीं की जाएगी।"[55] और अल्लाह महान के इस संदेश पर सामान्यत: पूर्ण सहमति है: "...**उनको (काफिरों) को पकड़ो और उनको घेरो,**

---

[51] अल-फतह;29

[52] अल-माइदा;54

[53] अत-तौबा;5

[54] अत-तौबा;120

[55] आस-सैन अल-जिरार; 4/534

और उनके लिये हर समय घात में रहो..."[56] और जिहाद की विधियों में से एक वह है जो रसूल (उन पर शांति हो) ने अपने दुश्मनों को कमजोर बनाने के लक्ष्य से किया और जिहाद की वह विधि है आर्थिक प्रतिबंध की विधि, जिसे आज के समय में आर्थिक बहिष्कार के रूप में भी जाना जाता है।

और रसूल (उन पर शांति हो) द्वारा इस विधि का प्रयोग करने का उदाहरण निम्न है:

1- प्रथम जिहाद आंदोलन की गतिविधियां और यह तथ्य कि रसूल (उन पर शांति हो) द्वारा भेजे गये हमलावर दल और वो जंगें जिसका नेतृत्व रसूल ने किया था, उसका उद्देश्य कुरैशों के सीरिया (उत्तर में) और यमन (दक्षिण में) जाने के व्यापारिक मार्ग को अवरुद्ध करना था। इनका निश्चित से मक्का की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ा था और मक्का के लोग वित्तीय रूप से दुर्बल हुए थे।

2- बनू अन-नजीर के यहूदियों की घेराबंदी की कहानी 'सही मुस्लिम' में उल्लिखित है। जब उन्होंने समझौते का उल्लंघन किया, तो अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने उनकी घेराबंदी कर दी, उनके खजूर के पेड़ों को काट डाला और जला डाला। तब यहूदियों ने संदेश भिजवाया कि वे अपनी उस भूमि को छोड़ देंगे। इस प्रकार रसूल ने उन्हें आर्थिक जंग के माध्यम से पराजित किया और इस अवसर पर अल्लाह महान ने निम्न आयत भेजी:

"तुमने जो भी खजूर के पेड़ों को काट डाला अथवा उन्हें ठूंठ बनाकर छोड़ दिया, वो सब अल्लाह के आदेश से हुआ और वह उन अवज्ञाकारियों को अपमानित करेगा।"[57]

अत: काफिरों की घेराबंदी करना और अर्थव्यवस्था के केंद्र की जीवनरेखा उनकी उपज को नष्ट करना उन पर दबाव डालने, उनको पराजित करने और मदीना से भगाने की सबसे बड़ी विधि थी।

3- मक्का की जीत के बाद अत-ताइफ की घेराबंदी की कहानी जिसका उल्लेख अल-बुखारी द्वारा अपनी पुस्तक 'जंगी अभियानों की किताब', मुस्लिम द्वारा पुस्तक 'जिहाद की किताब' और इब्न अल-कैयिम द्वारा 'जैन अल-मअआद' में विस्तार से दी बतायी गयी कहानी, इब्न साद द्वारा अपनी 'तबकात' [2/158] में उल्लेख किया गया है। इस कहानी में बताया गया है: "...तो अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो), और आदेश दिया कि ताइफ की खड़ी फसल काट डाली जाए और जला डाली जाए, तो मुसलमान आगे बढ़े और सारी फसलों काट डाला।" इब्न अल-कैयिम उल्लेख करते हैं, इससे हुए लाभ के विषय में: "और इसमें काफिरों की फसलों को काटकर गिरा देने की अनुमति है, यदि इससे काफिर दुर्बल हों और चोटिल हों तो।"

---

[56] अत-तौबा; 5

[57] अल-हश्र;5

4- साथी सुमामह बिन असाल अल-हनफी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हों) द्वारा किये गये आर्थिक बहिष्कार की कहानी भी है और यह कहानी इतिहास व आत्मवृत्तों की पुस्तकों में दी गयी हैं। जैसा कि इब्न इस्हाक ने अपनी 'सीरत', इब्न अल-कैयिम की 'जैद अल-मअआद', अल-बुखारी की 'जंगी अभियानों की किताब' और मुस्लिम की 'जिहाद की किताब' में इस कहानी को दिया गया है। अल-हनफी की कहानी मक्का की जीत के पहले तब है जब वो इस्लाम में आये और उमरा के लिये मक्का की ओर बढ़े। अपनी उमरा के बाद उन्होंने यह कहते हुए कुरैशों (अरब के गैर-मुसलमान) के आर्थिक बहिष्कार की घोषणा की कि: "नहीं, अल्लाह की कसम! मैं तुम्हों अल-यमामह से गेहूं का एक दाना भी नहीं दूंगा, जब तक कि अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) मुझे ऐसा करने की अनुमति न दें!" तब हम अल-यमामह के लिये निकल पड़े और वहां के लोगों को कुछ भी मक्का ले जाने से रोक दिया जिससे कि मक्का के कुरैशों के पास कुछ भी न पहुंच सके। रसूल (उन पर शांति हो) ने अल-यमामह के लोगों की आर्थिक घेराबंदी किये जाने को अनुमति दी। यह आर्थिक घेराबंदी इस साथी (अल्लाह उनके साथ प्रसन्न हों) के विशेष गुण के कारण हो पायी।

ये सब घटनाएं और इनसे मिलती जुलती घटनाएं मूलत: काफिरों से प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान पर लड़ने के अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) के सिद्धांतों में से मूल सिद्धांत से निकले कानून जैसा है।

और आज यह प्रकरण जिहाद करने वाली इस्लामी जनसंख्या के हाथ में है:

"...जहां तक हो सके अल्लाह से डरो..."[58]

...और चूंकि दूसरों ने काफिरों से जंग करना छोड़ चुके हैं तो यह जिहाद के उन लाभकारी रूपों में से है कि सभी मोमिन इसमें भाग ले सकते हैं। इस कारण हम अपने मुसलमान भाइयों को अमेरिकन, ब्रिटिश और यहूदियों से जंग करने को प्रोत्साहित करते हैं और इनके विरुद्ध आर्थिक बहिष्कार के हथियार का प्रयोग करों, क्योंकि इससे इनकी अर्थव्यवस्था दुर्बल होती है।

और यदि मुसलमानों के जनसमूह के पास उनसे (काफिरों से) सशस्त्र संघर्ष करने की सामर्थ्य न हो तो उनका, उनकी कंपनियों और हर उस काम का बहिष्कार करो जिससे उनको लाभ होता हो। रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा: **"अपने धन, अपनी ताकत और अपनी जुबान से काफिरों के विरुद्ध आगे बढ़ो।"**[59]

इसी प्रकार, मैं अपने मुसलमान भाइयों को जिहाद में निरंतर रहने और धीर रहने को प्रेरित करूंगा, जैसा कि अल्लाह महान कहता है:

"हे मोमिनो! धीरज रखो और लड़ने में मजबूत रहो और जंग की तैयारी करो... ।"[60]

---

[58] अत-तगाबुन;16

[59] अहमद व अबू दाऊद द्वारा वर्णित, अनस के हवाले से

[60] आले-इमरान;200

...और आलस न करो और न ही नीरस अनुभव करो, क्योंकि जीत धीरज से आती है और उन्हें अमेरिकन, ब्रिटिश और यहूदी कंपनियों और उनके हितों का बहिष्कार मजबूत, आक्रामक और व्यापक ढंग से करने का प्रयास करना चाहिए। अल्लाह महान कहता है:

"...और आपस में एक—दूसरे की सहायता करो नेकी और परहेजगारी में... ।"[61]

और अल्लाह की बड़ी बड़ाई है— कि हमनें पहले ही अमेरिकी, ब्रिटिश और यहूदियों की अर्थव्यवस्थाओं के व्यापक बहिष्कार के प्रभाव को बताया है। और विश्व के सभी भागों में जिहाद के विरुद्ध संघर्ष में अमेरिका और ब्रिटेन का हाथ है और ये दोनों ही फिलिस्तीन के पारसियों की सहायता के पीछे हैं, ये ही अफगानिस्तान में तालिबान के इस्लामी स्टेट पर अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रतिबंध लगाने के पीछे हैं (अनुवादक की टिप्पणी: स्पष्ट कर दें कि यह फतवा 9/11 की घटना के पहले दिया गया था)।

चेचन्या में रूसियों की सहायता और फिलीपींस, इंडोनेशिया, कश्मीर और अन्य स्थानों पर हमारे मुजाहिद्दीन भाइयों के विरुद्ध ईसाइयों की सहायता करने वाले जो हैं वो यही अमरीकी और ब्रिटिश हैं। और ये अमरीकन और ब्रिटिश जिहाद और मुसलमान को कमजोर करने वाले प्रयासों के पीछे हैं। यही लोग ईराक में मुसलमान लोगों पर आर्थिक प्रतिबंध लगाने वाले हैं और यही लोग वहां के शासकों के राज्य को किनारे कर दस वर्षों से अधिक समय से प्रतिदिन हवाई हमले भी कर रहे हैं (अनुवादक की टिप्पणी: पुन: एक बार, अतीत की घटनाओं का प्रत्यक्ष संदर्भ)।

और उन्होंने अल्लाह महान के इस कथन को सही सिद्ध किया है और इसकी पुष्टि की है:

"और यहूदी व ईसाई तुमसे तब तक प्रसन्न नहीं होंगे, जब तक कि तुम इस्लाम पर चलोगे।"[62]

हे अल्लाह, अमरीकियों, ब्रिटिशों, यहूदियों और उनके सहायकों व सहयोगियों से मुक्ति दिलाओ! हे अल्लाह! उन पर अपना कोप लाओ और जैसे युसुफ के लोगों के साथ आपने किया था वैसे ही इन लोगों पर वर्षों तक विपत्ति लाओ।

और रसूल मुहम्मद आप पर, आपके परिवार व साथियों पर अल्लाह की शांति व कृपा रहे, आमीन"

[सम्मानित शैख हामूद बिन उक़्ला अश—शुऐबी; द्वारा लिपिबद्ध कराया गया; 11/28/1424]

39. काफिरों में किसी को काम पर मत रखो

[आज पश्चिमी देशों की अपेक्षा खाड़ी देशों में चल रहे वर्तमान प्रणाली में इसे लागू करना अधिक उपयुक्त है]

---

[61] अल-माइदा;2

[62] अल-बकरा;120

और यह आर्थिक बहिष्कार की अगली कड़ी हो सकती है। इसके अंतर्गत यह आता है कि जो देश इस्लाम का विरोध कर रहे अथवा इस्लाम से जंग लड़ रहे उनके यहां के लोगों को काम पर न रखा जाए, नौकरी न दी जाए।

उदाहरण के लिये तुम्हें किसी हिंदू को काम पर नहीं रखना चाहिए, क्योंकि हिंदू कश्मीर में हमारे मुसलमान भाइयों से लड़ रहे हैं। तुम्हें फिलीपींस के किसी ईसाई को काम पर नहीं रखना चाहिए, क्योंकि वे दक्षिणी फिलीपींस में हमारे भाइयों से लड़ रहे हैं और ऐसे ही जो भी देश मुसलमानों को जिहाद नहीं करने दे रहे हैं उनके लोगों को काम या नौकरी नहीं दी जानी चाहिए। सामान्य रूप से बोलें तो हम कहेंगे: इन काफिर गुनाहगारों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है। मुसलमान को गैरमुसलमानों को काम देने या नौकरी पर रखना सीमित कर देना चाहिए और उन्हें ही काम या नौकरी पर रखना चाहिए जो मुसलमान हैं, क्योंकि यही पर्याप्त और अच्छा है और इससे यह सुनिश्चित होगा कि वह जो धन अपने यहां काम या नौकरी करने वालों को दे रहा है उसका उपयोग मुसलमानों के विरुद्ध नहीं होगा।

यह एक स्पष्ट और सीधा विचार है, जैसा कि अल्लाह कहता है:

"और वास्तव में जो मुसलमान है वह गुलाम होकर भी उन मुशरिकों (बहुदेववादियों अर्थात काफिरों) से अच्छा है जो मुक्त है, भले ही वे मुशरिक तुम्हें प्रसन्न रखते हों।"[63]

निष्कर्ष

मैं इस पत्रक को अंतिम रूप देते हुए जिहाद को छोड़ने से संबंधित उन खतरों का उल्लेख करूंगा, जिसे शैख अब्दिल अजीज अल-जलील (अल्लाह उनका संरक्षण करें) ने अपनी पुस्तक 'अत-तरबिया अल-जिहादिया' में बताया है:

अल्लाह के मार्ग में जिहाद को छोड़ने का खतरा

"जैसा कि मैंने इस पत्रक के परिचय में ही जिहाद की अच्छाइयों और इस संसार व परलोक में इसके परिणाम को बता चुका हूं तो अब हमारे लिये इस निष्कर्ष में जिहाद को छोड़ने के खतरों एवं इससे निपटने की तैयारी के विषय में बोलना सरल है। यह भी बताना सरल है कि तुमको जिहाद छोड़ने की बुराई अपनाने पर इस संसार और परलोक में क्या फल मिलेगा, क्या दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा और तुम्हारा अंत कितना बुरा होगा।

इस्लामी विद्वानों ने सदैव जिहाद छोड़ने को सबसे बड़ा अपराध माना है। इब्न हजर अल-हैशमी ने कहा: "391वां व 392वां बड़ा गुनाह: जबकि जिहाद मुसलमान का व्यक्तिगत अनिवार्य कर्तव्य है तो उसे छोड़ना सबसे बड़ा अपराध है, जबकि शत्रु इस्लाम की भूमि में प्रवेश कर चुका है या मुसलमान को बंदी के रूप रखा है जिसे कि छुड़ाया जाना चाहिए, अथवा इस्लामिक स्टेट

---

[63] अल-बकरा;221

के दूरदराज क्षेत्र के लोगों ने अपनी सीमाओं को मजबूत बनाना छोड़ दिया है और अपने लोगों को काफिरों के आक्रमण के लिये छोड़ देते हैं।''[64] और इसलिये जिहाद छोड़ना या जिहाद की तैयारी करना छोड़ना ढोंग का लक्षण माना जाता है, जैसा कि अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा है: **''जो कोई भी जिहाद अर्थात जंग लड़े बिना मरता है, अथवा वह ऐसी स्थिति में मरता है कि उसके मन में जिहाद करने की मंशा भी न हो तो वह ढोंगियों के जैसे ही मरता है।''**

और अल्लाह इसे इस सांसारिक जीवन के बाद के जीवन में विश्वास के अभाव अथवा इसको पक्का मानने में कमजोरी के रूप में देखता है। उसने कहा है:

''जो अल्लाह और कयामत के दिन में विश्वास करते हैं, वे अपने शरीर और धन से जिहाद में जाने से छूट की अनुमति नहीं मांगते और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली-भांति जानता है। वही जो न तो अल्लाह में विश्वास करते हैं और न ही कयामत के दिन में और जिनमें मन में संदेह होता है, तुमसे जिहाद न करने की अनुमति मांगते हैं और वे अपने मन में संदेह पालकर जिहाद करने में पीछे रह जाते हैं। और यदि वे जिहाद करने निकलने की मंशा रखते तो निश्चित ही इसके लिये कुछ तैयारी किये होते, पर अल्लाह उन्हें आगे नहीं भेजना चाहता था तो उसने उन्हें जिहाद की तैयारी में पीछे कर दिया और यह कहा गया: ''उन्हीं के बीच बैठे रहो जो घर बैठे हैं।''''[65]

और हम जिहाद छोड़ने पर आने वाले खतरे और बुरा अंत होने को निम्नलिखित रूप में कह सकते हैं:

1. जिहाद छोड़ना बहुत बड़ा अपराध है, क्योंकि जैसा मैंने पहले बताया है कि जिहाद छोड़ने से अल्लाह-सर्वसामर्थ्यवान व महान का कोप हो सकता है और इस संसार और परलोक दोनों में उसके दंड का भागी बनना पड़ेगा।

अल्लाह कहता है:

''यदि तुम जिहाद करने आगे नहीं बढ़ोगे, तो अल्लाह तुम्हें दुःखदायी यातना देगा तथा तुम्हारे स्थान पर दूसरे लोगों को लायेगा और तुम उसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकोगे, और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।''[66]

''उनसे कह दो: यदि तुम्हारे बाप, तुम्हारा बेटा, तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीवियां, तुम्हारा परिवार, तुम्हारा धन जो तुमने कमाया है और जिस व्यपार के मंद हो जाने का तुम्हें भय है तथा वो घर जिनसे मोह रखते हो, ये सब तुम्हें अल्लाह तथा उसके रसूल और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने से अधिक प्रिय हैं, तो प्रतीक्षा करो अल्लाह का निर्णय आयेगा। वस्तुतः, अल्लाह बहुत से जंग के मैदानों में तथा हुनैन की जंग के दिन तुम्हारी सहायता कर चुका है, जबकि अपनी संख्या अधिक होने पर तुम जश्न मना रहे पर वह तुम्हारे किसी काम न आई और धरती इतनी बड़ी होते हुए भी तुम्हारे भागने के लिये छोटी पड़ गयी तथा तब तुम पीठ दिखाकर जंग से

---

[64] अज-जवाहिर मिन इक़्तिरफ अल-काबाइर; 2/163

[65] अत-तौबा;44

[66] अत-तौबा;39

भागे। फिर अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनों पर शान्ति उतारी तथा ऐसी फौजें उतारीं, जिन्हें तुमने नहीं देखा और काफ़िरों को दंड दिया। यही काफ़िरों का प्रतिफल है।"[67]

और जो लोग दीन की अच्छाई में रहने, हराम से दूर रहने और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने का आदेश मानने की अनिवार्यता की उपेक्षा करते हैं, उन्हें इब्न अल-कैयीम (अल्लाह उन पर दया करो) ने अपने मजहबी प्रतिबद्धता न निभा पाने वाले और अल्लाह महान की दृष्टि में सबसे बड़े अपराध करने वाले नीच के रूप में बताते हैं, क्योंकि वह कहते हैं: "जहां तक जिहाद करने और दीन की अच्छाई में रहने एवं हराम से दूर रहने तथा अल्लाह, उसके रसूल व उसके बंदों के प्रति सच्चा रहने एवं अल्लाह, उसके रसूल, उसके मजहब व उसकी किताब को सहायता व फतह देने के आदेश की बात है तो ये सब करना मुसलमानों के लिये अनिवार्य है, पर इसकी उपेक्षा करने वाले उन अपराधी नीचों के मन में इस अनिवार्य कर्तव्य को पूरा करने के भाव का एक अंश भी नहीं होता, इस कर्तव्य को पूरा करने की इच्छा करना अथवा पूरा करने की बात ही छोड़िये। और जो इन अनिवार्य कर्तव्य को छोड़ देते हैं वे मजहबी प्रतिबद्धता न निभाने वाले नीच और अल्लाह की दृष्टि में सबसे बुरे होते हैं, भले ही ये लोग प्रत्येक सांसारिक सुख से दूर रहते हों तब भी वे नीच व अल्लाह की दृष्टि में अपराधी हैं। और तुम इन लोगों में से बहुत कम ऐसे लोग पाते होगे जिनका मुख अल्लाह की सीमाओं के उल्लंघन पर तमतमाता हो अथवा वे अपने दीन की सहायता का प्रयास करते हों। अल्लाह के यहां उन अपराधियों व पापियों की स्थिति भी इनसे अच्छी होगी जिन्होंने बड़े पाप किये हैं।"[68]

इसलिये अल्लाह के पथ पर जिहाद को छोड़ना इस जीवन और इसके बाद आने वाले जीवन के विनाश का कारण होगा। और यही अल्लाह के इस संदेश की सही समझ है:

"और अल्लाह के मार्ग में व्यय करो और अपने को विनाश में मत झोंको।"[69]

इब्न कासिर ने कहा है: "कुस्तुंतुनिया में लड़ रहे मुजाहिरों में से एक आदमी सीधे शत्रु की सेना में आगे बढ़ा और अंतत: मारा गया। तो लोगों ने कहा: "उसने स्वयं को विनाश में झोंका।" तो अबू अयूब अल-अंसारी बोले: "हम उसकी आयत के बारे में अधिक जानते हैं। यह आयत उस समय हमारे संबंध में भेजी गयी जब हम अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) के साथ थे और उनके साथ बहुत जी जंगें देखी और उनको विजय प्राप्त करने में सहायता की, फिर जब इस्लाम फैल गया और जम गया तो हम- अंसार- एकत्र हुए और बोले: "अल्लाह ने हमें अपने रसूल (उन पर शांति हो) की संगत में रहने और उनकी विजय को देखने का सम्मान दिया तथा इस्लाम फैल चुका है और इस्लाम के लोगों की संख्या बढ़ चुकी, और जंग थम गयी है। अत: हमें अपनी बीवियों, बच्चों के पास लौटकर जाने दीजिए जिससे कि हम उनके साथ रह सकें।" तब यह आयत आयी: "तो उनका विनाश परिवार के साथ रहने, धन जमा करने और जिहाद छोड़ने में छिपा है।"[70]

---

[67] अत-तौबा; 24-26

[68] उज्जात आस-साबिरीन; पृष्ठ 121

[69] अल-बक़रा; 195

[70] तफसीर इब्न कासिर; 1/228

इसी प्रकार जिहाद छोड़ने में मुसलमानों के सहयोग और काफिरों से वैर रखने (वला और बरा) के भाव में कमी आने का दुष्प्रभाव भी आता है। ऐसा क्योंकि होता है उसका उल्लेख मैंने पहले ही किया है। मोमिनों के प्रति सहयोग की भावना और काफिरों के प्रति शत्रुता की भावना रखना दीन की भलाई, हराम से दूर रहने और अल्लाह-सर्वसामर्थ्यवान व महान के पथ में जिहाद करने के आदेश सीधा जुड़ा हुआ है। इसलिये जब भी बंदे जिहाद से भागते हैं, तो उनके मन में मुसलमानों के प्रति सहयोग और काफिरों के प्रति शत्रुता रखने का भाव कमजोर होता है तथा यह कमजोरी मुसलमानों के लिये खतरा लाने में पर्याप्त होती है।

2. जिहाद छोड़ने के कारण बहुदेववाद व अत्याचार फैल चुका है और कुफ्र और काफिर ताकतवर हो चुके हैं और इस्लाम के लोग एक-दूसरे को ही गुलाम बनाने लगे हैं तथा इसमें कोई रहस्य नहीं है कि यह मुसलमानों को विपत्ति और अपने लोगों में बड़े भ्रष्टाचार की ओर ले जाता है, जैसा कि अल्लाह कहता है:

"और यदि अल्लाह ने लोगों के एक समूह को दूसरे समूह के माध्यम से न रोका होता, तो धरती वास्तव में अराजकता से भर जाती, परन्तु संसारवासियों पर अल्लाह बड़ा दयावान है।"[71]

और अल्लाह कहता है:

"तो यदि अल्लाह ने दूसरे लोगों द्वारा लोगों के उस समूह को न रोका होता तो जहां भी अल्लाह का नाम लिया जाता है उन सब मजहबी स्थानों और मस्जिदों को निश्चित ही गिराकर धराशायी कर दिया गया होता। वैसे भी, अल्लाह उनकी सहायता करता है जो उसके उद्देश्यों में सहायता करते है। वस्तुत: अल्लाह ही सबसे-मजबूत, सबसे ताकतवर है।"[72]

तो यदि ऐसा न होता कि अल्लाह मोमिनों के जिहाद से काफिरों को भगाता तो काफिर मोमिनों पर प्रभुत्व पा जाते और यदि काफिर प्रभुत्व पा जाते, तो वे मुसलमानों को अल्लाह-अपार महिमा वाला और महान के बजाय अपना दास बनने को विवश करते, और यदि लोग अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की इबादत करते तो वह पूरा जीवन बर्बाद रहेगा, क्योंकि जब तक अल्लाह द्वारा बनायी गयी विधि के अनुसार जीवन न जिया जाए तो जीवन सीधे व श्रेष्ठ मार्ग पर नहीं होता है और इस्लाम की विधि ही है जो अल्लाह के प्रति समर्पण को जगाती है। इस्लामी विधि द्वारा ही उदात्त रीति और पवित्र व प्रशंसनीय चरित्र को मानवजाति द्वारा साकार किया जाता है, क्योंकि यह विधि जिसने बनायी है वह अल्लाह है, वही अल्लाह जिसने जीवन और संसार की समस्त जीवित प्राणियों व वस्तुओं को बनाया तथा उसे बनाया जो यह जानता है कि उनके लिये क्या अच्छा है। दूसरी ओर, यदि काफिरों का भूमि पर प्रभुत्व हो गया और उन्हें शासन का अधिकार मिल गया तो वह अपनी सनक के अनुसार नियम बनायेगा, फिर उसे सब बातों का ज्ञान नहीं होता है और वह गुनाहों व इच्छाओं से दूर नहीं होता और वह यह भी नहीं जानता कि मानवता के हित के लिये सर्वोत्तम क्या होगा। तो वह मनमाने ढंग से चलता है, लोगों के जीवन को भ्रष्ट करता है। आज ऐसा ही हो रहा है। उन देशों को देखिये जहां काफिरों का राज है और हमें इस तथ्य की सच्चाई दिख जाएगी। अल्लाह ने जिहाद करने का जो आदेश दिया है, यदि मुसलमानों ने

---

[71] अल-बक़रा;251

[72] अल-हज;40

उस आदेश को मानना बंद न किया होता तो दुनिया में लोगों का जीवन और अच्छा होता, क्योंकि तब लोगों पर अल्लाह के कानून (शरिया) के अनुसार शासन किया जाता। इस कारण अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने नियम बनाया था कि यदि अपराधी नेता के झंडे के नीचे आकर जिहाद करना पड़े तो करना होगा। जब तक वह नेता काफिर होने की स्थिति में न पहुंच जाए, उसके नेतृत्व में भी जिहाद किया जा सकता है। क्योंकि एक मुसलमान के लिये काफिर के शासन में रहने से अच्छा उस अपराधी के शासन में रहना है जो उस शरिया से शासन चलाता है जिसे अल्लाह ने दिया है। यह जान लो कि अल्लाह द्वारा दिये गये कानून शरिया के अतिरिक्त किसी अन्य कानून से शासन करने के कारण ही धरती पर भ्रष्टाचार है।

3. जिहाद को छोड़ना अपमान व कलंक का कारण बनता है, क्योंकि रसूल (उन पर शांति हो) ने कहा है: **''यदि तुम जिहाद छोड़ोगे और जानवरों का अनुसरण करोगे तथा सूदखोरी में लिप्त होगे तो अल्लाह तुम्हारे गले में अपमान की पट्टी लटका देगा और यह पट्टी तब तक नहीं हटेगी जब तक कि तुम अल्लाह के सामने प्रायश्चित नहीं करोगे और दीन की उन बातों की ओर नहीं लौटोगे जिस पर चलना तुम्हारा मजहबी कर्तव्य है।''**[73]

ऐसा ही कुछ हम आज के समय में देख रहे हैं कि काफिरों ने मुसलमानों की भूमि पर अधिकार कर लिया है और मुसलमान अधीनता में रह रहे हैं। काफिर मुसलमानों के संसाधनों को उपयोग कर रहे हैं, मुसलमानों के मामलों में हस्तक्षेप कर रहे हैं और उन पर प्रभुत्व जमाते हुए हर प्रकार का अपमान व लांक्षन दे रहे हैं। और इसके पीछे कारण बस यही है कि अल्लाह के कानूनों को पीछे फेंक दिया गया है और हमने अल्लाह के कानून (शरिया) के शासन को छोड़ दिया है, वह शरिया जिसमें जिहाद करना अनिवार्य कर्तव्य है।

और काफिर मुसलमानों को उनका अधिकार वापस नहीं लौटाएंगे और न ही उस पर तनिक भी सोचेंगे जो वे मुसलमानों के साथ कर रहे हैं, न ही वे अपने भाषण व मीठी बातों से हम पर बुराई थोपने से पीछे हटेंगे। इसलिये हमें अल्लाह-महान के पथ में जिहाद की ओर लौटना होगा, क्योंकि जिहाद के हमले से ही वे डरेंगे और मुसलमानों व मोमिनों की भूमि पर हमला करने से रुकेंगे। जिहाद से ही कुफ्र (इस्लाम, अल्लाह और उसके रसूल व कयामत के दिन में विश्वास न करना) और काफिरों पर अपमान लाया जा सकता है और जिहाद से ही मुसलमानों की ताकत व सम्मान आता है।

और यह ऐसी वास्तविकता है जिसे हमने इतिहास में देखा है, क्योंकि कोई ऐसी भूमि नहीं रही जहां जिहाद का झंडा उठा और उस स्थान पर मुसलमानों को सम्मान न मिला हो तथा मुजाहिद्दीनों द्वारा 'अल्लाहू-अकबर' चीखने पर अल्लाह के शत्रु काफिरों में मन में आतंक न फैला हो!''

अल-मदूदी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा है: ''तो यदि उम्मा को अपनी रक्षा के लिये इस बुराई (काफिर) को मार-भगाने की आवश्यकता समझ में आ जाए और उम्मा जिहाद के लिये अपनी सुख-सुविधा, चैन, धन-संपत्ति, व्यक्तिगत इच्छा, प्राण

[73] अहमद द्वारा वर्णित और यह प्रामाणिक है।

और वह सबकुछ त्यागने को तैयार हो जाए जो उसे प्रिय है, तो कोई संभावना ही नहीं है कि वह कभी दुर्बल व सताया हुआ राष्ट्र होगा। चाहे किसी की सत्ता हो अथवा कोई ताकत हो, उसे मुसलमानों का सम्मान व प्रतिष्ठा हरने का अधिकार नहीं है। इस प्रतिष्ठित उम्मा के लिये यह आवश्यक है कि सत्य अर्थात इस्लाम के आगे सिर झुकाए और इस्लाम के अतिरिक्त किसी और के आगे सिर झुकाने की अपेक्षा मर जाना श्रेष्ठ समझे। यदि मुसलमान के पास सत्य अर्थात इस्लाम की बातों फैलाने और इसकी सहायता करने की ताकत नहीं है तो वह कम से जिस प्रकार से भी इस्लाम की रक्षा कर सकता है, करे तथा कम अपने लिये इतना सम्मान तो रखे।''[74]

सईद क़ुत्ब (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा है: ''और जहां तक उनकी बात है जो इससे डरते हैं कि अल्लाह के पथ में जाकर जिहाद करने से उन्हें यातना व पीड़ा मिलेगी, उनकी शहादत होगी, जीवन चला जाएगा और बच्चे व धन-संपत्ति चली जाएगी जाने से डरते हैं, तो यह उन पर है कि वो सोचें उन्होंने अल्लाह के लिये अपने प्राण, धन व संपत्ति में से किसका सांसारिक त्याग किया है। सबसे बढ़कर यह है कि ऐसे लोग सोचें कि उन्होंने अल्लाह के पथ में अपना चरित्र और सम्मान बचाने के लिये क्या त्याग किया है...। वैसे भी धरती पर काफिरों का सामना करने के लिये अल्लाह के पथ पर में जिहाद के लिये जिस त्याग की आवश्यकता होती है, वह उन सब सांसारिक वस्तुओं व सुख-सुविधाओं की तुलना में बहुत कम होता है जिसे अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से बनाया गया है। सबसे बुरा तो यह है कि ये सांसारिक काफिरों द्वारा बनायी गयी सुख-सुविधाएं व वस्तुएं मुसलमानों को अपमान, गुनाह और कलंक के अतिरिक्त कुछ नहीं देती हैं!''[75]

4. जिहाद को छोड़कर तुम इस संसार में बड़े लाभ से वंचित होते ही हो, इस जीवन के बाद परलोक में हानि उठाते हो। क्योंकि अल्लाह ने इस जीवन के बाद जन्नत में मुजाहिद्दीनों के लिये बड़े पुरस्कार की व्यवस्था कर रखी है। साथ ही जिहाद को छोड़कर तुम इस संसार में भी सम्मान का वह जीवन छोड़ देते हो जो अल्लाह-सर्वसामर्थ्यवान व महान के शरिया पर स्थापित है। जिहाद छोड़कर तुम शहादत और जिहाद में मिले काफिरों के माल और दीन से भरे पालन-पोषण से वंचित हो जाते है और ये सब जिहाद करने और अल्लाह के शत्रुओं से लड़ने के अतिरिक्त कहीं और नहीं मिल सकता है।

5. जिहाद छोड़ने से मुसलमानों में आपसी शत्रुता व दूरी बढ़ती है और ऐसा होता हुआ देखा गया गया है, क्योंकि एक भी कालखंड ऐसा नहीं रहा है जिसमें उम्मा ने अल्लाह के पथ में जिहाद करना छोड़ा हो जब तक कि उम्मा अपने में संलिप्त न हो गया हो और अपने ही मुसलमान भाइयों के सीने पर हथियार सटा दिये हों, आपस में ही लड़ने लग गये हों।

इस संबंध में एक और प्रेक्षण हमारी वर्तमान स्थिति है और यह स्थिति अल्लाह का शरिया और जिहाद को समाप्त किये जाने से उत्पन्न हुई है: तुम देख रहे होगे कि किस प्रकार मुसलमानों ने अपने में ही विभाजन करने वाला कानून बना लिया है तथा अपने में ही इतना विभाजन और भेदभाव कर लिया है कि वे आपस में ही लड़-मर रहे हैं।

---

[74] शरियत अल-इस्लाम फी अल-जिहाद; पृष्ठ 34

[75] फी जिलाल अल-कुरआन; 4/1941

यह स्थिति किसी और कारण से नहीं, अपितु केवल सच्ची रीत और इबादत की इस ताकतवर इस्लामी को सभी स्थानों पर लागू करने पर रोक लगने से हुई है तथा इसका परिणाम यह हुआ कि मुसलमानों की भूमि पर काफिरों का प्रभुत्व हो गया जिससे मुसलमानों में आपसी विभाजन व असंतोष की आग भड़क रही है। उनके साथ अल्लाह-महान ऐसा ही करता है जो उसके कानून (शरिया) से मुंह मोड़ते हैं और जो उनके लिये आसमान से भेजा गया था उसके बड़े भाग को भूल जाते हैं, जैसा कि अल्लाह-महान ने कहा है:

"और वो जो स्वयं को ईसाई कहते हैं, हमने उनका समझौता निरस्त कर दिया है, क्योंकि उन्हों उस संदेश का बड़ा भाग छोड़ दिया है जो उनके पास भेजा गया था। इसलिये हमने उनमें आपस में ही शत्रुता व घृणा उत्पन्न कर दी। कयामत के दिन अल्लाह उनको बतायेगा कि वे किया करते थे।"[76]

हे अल्लाह, हमारा मागदर्शन उससे करो जिससे हमें लाभ हो, तथा हम जो सीखें उससे हितकारी बनाओ

हे अल्लाह, हमें सत्य को पहचानने और इस पर चलने की अनुमति दो, तथा हमें अनुमति दो कि असत्य को पहचान पाएं और इससे बचें।

और हमें जिहाद करने तथा शहीदों के कारवां में सम्मिलित होने का सम्मान प्रदान करो और हमें अपनी आज्ञाकारिता व आनंद में उपयोग करो।

और हमारी अंतिम इबादत है कि सब बड़ाई अल्लाह से है, उसे अल्लाह से जो कायनातों का स्वामी है तथा हमारे रसूल, उनके परिवार व साथियों पर अल्लाह की शांति व कृपा मिले।

आमीन

द्वारा लिखा गया:

मुहम्मद बिन अहमद आस-सलीम

रियाज (रियाद)

---

[76] अल-माइदा;14

अत-तिबयान प्रकाशन कृतियां

श्रव्य (आडियो)

—— —— ——

द ट्रूथ एंड सर्टेनिटी रिगार्डिंग द हॉस्टिलिटी अगेन्स्ट द तवाग़ीत एंड एंपोस्टेड्ड

शैख अबू अब्दिर-रहमान सुल्तान अल-उतैबी अल-असरी

दृश्य (वीडियो)

—— —— ——

"एंड इंसाइट द बिलीवर्स"

शैख अब्दुल्लाह इब्न मुहम्मद अर-राशूद

सच आर द मैसेंजर्स टेस्टेट, एंड देन द आउटकम विल बी इन दियर फेवर

कमांडर अबू मुसअब अज-ज़राक़आवी

द एक्सपेडिशन आफ शैख उमर हजीज

अल-क़आइदा इन ईराक

लेख

—— —— ——

इन परसूट ऑफ फ्रीडम

शैख हुसैन इब्न महमूद

बिटवीन द पर्मिशिबल एंड व्हाट इस बेटर

अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

बिटवीन फाइटिंग फॉर इंजरी एंड फाइटिंग फार कंसॉलिडेशन

अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

द वर्डिक्ट रिगार्डिंग द वन हू डिफेंसिवली आर्ग्यूज आन बिहाफ आफ द तआग़ूत

शैख अली अब्न खुज़ैर अल-खुज़ैर

एडवाइस टू द ब्रीद्रेन गोइंग टू पाकिस्तानी

शेख अबू क़तादा अल-फिलस्तीनी

पब्लिक एडरेसस आन द दावाह एंड जिहाद: बिटविन लैक्सिटी एंड एक्सट्रीमिज्म

अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

व्हाट इज योर ओपीनियन रिगार्डिंग शैख उसामा इब्न लादिन?

शैख अली इब्न खुज़ैर अल-खुज़ैर

व्हेन द जिहाद इज फॉर द सेक आफ अमेरिका

शैख नासिर अल-फहद

शैख अल-अल्बानी ऑन द आब्लिगेशन आफ जिहाद

शैख मुहम्मद नसिरिद्दीन अल-अल्बानी

डिस्क्रिप्शन आफ पैराडाइज

इमाम इब्न अल-क़ैयिम

यस, आई एम वहाबी!

शैख अबू बसीर अत-तरतूसी

डिबेट: द सोर्ड वर्सेज द पेन

अबू जन्दल अल-अज़्दी

लाइफ ऑफ द मुजाजिद अहमद अन-निमी अल-कुरैशी

कतूत आस-सलफी

द इम्पॉर्टेंट ऑफ द वर्ड

वसीम फतहुल्लाह

एक मिसअंडरस्टैंडिंग आफ द हदीस ऑफ आस-सआब इब्न जस्समाह

शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

द रूलिंग ऑन द वन हू इंसल्ट्स द प्रॉफेट आफ अल्लाह

तिबयान पब्लिकेशन

लेट द एक्सपर्ट शार्पेन द बो

शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

''एंड ही मेड यू ऐज फ्यू इन दीयर आइज''

शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

एंड सो दैट द वे ऑफ द सिनर्स मे बिकम मैनीफेस्ट

शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

ट्राइबलिज्म एंड द डैंजर्स आफ डिपेंडिंग आन इट

शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

बाइ अल्लाह, इस हैज नॉट लॉटस इट्स वैल्यू, फॉर इवेन द बैंकरप्ट टू पर्चेज वल

शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

उहुद अज-रस्स

शैख हुसैन इब्न महमूद

ऐक्ट जेंटली बिद द विमेन

शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

अबू अनस अश-शामी

शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

असहाब अर-रस्स

शैख अब्दुल्लाह इब्न नासिर अर-राशिद

रिगार्डिंग ईतिज़ाल एंड मुखालतह

शैख अब्दुर-रहमान इब्न हसन अल-आस-शैख

35 स्टेटमेंट्स फ्रॉम द सलाफ रिगार्डिंग सिंसिअर्टी

शैख हुसैन अल-अवाइशाह

व्हेन डज हिजरा बिकम आब्लिगेटरी: द रियलिटी आफ डिस्प्लेइंग द दीन

शैख अब्दुल-अज़ीज़ अल-जरबू

द टॉर्चिंग आफ अर-रस्स

सऊत अल-जिहाद

द रूलिंग ऑन इंसल्टिंग द प्रॉफेट आफ अल्लाह

तिबयान प्रकाशन

जिहाद अन-नफ्स: स्ट्राइविंग अगेन्स्ट द सोल

शैख हसन अय्यूब

एंड वफ दे हैड इंटेंडेड टू मार्च आउट...

ब्रदर अल-मक़दिसी

मॉउर्निंग ओवर एक नाइटेस: एक मुसलिमाह

लुइस अतिय्यातुल्लाह

वाज प्रॉफिट सुलेमान ए टेररिस्ट?

शैख डॉ. मुहम्मद अब्न तरहूनी

आर द तालिबान फ्राम अहले अस-सुन्ना?

तिब्यान पब्लिकेशन

द हदीस आफ स्लाटर: लक़द जीतुकुम बिस-साब

तिब्यान प्रकाशन

पुस्तकें

- - - -

द डाउद्व कन्सर्निंग बैअह एंड इमारह

इमान अब्दुल-कादिर इब्न अब्दिल-अज़ीज़

एडवाइस फॉर द सीकर आफ नॉलेज (पीडीएफ लेख)

शैख सुल्तान अल-उत्बी

ब्रीज, फ्रॉम द गार्डन्स ऑफ फिरदौस

द तवाहीद ऑफ एक्शन बाय शैख अब्दुल्लाह आज़म एंड द पथ टू द लैंड ऑफ द बैटल बाय शैख युसुफ इब्न सालिह अल-उयैयरी

द रूलिंग्स रिगार्डिंग द मुस्लिम प्रिजनर

डॉ. मुरि इब्न अब्दिल्लाह इब्न मुरि

श्रृंखलाएं: **डिलाइटिंग द आइज ऑफ द वन्स हू लाई इन वेट ऐट एवरी एरिया: एडवाइस रिगार्डिंग उबूदिय्याह** शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी, **द इस्लामिक रूलिंग ऑन द पर्मिसिबिलिटी आफ सेल्फ-सैक्रीफाइसिअल आपरेशंस**, शैश युसुफ इब्न सालिह अल-उयैयरी, अबू क़ुतैबा अश-शामी, **द रूलिंग रिगार्डिंग किलिंग वन्स सेल्फ टू प्रोटेक्ट इन्फार्मेशन** अल-मुख्तर फी हुक्म अल-इंतिहार खौफ इफ्शा अल-असरार: अब्दुल'अज़ीज़ अल-जहबू, **शिफा सुजूर अल-मुमिनीन:** डॉ. अयमान आस-सवाहिरी

अज-जहालइल फी हुक्म मुवालात अहल अल-इशराक

सुलैमान इब्न अब्दिल्लाह इब्न मुहम्मद इब्न अब्दिल-वहाब

मिल्लत इब्राहीम

शैख अबू मुहम्मद अल-मक़दिसी

रिगार्डिंग इन्टेंशली टारगेटिंग विमेन एंड चिल्ड्रन

तिब्यान प्रकाशन

द दुआ इज द वेपन ऑफ द बिलीवर

तिब्यान प्रकाशन

द पीपुल ऑफ द डिच

शैख रिफाई सुरूर

द डाउड्ढ रिगार्डिंग द रूलिंग ऑफ डेमोक्रेसी इन इस्लाम

तिब्यान प्रकाशन

द एक्सपोजिशन रिगार्डिंग द डिसबिलीफ ऑफ द वन दैट असिस्ड्ढ द अमेरिकंस

शैख नासिर इब्न हमद अल-फहद

कैन मक्का बिकम दार अल-हर्ब?

इमाम हमद इब्न अतीक़ अन-नजदी एंड शैख अबू बसीर अत-तारतूसी

एस्से रिगार्डिंग द बेसिक रूल ऑफ द ब्लड, वेल्थ एंड ऑनर ऑफ द डिसबिलीवर्स

तिब्यान प्रकाशन

वी आर इग्नोरेंट डेविएंड्ड (पीडीएफ लेख)

हुसैन इब्न महमूद

ए लेटर फ्रॉम द इमप्रिजन्ड शैख नासिर अल-फहद (पीडीएफ लेख)

शैख नासिर अल-फहद

फंडामेंटल कॉन्सेप्ड्ढ रिगार्डिंग अल-जिहाद

इमाम अब्दुल-कादिर इब्न अब्दिल-अज़ीज़

द क्लैरीफिकेशन ऑफ व्हाट अकर्ड इन अमेरिका (पीडीएफ लेख)

इमार हमूद इब्न उक़ला अश-शुऐबी

ए डिसाइसिव रेफ्यूटेशन आफ सलाफी पब्लिकेशन

तिब्यान प्रकाशन

वर्डिक्ट रिगार्डिंग द पर्मिसिबिलिटी आफ मार्टिडम आपरेशंस (पीडीएफ लेख)

अल-हाफिस सुलैमान इब्न नासिर अल-लवान

वेरिली, द विक्ट्री ऑफ अल्लाह इज नीयर

अल-हाफिस सुलैमान इब्न नासिर अल-उलवान

39 वेज टू सर्व एंड पॉर्टिसिपेट इन जिहाद

शैख ईसा अल-अऊसिन

अल-इमाम अहमद इब्न नस्र अल-खुज़ा, एक लीडर आफ स्कालर्स, ए लीडर आफ मार्टीर्स बाय अल-हाफिस इब्न कासिर (पीडीएफ लेख)

कमेंटरी बाय शैख अबुल-मुंसिर आस-साइदी आफ अल-जामाह अल-इस्लामियाह अल-मुक़ातिलाह (लीबिया)